ॐ
श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत
आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



15 नवम्बर 2002

वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में)

वर्ष 23 अंक 1

प्रेम प्रकाश संदेश

संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज



आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा का

स्वर्ण जयंती समारोह

10 दिसम्बर से 14 दिसम्बर 2002 तक

सन्त दरस अमृत वचन - सतगुरू दीन दयाल।
मेला अर्धशताब्दि का, निरखत होय निहाल।।

समस्त धर्मप्रेमी सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्मी आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज के प्रेमप्रकाश आश्रम, कोटा का स्वर्णजयन्ती समारोह मंगलवार, 10 दिसम्बर 2002 से शनिवार, 14 दिसम्बर 2002 तक श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सतगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में धूम-धाम से मनाया जा रहा है। इस महोत्सव में आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सदगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज की पवित्र जीवन कथाओं का वर्णन किया जायेगा।

आप सब इस विराट महोत्सव में आकर महापुरूषों की गुणगाथा श्रवण कर अपने जीवन को सफल बनायें।

कार्यक्रम

10 दिसम्बर 2002	मंगलवार	प्रातः 7 से 9 सत्संग, 9 से 10 श्री प्रेमप्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्गवद्गीता के पाठों का आरम्भ, सांय 5 से 7 सत्संग
11 दिसम्बर 2002	बुधवार	प्रातः 8.30 बजे बॉम्बे-जयपुर सुपरफास्ट ट्रेन से स्वामी जी का कोटा आगमन व स्वागत, प्रातः 9 बजे रक्तदान शिविर, सायं 5 से 8 सत्संग
12 दिसम्बर 2002	गुरुवार	प्रातः 7 से 10 सत्संग, 10 से 12 यज्ञोपवीत सामूहिक जनेऊ संस्कार समारोह, सांय 5 से 8 सत्संग
13 दिसम्बर 2002	शुक्रवार	प्रातः 7 से 10 सत्संग, सांय 5 से 8 सत्संग
14 दिसम्बर 2002	शनिवार	प्रातः 7 से 9 सत्संग, 9 से 10 हवन, 10 से 11 पाठों का भोग, ध्वज वंदना 12 बजे आम भण्डारा सांय 5 से 8 सत्संग, दीप प्रज्जवलन, महाप्रसादी भोग, पल्लव पाकर उत्सव का समापन

सेवा मे :
संत मनोहरलाल
श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, कोटा

पता :
श्री प्रेम प्रकाश आश्रम
सिन्धी चौक, श्रीपुरा, कोटा
फोन : 0744-2451476, 2325873

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

धारावाहिक–34

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

राग रामकली भजन–20

श्रवण देके सुनलो साधो, अदभुत ये इसरारा जी।।
इक चींटी ससुराल चली, ले संग में सखी अपारा जी।
फूंक मार उस रस्ते के सब, दिया उड़ाय पहाड़ा जी।।1।।
उस चींटी ने नव मन अंजन, पाया नैन मझांरा जी।
ऊंची मंजिल चढ़कर देखा, नजर पड़े न अकारा जी।।2।।
उस चींटी ने कोटी कुंचर, बांधा निज चरनारा जी।
उन हाथियों ने फेंक दिया ले, सागर के उस पारा जी।।3।।
कहे टेऊँ उस चींटी संग मैं, पाया आनंद भारा जी।
इस चीटीं को सो जन पावे, जो है गुरु का प्यारा जी।।4।।

व्याख्याः–हमारे श्री आचार्य श्री जी महा प्रज्ञावान तो थे ही, साथ ही महान कवि भी थे। बड़ी से बड़ी बात को, बड़ी से बड़ी गहराई को इतना सरल काव्य रूप देना सबके बस की बात नहीं है। पर हमारे श्री गुरु महाराज के लिये बालक के बाल क्रीड़ा के जैसा ही है। अब देखिये ऊपर इस भजन पर दृष्टिपात करें जो इस भजन रूपी पहेली में आध्यात्मिकता के कई राज समावेशित है जो इस भजन रूपी पहेली को बूझने की कोशिश करेगा। उसके हाथ में आध्यात्मिक राह के कई मोती यूँ ही आ जावेंगे खेल का खेल, पहेली बूझो और खेलते खेलते मालामाल हो जाओ। ये कमाल तो श्री गुरु महाराज ही कर सकते हैं। ऐसी सामर्थ्य सबमें कहां है।

श्रवण देके साधो सुन लो, अद्भुत ये इसरारा जी

श्री गुरू महाराज जी कहते हैं। हे साधू कान लगाकर सुन। कहीं ये अद्भुत इसरार तुमसे चूक न जाये।

इक चींटी ससुराल चली, ले संग में सखी अपारा जी।

ये चींटी कहाँ से आ गई, ये चींटी कौन है
और इस चींटी की सखियाँ कौन हैं?

हमारी तीसरी पातशाही, सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज अमृत वेले प्रातः 4 बजे ब्रह्मज्ञान का उपदेशात्मक पान कराते हैं। खास मुमुक्षुओं को जिन्हें अधिकारी समझते, जिस प्रांत, शहर या गाँव में विराजमान होते। वहीं ब्रह्म ज्ञान कार्यक्रम जरूर रखते। एक बार ऐसा सौभाग्य हमें भी प्राप्त हुआ। उज्जैन के कुम्भ मेले के दर्शन पश्चात स्वामी जी के साथ इन्दौर में सानिध्य लाभ हुआ। वहाँ अमृत वेले के प्रवचनों में सुरति किसे कहते हैं?

सुरति क्या है? सुरति कैसे लगती है?

इसे समझा रहे थे। एक पनहारिन अपनी सखियों के साथ कुएँ से पानी भरने गई। पानी का मटका सिर पर रखा, एक मटका कमर पर रखा। आँखों से भी देख रही है। कानों से सुन भी रही है। सखियों से बात भी कर रही है। पावों से चल भी रही है और दोनों मटके भी सम्भाले हुये है। तभी एक सखी ने कहा– अरे कहीं तुम्हारा मटका गिर न जाये।

तो उस पनहारिन ने कहा–नहीं–नहीं मेरा ध्यान है। बस वही ध्यान, सुरति है। अंदर एक जागी हुई वृति, वही सुरति है। हमारे अंदर तीन चीजें हैं– सुरति, वृति, निरती।

अभी केवल सुरति को समझेंगे। यही सुरति शब्द में, गुरू नाम में जुड़ जाये तो कमाल हो जाता है। जब साधक, साधना करते–करते गहरी अवस्था को छूने लगता है। तब यह सुरति की पकड़ कर लेता है और उस पनहारिन की तरह हर कार्य करते हुये, उस सुरति को नाम से जोड़े रखता है और श्री गुरू महाराज ने इसी सुरति को चींटी कहा है।

और इस सुरति रूपी चींटी का ससुराल कौन सा है।

ससुराल है दसम द्वार।

सुरति को चींटी की संज्ञा देने की एक विशेष वजह यह भी नज़र आती हैं क्योंकि चींटी अपनी यात्रा से कभी थकती नहीं। चींटी बहुत ही मेहनती मिलनसार और समूह के साथ यात्रा करती है।

और इस सुरति रूपी चींटी की सखियाँ हैं– शुभ गुण, शुभ भाव।

और जब गुरू के सानिध्य में जब सुरति जगने लगती है तो शुभ गुणों/शुभ भावों को साथ लेकर चक्रों का छेदन कर ऊपर की ओर यात्रा करती है। अपनी मंजिल दसम द्वार की ओर "फूँक मार उस रस्ते के सब उड़ाय दिये पहाड़ा जी।" जब हम नाम स्मरण के लिये आसन मार कर बैठते हैं। तब अन्दर ख्यालों के समूह हमें घेर लेते हैं और हमें बार–बार नाम विस्मरण करा देते हैं। लेकिन सुरति जग जाने

के बाद इन ख्यालों के पहाड़ों को फूँक मार मार उड़ा देती है। सुरति को जगाने में प्राणायाम अति सहायक है। भजन प्रारम्भ करने से पहले थोड़ी देर प्राणायाम जरूर करना चाहिये। पर याद रहे भरे पेट से प्राणायाम नहीं करना चाहिये। यह शरीर को नुकसान पहुँचाता है।

नेम जगावे प्रेम को, प्रेम जगाये जीव,
जीव सुरति, सुरति मिलावे पीव।
सुरति लगी गुरू शब्द में, मन मूरत के माहिं।
कहे टेऊँ तिस दास को जमपुर का डर नाहिं।।
"उस चींटी ने नव मन अंजन पाया नैन मंझारे जी"

हमारे शरीर में नौ दरवाजे हैं। सुरति जग जाये यात्रा पर चल पड़े तब यह नौ दरवाजे परमात्मा की ओर खुलते हैं, मुड़ने लगते हैं।

कान सिर्फ ब्रह्म चर्चा ही सुनना चाहते हैं। आँखें सिर्फ पारब्रह्म प्रभु को निहारना चाहती हैं। दृष्टि ब्रह्म दृष्टि हो जाती है। मुख ब्रह्म चर्चा करने में ही आनंद लेता है। नीचे के द्वारा ब्रह्मचर्य पालन करने में आनंद पाते हैं। सारे द्वारा अपनी ऊर्जा बचाकर उस सुरति को देना चाहते हैं जो अपनी यात्रा पर निकल चुकी है। ज्यो–ज्यों उस चींटी की यात्रा ऊपर की ओर जाती है।

नजर न पड़े अकारा जी।

फिर हर आकार में वह निराकार है। वही दृश्य है। घड़ा फूटने लगता है। मिट्टी के दर्शन होने लगते हैं। हर हाथ के पीछे उस जगन्नाथ का हाथ अनुभव होता है।

उस सुरति के शुरू होते ही जिन विषयों के हम गुलाम थे, छोड़ना मुश्किल था। हाथी से भी बलवान विषय विकार जिन्होंने हमें खूब नचाया। गुलामी करवायी। उन कोटिक कुन्चर को अपने वश में करने की कला आ जाती है।

उस चींटी ने उन कोटिक कुन्चर को बांधा निम्न चरनारा जी।
उन हाथियों को फेंक दिया, सागर के उस पारा जी।।

हाथी कितना भी बलवान हो पर एक छोटी सी चींटी उस बलवान हाथी को मारने की सामर्थ्य रखती है तभी गुरू महाराज ने सुरति रूपी चींटी से ख्यालों रूपी हाथी और विषय विकारों रूपी हाथियों को इस सुरति रूपी चींटी के वश में रखा है।

और उस चींटी ने अपनी यात्रा के सारे अवरोधों को निकाल फेंका ...र जब रास्ता साफ हो जाये तो यात्रा आनंदमयी सरल हो जाती है।

कहे टेऊं उस चींटी संग में पांया आनंद भारा जी।

श्री गुरू महाराज जी कहते हैं। सुरति का संग करके उस पारब्रह्म के निवास स्थान दसम द्वार की यात्रा करने में अपार आनंद स्त्रोत खुल गये। ध्यान में कई चमत्कारिक प्रकाश सुगन्धों की अनुभूतियाँ हुई।

पाया आनंद भारा जी
असीम आनंद असीम शांति, परम शून्यता का अनुभव हुआ।
पर इस सुरति को, इस चींटी को पा कौन सकेगा।
जो है गुरू का प्यारा जी।
जो अपने गुरूवर का प्यारा होगा।
यूँ हमारे रास्ते आसान, दर आसान होते चले गये।

...ायद दूर से दुआयें दिये जा रहा था कोई गुमनाम दुआओं का साथ होता है। छुपी हुई आशीषें काम करती हैं। शिष्य का समर्पण तो दिख भी जाये। पर गुरू की कृपा बड़ी गोपनीय होती है। शिष्य अपने प्यार का इजहार कई बार करता है। पर गुरू बिना इजहार किये सब कुछ दे देता है।

जो देकर जताये वह इन्सान होता है।
जो देकर भूल जाये, वह सद्गुरू भगवान होता है।
जो देना दिख जाये, वह एहसान होता है
जो एहसान छुपा कर करे, वही सद्गुरू महिरबान होता है।

बस उस प्रीतम प्यारे की मेहरबानियाँ हो जायें। उसके प्यारे हो जायें।

बड़े नसीब वाले गुरू के प्यारे होते हैं।
करोड़ों में कोई कोई गुरू की आँखों के तारे होते हैं।
यूँ तो सभी से प्यार करते हैं गुरूवर।
पर उन प्यारों में भी छुपे प्राण प्यारे होते हैं।
बड़े नसीब वाले गुरू के प्यारे होते हैं।
जो गुरू के प्यारे होते हैं उनकी बात निराली होती है।
हर रोज ही उनका दशहरा, हर रात दीवाली होती है।

बस गुरू के प्यार को सम्भालना आ जाये। वह प्यार अहंकार न बढ़ा दे। वह प्यार घमंडी न बना दे। वह प्यार बढ़प्पन और अधिकारपना न सिखा दे।

हे गुरूवर तुम्हार प्यार मुझे फूलों की डाली सा झुकना सिखा दे।
हे गुरूवर तुम्हारा प्यार मुझे नम्रता की फुलवारी बना दे।
हे गुरूवर तुम्हारा प्यार मेरी सुरति जगा दे।
हे गुरूवर तुम्हारा प्यार मुझमें धन्यवाद का अहो भाव जगा दे।
हे गुरूवर तुम्हारा प्यार मेरी यात्रा पूर्ण कर पी से मिला दे।

कथा शिखरध्वज चूड़ाला धारावाहिक – 23

सबमें एको ब्रह्म समाना

राजा शिखरध्वज के मन में जो संशय है उसने खोलकर गुरूजी के सम्मुख रखा। गुरूदेव भी उसे उत्तम जिज्ञासु जाकर उसके प्रश्नों का प्रेमपूर्वक उत्तर देने लगे। गुरू उस आत्म तत्व के बारे में समझाते हुए कहते हैं कि राजन्–

"अक्रिय आत्म देव जो"

ये आत्म तत्व अक्रिय है। क्रिया नहीं है इसमें आना–जाना, उठना–बैठना, जागना–सोना सब इसकी सत्ता से भासता है पर इसमें है नहीं।

इतना कथा का प्रसंग पहले होके आया है। आजके प्रसंग में गुरू महाराज जी कहते हैं– हे जिज्ञासुओ, मुमुक्षुओं! याज्ञवलक्य मुनि कहते हैं– हे भारद्वाज! मुनि वशिष्ठ कहते हैं– हे रामजी! गुरू निश्चय करके राजा को समझा रहे हैं कि 'अक्रिय आत्म देव जो' ये आत्मा अक्रिय है और

"सर्वरूप है आप"

है भी अक्रिय और सभी के अंदर भी समाया हुआ है। सब जगह वो ही है। कण–कण में व्यापक है।

गुरू महाराज जी के मंगलाचरण में भी आता है–

सत्चित आनंद ब्रह्म, जो निर्गुण निराकार।
कहे टेऊँ जो होत है, सगुण रूप साकार।।
तांको मैं वंदन करूं, जान सर्व का रूप।
कहे टेऊँ सेवत जिसे, सुर नर मुनि जन भूप।।

गुरू महाराज जी यहाँ भी यही समझाते हैं कि वो आत्मा आप ही सर्वरूप है, सबके अंदर वो ही समाया हुआ है, वो एक ही है। सबके घट में एक ही राम बोल रहा है गुरू महाराज जी फरमाते थे–

एक राम दशरथ घर डोले एक राम सबके घट बोले
एक राम का बना पसारा एक राम सबसे है न्यारा

क्या राम अलग–अलग हैं, नहीं। सबके राम एक ही हैं। सबके घट में वो ही हैं और सभी रूपों में भी वो ही हैं। जड़–चेतन, कण–कण माहिं उसका ही पसारा है और कोई नहीं है।

ये तो हमारी अज्ञानता है, हमारी भेद बुद्धि है, जिसके कारण हमको अलग–अलग चीज नजर आती है और यही बुद्धि जन सूक्ष्म होकर भेदातीत हो तत्व तक पहुंच जाती है तो तत्वतः सभी पदार्थ एक ही हैं, सभी में वही दृष्टिगोचर होता है।

हिरण्यकश्यप प्रहलाद को कहता है– "प्रहलाद तेरा राम कहाँ है? तेरा हरि कहाँ है? मेरा भगवान कहाँ है? तलवार लेकर खड़ा है। प्रहलाद के सामने और कहता है–हे प्रहलाद! तू कहता है। सब जगह वही राम है, सब जगह वही परमात्मा है। अब कहाँ है तेरा परमात्मा? बुला उसे। प्रहलाद कहता है–

तुझमें मुझमें खड़ग थंब में, एको राम समाया
मुझको वो ही नजर आते हैं, तुझको नजर न आया।

हे पिताजी! वो तो सब जगह समाया हुआ है। तुझमें भी वहीं हैं, मुझमें भी वही हैं। इस खड़ग में भी वो ही हैं, जो आपने उठा रखी है, सभी में उसकी ही सत्ता है वो ब्रह्म तत्व, वो आत्म तत्व वो सभी में एक ही है। और ये थम्बा जो आपने गर्म किया है, इसमें भी परमात्मा है, मुझको तो सभी वस्तुओं में, सभी जगह उसी के दर्शन होते हैं। कण–कण में वही व्यापक दिखाई देता है, परन्तु आपको वो नजर नहीं। पर पिताजी, आपका भी कोई कसूर नहीं। क्योंकि

ओ तेरे कोल दूर नहीं, पर तेरा भी कसूर नहीं।
वेखण वाली अख, ओदे विच नूर नहीं।।

आपकी आंखों के आगे अज्ञान का, अहंकार का पर्दा चढ़ा हुआ है। उसी पर्दे के कारण आपको उसके दर्शन नहीं होते।

समझें जैसे आंखों के आगे काले रंग का चश्मा लग जावे जिसमें कोई शीशा न होकर धातु

होवे काले रंगे की, वो आगे से आ जावे तो कुछ नजर नहीं आता, पर अगर कांच पारदर्शी न होकर मात्र गहरे रंग का भी हो तो वस्तु का रंग बदल जाता है और वास्तविक वस्तु दिखाई नहीं देती।

और अगर जो किसी को मोतियाबिंद हो जाए तो आंख भी वही है, चश्मा भी नहीं है फिर भी एक चीज की दूसरी चीज नजर आती है, दो दो चीज भी नजर आती हैं।

कहने का तात्पर्य क्या है ? हमारी बुद्धिरूपी आंख के आगे भी अहंकार रूपी पर्दा है, इसलिये हमें भी तत्व के दर्शन न होकर बुद्धि द्वारा उस पर जैसा आरोप होता है, वैसे ही दर्शन होते हैं।

प्रहलाद भी अपने पिता से यही कहता है–

हे पिताजी। आपके आगे अहंकार रूपी पर्दा है इसलिये आपको वो नजर नहीं आता है, परन्तु मुझे तो हर जगह वही दिखाई देता है।

इसी प्रकार महापुरूषों की भी दृष्टि तत्व पर होती है परन्तु संसारियों को वो तत्व नजर ही नहीं आता।

जैसे एक्स–रे की आंख सबके अंदर की हड्डियों, नसों आदि को देख लेती है और कैमरे की आंख शरीर को ही देखती है। दोनों के द्वारा फोटो लिया जाता है, दोनों का ही निगेटिव बनता है, परन्तु दोनों में फर्क है।

एक सबके अंदर की और सभी की एक जैसी फोटो लेता है। अर्थात् किसी भी व्यक्ति का एक्स–रे देखें तो हड्डियां दिखेंगी आप उसे देखकर पता नहीं लगा सकते कि ये किस व्यक्ति का एक्स–रे है। और कैमरे द्वारा लिया गया फोटो शरीर की बाहरी अवस्था ही प्रदर्शित करेगा।

तो संसारी की दृष्टि है कैमरे की दृष्टि और महापुरुषों की दृष्टि है एक्स–रे की दृष्टि।

वे सभी में उस आत्म तत्व को देखते हैं स्त्री–पुरुष, छोटा–बड़ा उनकी नजर में नहीं होता। उनकी नजर में वही तत्व–दृष्टि, वही आत्म दृष्टि होती है। इसलिये उनको सब ब्रह्मरूप नजर आता है। उनके लिये केवल एक ही बात होती है। या तो मैं ही मैं हूँ या तू ही तू अर्थात् एकत्व का भाव उनके हृदय में सदा रहता है, द्वैत भावना उनके अंतर में आती ही नहीं।

गुरु महाराज जी का वचन भी है कि या तो ये कहो कि मैं कुछ नहीं या तो ये कहो कि सब मैं हूँ। एक ही बात है।

शिखरध्वज चूड़ाला के व्याख्यान के अंतर्गत भी गुरु महाराज जी तत्कालीन प्रसंग में यही समझा रहे हैं कि

अक्रिय आत्म देवं जो, सर्वरूप हैं आप।

आप अक्रिय हैं, परन्तु सभी के अंतर में वही समाया हुआ है, सबके अंतर में उसी का निवास है। कवि हरदयाल जी ने लिखा है–

श्री पति प्रथम नमामि मम, योगी हृदय निवासा।
भोगी हृदय उदास जो, वे मम सुमति प्रकाश।

कहते हैं–हे प्रभू! मैं आपकी वंदना करता हूँ। किस प्रकार वंदना करते हैं–

जो भगवान नारायण योगियों के हृदय में निवास करते हैं, उन भगवान योगेश्वर की मैं वंदना करता हूँ।

शंका होती है कि अगर योगियों के हृदय में भगवान हैं तो फिर भोगियों के हृदय में कौन निवास करता है।

तो हरदयाल जी कहते हैं। भोगी हृदय उदास जो भोगियों के हृदय में जो उदास है वे ही मेरी सुमति के प्रकाशक हों।

तत्व वहीं का वही है। तत्वतः दोनों के हृदय में परमात्मा का ही वास है परन्तु भोगियों ने अपने आप में उस तत्व को देखा नहीं, परमात्मा को अपने हृदय में निहारा नहीं और योगियों ने अपने अंदर उसी तत्व का अनुसंधान कर लिया है, उस तत्व को देख लिया, जान लिया, पहचान लिया। और फिर उसी तत्व का उपदेश करते हैं। उपदेश करने का

अधिकारी ही वो है जिसने अपने आप में उस तत्व को जान लिया, एकाकार हो गया उस तत्व से।

अपने आप अपने आप से संतुष्ट हो गये। यानि अपने आप को जिसने जान लिया, देख लिया। जिसने परमात्मा से योग बिठा लिया, वही योगी है। वो ही स्थितप्रज्ञ है।

ब्रह्मभाव में दृढ़ता

आगे गुरु महाराज जी क्या समझाते हैं राजा शिखरध्वज को कि

"अक्रिय आत्मदेव जो सर्वरूप हैं आप।
ऐसा निश्चय धारके जपले सोऽहम् जाप।।

सभी उसका ही रूप हैं और जब सबमें वही हैं तो आप भी उसी का स्वरूप हैं ऐसा निश्चय कर लो बस। क्योंकि निश्चय ही करना है। जैसे ये निश्चय होगा कि मैं ये शरीर हूँ वैसे ही ये निश्चय करो कि मैं ये शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ।

देखो मानना तो पड़ेगा ही। मानकर ही जाना जा सकता है जब कसी चीज को मानेंगे कि हाँ ये है तभी तो उसकी प्राप्त का साधन करेंगे। पर ऐसा भी नहीं कि मानने मात्र से वस्तु की प्राप्ति हो जाये। मानकर जब उसकी खोज में निकलेंगे तो उस तत्व की प्राप्ति होगी। व्यवहार में ही देखो। मानने से ही ये सारी दुनिया चल रही है। माता को, पिता को आपने माना है। माता कहती है कि ये तेरे पिता हैं तो मानते हैं कि हाँ ये मेरे पिता हैं। शुरू से मानना पड़ता है हमको।

जैसे किस स्त्री का किसी पुरुष के साथ संबंध होता है तो उसके द्वारा ये मान लिया जाता है कि ये मेरी पत्नी है और मान्यता भी कितनी दृढ़ होती है अब बताओ कहाँ लड़के का जन्म, कहां लड़की का जन्म, परन्तु एक बार संबंध होने से सगाई होने से मान्यता हो गयी कि ये मेरी स्त्री है, ये मेरी पत्नी है।

जिस प्रकार हमने संबंधों की मान्यता, शरीर की मान्यता बना रखी है कि मैं ये शरीर हूँ उसी प्रकार से मान्यता भी बनानी पड़ेगी कि मैं ब्रह्म हूँ, मैं आत्मा हूँ, मैं ये शरीर नहीं हूँ। अगर आत्म तत्व को जानना है तो ये निश्चय करना ही पड़ेगा

गुरु उस तत्व को जानते हैं और हमें भी उपदेश करते हैं कि तू वो ही है। तत्वमसि इस बात को मानकर फिर उसका विचार करो। विचार करते–करते जब गहरे उतरेंगे तब कहीं जाकर तृत्वमसि का अनुसंधान कर सकेंगे अन्यथा नहीं।

अतः जब ये निश्चय पक्का हो जाए तभी हम सोऽहम् जपने के अधिकारी अन्यथा नहीं। सिर्फ सोऽहम्, सोऽहम् कहने मात्र से कोई आत्मा नहीं बना जाता बल्कि अपने अंदर में ये निश्चय होना चाहिए कि मैं आत्मा हूँ।

खण्ड रहित आत्मा

आत्मा के संबंध में शिखरध्वज को समझाते हुए गुरु महाराज जी बताते हैं कि–

"आत्म अखंड स्वयं प्रकाशी, घट–घट तां उजियारा है।"

आत्मा अखंड है, जिसका कोई खंड नहीं हो सकता। अर्थात् आत्मा समग्र है, अलग–अलग खंड नहीं हैं उसके खंडित नहीं है वो।

परन्तु कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि ब्रह्म अलगं है, आत्मा अलग है। ब्रह्म पिता के समान है और आत्मा बच्चे के समान है। अब विचार करना क्या ये बात सही है।

"ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखराशी।।"

रामायण में तुलसीदास जी बताते हैं कि ये जीव ईश्वर का ही अंश है। तो क्या ईश्वर का अंश ईश्वर से अलग हुआ क्या ?, विचार करना ये अंश क्यों कहा। ईश्वर का अंश ये जीव है किस प्रकार से।

अंश भी दो प्रकार के होते हैं। एक उसी का भाग दूसरा अलग कर देने पर बने वो भाग। अब जैसे शरीर पर जो बाल हैं नाखून हैं वे शरीर का ही अंश हैं। पर इनकी अलग से सत्ता है। और अंगुली भी है तो शरीर का ही अंश पर इसकी अलग से कोई सत्ता नहीं है।

तो जिस प्रकार वो अंगुली जुड़ी हुई है। शरीर के साथ। ऐसे ही, इस जीव का संबंध ब्रह्म के साथ है, अलग से उसकी कोई सत्ता नहीं है। जैसा ब्रह्म सब जगह व्यापक है वैसा ही आत्मा में है ऐसा कहना ज्यादा उचित होगा कि आत्मा ही ब्रह्म है, ब्रह्म ही आत्मा है बस उनकी व्यापकता में भेद है। गुरु महाराज जी भी बताते हैं कि

ब्रह्म आत्मा एक है सत् चित आनन्द रूप।
कहे टेऊँ ज्ञानी जिसे जानत निज स्वरूप।।

ब्रह्मतत्व वो आत्म तत्व एक ही है जिसे हम अपना स्वरूप जानते हैं।

अर्थात् आत्मा अखंड है परन्तु हमें खंड नजर आता है। अजीब बात है जो चीज वो नजर आती है, किस कारण नजर आती है, कोई न कोई उपाधि है, उपाधि के कारण ही अलग नजर आती है।

जैसे ये पृथ्वी है वो एक ही है पर अलग–अलग रूप हो गयी, अलग–अलग हुई कैसे, किस कारण से हुई दीवारें खड़ी कर दी गईं तो अलग हो गयी। पृथ्वी के खंड करने हों तो किस प्रकार होंगे। दीवारें खड़ी करनी पड़ेंगी।

चीन की दीवार है। इधर चीन है उधर भारत है। बताओ अलग है क्या ? पृथ्वी तो वही एक है पर अलग नजर आती है। इसी प्रकार शरीर की उपाधि के कारण वो आत्म तत्व खंड रूप है भासता है। पर वास्तव में क्या वो खड रूप है : नहीं।

जैसे ये आश्रम की जमीन है। बाहर की जमीन से अलग है नहीं है पर दीवार खड़ी कर देने से अलग–अलग हो गयी। तो अलग है भी और नहीं भी।

सत्‌गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज सत्संग में फरमा रहे थे, उनके मुखारबिंद से उच्चारित वचन हैं कि आत्मा आता जाता नहीं है और आता–जाता भी है। अक्रिय है और प्रक्रिया भी है उसके अंदर। अंखंड भी है और खंड भी नजर आते हैं।

अब बताओ ये आश्रम बाहर की पृथ्वी से अलग है या नहीं विचार करना। है भी और नहीं भी अर्थात् कह नहीं सकते अनिर्वचनीय बात ऐसे ही होती है नाम रूप दे दिया तो अलग अर्थात् दीवार खड़ी हो गई तो अलग न होते हुए भी अलग हैं, और अगर दीवार हट गयी तो अलग हैं ही नहीं। दीवार उपाधि के कारण ही समझाना पड़ता है। उपाधि न हो तो फिर क्या बात है, फिर समझने की कोई बात नहीं है। अर्थात् फिर एक ही है।

स्वयं प्रकाशी आत्मा

आत्म अखंड स्वयं प्रकाशी

आत्मा अक्रिय है, सर्वरूप है, अखंड है साथ ही साथ स्वयं प्रकाशी भी है। स्वयं प्रकाशी माने जिसको दूसरे के प्रकाश की आवश्यकता नहीं पड़ती बल्कि उसके प्रकाश से सब प्रकाशित होता है।

इसी आत्मा के प्रकाश से सारी सृष्टि चौदह लोक प्रकाशित हो रहे हैं, उसी की सत्ता से सब प्रकाशित हैं।

जैसे सूर्य में स्वयं का प्रकाश है उसी के प्रकाश से सारा भूमंडल, सभी तारे प्रकाशित होते हैं। परन्तु आत्म तत्व की प्रकाशिता सूर्य की भांति नहीं है, समझने के लिये बताना पड़ता है पर वैसा है नहीं।

अगर सूर्य की भांति प्रकाशिता हो तो जल जाएं और वैज्ञानिकों के अनुसार निरन्तर इसमें ठंडापन आ रहा है और अंततः यह ठंडा हो जाएगा।

परन्तु उस आत्म तत्व का प्रकाश निरन्तर एक रस है उसमें कोई बंदलाव नहीं आता।

समझाने के लिये उपमा देनी पड़ती है परंतु उपमा देने से केवल इशारे मिलते है। आत्मतत्व के बारे में जो भी उपमा दी जाती है वो कभी अपने आप में पूर्ण नहीं होती। ये तो गूंगे के इशारे हैं अगर इशारा समझ में आ जाए तो बात बन जाए पर समझेगा कौन ? जिनकी बुद्धि सूक्ष्म होगी जो निरन्तर इन बातों का विचार करेंगे।

गुरु महाराज जी से प्रार्थना करें कि हमारी बुद्धि को भी ऐसा बनायें जो हम ये बात समझ सकें।

स्वामी सर्वानंद अमृतवाणी प्रवचन कैसेट

राम मिलन पढ़ पाती

काल करे सो आज करि, आज करे सो अब।
अब की बिछड़ी नानका, फेरि मिलेगी कब।।
भजनः– ताप क्लेश पाप मिटाओ, सुनकर संतनि बाती।
तुम पाओ झाती, मन एंकाति, होवे शांती।
राम मिलन पढ़ पाती,रे तुम पाओ झाती।
राम मिलन पढ़ पाती, मन एकान्ती, होवे शांती।।

प्रेम से बोलो हरे राम! सारे पूजने योग्य महात्मा मण्डल तथा प्रेमियों, सत्संगियों, गुरमुखों अपने शरीर॰ इन्द्रियों को सावधान करके, आसन बांधकर अपने मन को सावधान करके हर एक जीव, हर एक मनुष्य अपने मन को स्वयं समझावे। बार–बार समझावे, सत् शास्त्र, महात्माओं के वचनों, गुरू के वचनों पर विश्वास व निश्चय बन्धावे। भगवन्त के नाम में मन को विश्वास बन्धावे। ये ही भक्ति करनी है। प्राचीन हमारे ऋषि मुनि करके गये हैं। अभी कर रहे हैं और इसके बाद करेंगे। हे मेरे मन

रे मन मेरा समझत नाहीं, बहुत तुझे समझाया है।
सत् वस्तु से प्रीत न राखत, झूठ सदैव सुहाया है।
तीन काल जो तुमरा नाहीं, तिस पर दाव जमाया है।
कह टेऊँ इस मूर्खता पर, तुमने बहु दुःख पाया है।

हे मेरे मन तेरे को बहुत समझाया है, परन्तु समझता नहीं है, जो सत् वस्तु है, जो सत् पदार्थ है उसमें तेरा प्रेम नहीं है। उसमें तेरा प्यार नहीं है। ''झूठ सदैव सुहाया है'' झूठ में तूने प्रीति रखी है, झूठ से प्रेम रखा है। झूठ में आसक्ति रखी है, वो दुःख देकर के तुझे रूलायेगी क्योंकि जब इसका बिछड़ना होगा तब तू रोयेगा। असत् पदार्थ कभी सत् नहीं होगा। एक दिन जरूर बिछड़ना होगा क्योंकि सच का कभी नाश नहीं होगा।

''आद सच, जुगाद सच, है भी सच, नानक होसी भी सच''।

साहब कहते हैं सच से प्रीत कर। हे मेरे मन् तू दुःखी क्यों हुआ।

''तीन काल जो ना कब तेरा''।

जो तीन काल–भूतकाल, भविष्यकाल, वर्तमान काल। जिसमें तेरा पदार्थ है ही नहीं। ''तिस पर दाव जमाया है।'' उसमें दाव जमाता है। परन्तु कभी दाव जमाता भी है और कभी छोड़ता भी है जब दुःख आता है तो छोड़ देता है, और सुख आने पर दाव जमाता है। एक तरफ हो। अगर दावा जमाता है तो बहादुर होकर दावा जमा। अगर छोड़ता है तो छोड़। एक तरफ हो। लाहौर में छजु भगत हुआ है वह भजन करता था, सत्संग करता था, परोपकारी था, सेवा करता था, ग़रीबों की तमाम सेवा करता था।

एक दिन स्नान करके नदी से आ रहा था। तो हरिजन झाड़ू दे रहा था। तो उधर खड़ा हुआ तो हरिजन ने देखा छजु भगत है। मशहूर हो गया था तो हरिजन ने कहा – छजु भगत एक तरफ हो जाओ। एक तरफ हो जा क्योंकि झाड़ू दे रहा हूँ। छजु भगत खड़ा हो गया। फिर कहने लगा। छजु भगत एक तरफ हो जाओ फिर इधर–उधर देखकर खड़ा हो गया। फिर कहा – छजु भगत बहरा हो गया है क्या एक तरफ हो। बोला प्यारा, मैं ये सोच कर रहा हूँ। दो तरफ है– एक है गृहस्थ दूसरा भक्ति का। मैं इसी तलाश में हूँ कि तू कह रहा है एक तरफ हो तो मैं किस तरफ होऊँ। बस, अब मैंने निश्चय किया है कि मैं भक्ति के पास हो रहा हूँ। उस दिन से उसने अपना व्यवहार छोड़ दिया। पाठशाला निकलवा करके सत्संग का दीवान लगा दिया। हे मेरे मन तू एक तरफ हो या तो कह सब कुछ मैं हूँ या तो कह कि न तो मैं हूँ न कि संसार है। एक तरफ हो तो जान छूटे। तू कभी किस तरफ, तो कभी किस तरफ अगर अच्छा काम हुआ तो मैंने किया और खराब काम हुआ तो भगवान ने करवाया। ऐसे नहीं। एक तरफ हो। प्रेम से बोलो हरे राम! हे मेरे मन!

''अगर आस है आनंद की तो जग की इच्छा तजिये जी।''

ये दावा छोड़! प्रेम से बोलो हरे राम।

एक महात्मा चेले को लेकर सैर करने के लिए निकला। सैर करते करते राजायी नगरी में आया। उस नहर के किनारे पर सुन्दर वृक्ष के नीचे बैठे और

स्नान पानी किया। फिर कहा अब चलो हरि नारायण करके रोटी लेकर आये क्योंकि हरि नारायण करके, मधुकरी करके रोटी मांगना शास्त्रों की आज्ञा है बाकी पैसा कुछ वस्तु मांगना उससे बेहतर मरना अच्छा है साधुओं को। तो बाबा चल मधुकरी करके बाजार में हरि नारायण करके रोटी लेकर आये। नहर के किनारे पर खाकर के विचार किया बोले पुत्र देख, अगर कोई जगह होवे तो सोये, वृक्ष है कभी छाया तो कभी उधर धूप। कुटिया हो तो जांच, तो चेला गया तो क्या देखे तो एक महलात सुन्दर दरवाजा खुला है तो अन्दर देख के आया गुरू के पास। गुरू ने कहा– क्या हुआ? बोला बहुती अच्छी जगह है, चल दिखा। आया, दरवाजा खुला वो महलात था राजा का। राजा 11,11.30 बजे आकर के आराम करता था। राजा था नहीं, गया हुआ था किसी काम से, ये महात्मा अंदर गये तो एक सेजा बिछी हुई थी। सुन्दर कमरे, पंखे लगे हुये थे। चेले को बोले कि तू उधर सो जा। बोला– कि ये महलात है। पता नहीं है, महात्मा कहने लगा– पुत्र दुनिया में दो बाते हैं–1. कुछ बनना नहीं 2. अपना नहीं करना।

फिर दुनिया में तीन लाकों में किसी की ताकत नहीं है जो तुझे कुछ कहे। एक बनो मत दूसरा अपना नहीं करना। दावा भी मत जमाना कि यह मेरा है खबरदार! दो बात याद करना। कहा कि फिर स्वामी फिर भली सो जाओ। कोई दुःख नहीं देगा, कोई मारेगा तो नहीं, बोले– किसी को ताकत ही नहीं है– सो जा। तो वजीर की सेजा पर चेला जाकर सो गया। महात्मा गया अन्दर राजा की सेजा पर सोकर बटन खोल दिये। पंखे भी चल रहे थे। सो गये। प्रभु की लीला पन्द्रह मिनट के बाद राजा वजीर दोनों घर आये। पहरेदार ने देखा तो वह दौड़ता हुआ आया। राजा वजीर अन्दर घुसे तो देखे एक साधु सोया हुआ है। वजीर की सेजा पर। वजीर ने कहा पूछो ये कौन है? वजीर ने कहा– कौन है, उठ उठकर के बैठ गया। बोला कौन है। बोला मैं साधु हूँ। साधु है तो इतना भी अक्कल नहीं है उठ। बोला क्यों उठूं। उन्होंने थोड़े थप्पड़ और धक्के दिये। निकालकर के बाहर फैंक दिया। पहरेदार को कहा– कि यह कौन हैं? बोले– मुझे मालूम नहीं मेरे को लाचारी काम था। क्या करूं? राजा अब माफ करो। राजा अन्दर अपने कमरे में गया देखा वहां भी साधु सोया है। बोला कौन है? ये राजा की तरफ देखकर के दूसरी तरफ करके सो गया। राजा ने कहा– तू कौन है! खबर तो बता। फिर वह देखकर दूसरी तरफ करके सो गया। राजा भी धर्मात्मा था ऐसे तो नहीं था। पहले के राजा बहुत धर्मात्मा अच्छे हुये हैं। राजा ने कहा कोई संत मस्त है पड़ा रहे। आया राजा वजीर के पास अन्दर साधु सोया पड़ा है। मैं तेरी सेजा पर सोता हूँ तू दूसरी जगह सो। अभी राजा सोया ही था कि साधु ने विचार किया कि चेले का पता नहीं कौन सा हाल हुआ। ये राजा का महलात है। चेले का पता नहीं क्या हाल हुआ है। उठकर, निकला– बाहर तो राजा उठकर सेजा पर बैठा तो कहने लगा। महाराज– कहां जा रहे हो। कुछ बोले ही नहीं, महाराज गर्मी है शर्बत पिओगे। कृपा करो। खड़े तो हो तो महात्मा खड़ा हो गया। बोले शर्बत पिओगे। तब वजीर को बुलाया कहा– जो चंदन का शर्बत पड़ा है। एक गिलास संत को पिला गर्मी है। संत ने चंदन का शर्बत पिया और राजा ने कहा – दूसरा चाहिए कुछ बोला ही नहीं बिल्कुल चुप। फिर कहा– महात्मा मोनी महात्मा है। मोह धारी खबर नहीं है सोयेंगे, महात्मा फिर चुपकर के बाहर निकल गये। निकला, दरवाजे के बाहर देखा– तो वृक्ष के नीचे बैठा था। आया, वृक्ष के नीचे बोले– पुत्र क्या हाल है? बोला– आज तो मुझे मार पड़वाई। राजा, वजीर ने मुझे बहुत मारा है। खून निकाल दिया है। मेरे को पहले ही डर था। पहले भी घबरा चुका था। कोई मारे नहीं। मैंने तेरे को दो बातें याद करने को कही थीं याद कीं। बोला– कौन सी? भुला दी न तूने। तेरे को मारा कैसे? हकीकत बता किसी को ताकत है क्या? कोई मारे। सच्ची बात बता। 10–15 मिनट गुजरे तो राजा, वजीर आये। फिर वजीर ने कहा– कौन हो उठो। फिर उठा। वजीर ने कहा– तू कौन है? फिर तूने क्या कहा? मैं साधु हूँ। साधू बना। साधु की तो सब पूजा करते हैं, पांव छूते हैं। साधु को मारते कैसे? साधु अभी कुछ बात

। फिर वजीर ने कहा– उठ। मैं बोला क्यों उठूं। दावा जमाया कि मेरा है। दावा ही दुःख रूप है।

दुनिया की सब दावा छोड़े लगन राम से लाइये रे।
जल्दी जा मन आत्म घर में, परम शांति को पाइये रे।

हे मेरे मन। अगर शांति को चाहता है तो जग की इच्छा, दावा छोड़े। प्रेम से बोलो हरे राम। "परम शांति को पाइये रे"। परम शांति को पा। कहाँ से लाये। सुख। शांति मंगानी नहीं। वह अपने ही अन्दर है। सच्चिदानन्द स्वरूप है। यह भूलकर बाहर ढूंढ रहा है। सुख शांति। हे मेरे मन। तेरे अन्दर है। मिलेगी कैसे ? ऐसे नहीं मिलेगी। रस्ते से, रस्ते के बिना कोई भी लक्ष्य पर नहीं पहुंच सकता। जैसे–पूने से बद्रीनारायण का तीर्थ करके आऊँ। समझा। बद्रीनारायण का तीर्थ। कभी गया नहीं है। कभी देखा नहीं है और ना ही रास्ता पूछ रहा है। ऐसे ही निकल पड़े। इस जन्म में नहीं पहुंचेगा। परन्तु भाग हो, पूरब का, तब रस्ते पर जंगल, नदी, नाला, पहाड़ होंगे तो पहुंचेगा नहीं बीच में ही खत्म हो जायेगा। तो रास्ता पूछते–पूछते जायें। दूसरे भी रस्ते निकलते हैं। पूछते–पूछते जायेंगे। अगर बूढ़ा भी जाये तो 10–12 महीने में पहुंच जायेंगे। क्योंकि रास्ता पूछते–पूछते गया है। हे मेरे मन रास्ता लेकर संतों, महात्माओं, शास्त्रों से पूछता जा। भगवान कहां है। भगवान के मिलने की चिट्ठी पढ़। महात्माओं से पूछ। पहले हमारे ऋषि, मुनि, महात्मा, परमपिता चिट्ठी पत्रिका लिखकर हमारे लिये रख के गये हैं। हे मुहिंजा प्यारा जब तुझे वैराग लगे। जब भगवान की प्यास लगे तू ऐसे ठोकरें मत खाना। हमारी चिट्ठी पढ़कर वैसे चलना। चिट्ठी पत्रिका पढ़कर देखकर जैसे वेदान्त, शास्त्र। वेद भगवान, उपनिषदों। प्रेम से बोलो–हरे राम। पढ़ के देख। भगवान कहां है। तेरे अन्दर है। तूं ढूंढ कहां रहा है। तलाश कैसे रहा है। कैसे ?

मृग के नाभी है कस्तूरी, अपने से वह जानत दूरी।
खोजत बन में, मिलत न ताही।
रे मन मेरा भटकत काही, जो सुख चाहत सो तुझ माहीं।
रे मन मेरा भटकत काहीं।।

प्रेम से बोलो हरे राम। हे मेरे मन। तू भटक रहा है। अगर सुख को चाहता है। "जो सुख चाहत सो तुझ माहीं।" महात्मा कहने लगा। जिज्ञासु को बाबा उस आनन्द सुख को पा। जो सुख हरे राम। जो सुख हां प्रभु। जो सुख विषय, भोग पदार्थ में सुख है। ये सुख जो सुख नित वो प्रभु व्यापक हैं समझी। हां, प्रभु मैं समझ गया। क्या समझा ? प्रभु व्यापक तो माया है। "साधो आय–जाय सब माया"। महात्मा कहने लगा–माया किसको कहता है ? माया कहो, जगत कहो, संसार कहो, दुनिया कहो। क्या हैं ? नाम, रूप माया है। नाम, रूप। जो सुख नाम रूप आधार नाम रूप का आधार है। माया, नाम रूप का आधार। मत न लखे, जिसको बुद्धि नहीं जान सकती। जिसको मत न लखे, बुद्धि को पहचानता है अथवा श्रेष्ठ बुद्धि उसको महसूस करती है। बुद्धि को भी पहचानता है, बुद्धि, साक्षी प्रकाश पा करके साक्षी का दर्शन करेगी। "सो मैं शुद्ध अपार यह मेरा स्वरूप है। हे पुत्र जो तेरा स्वरूप है। वो मेरा स्वरूप है। तू और कोई नहीं है। "जो सुख चाहत सो तुझ माहीं" वो तेरे अन्दर है। वो मेरा स्वरूप है। तू और कोई नहीं है। "जो सुख चाहत सो तुझ माहीं" वो तेरे अन्दर है। तेरा स्वरूप है। "रे मन मेरा भटकत काहीं।।" तू कैसे भटक रहा है। किस तरह से भटक रहा है। "मृग है कस्तूरी"। जैसे एक मृग होता है। मृग कहो, कुरंग कहो। जिसकी नाभि, दुन में कस्तूरी होती है। सुबह को उसको खुशबू आती है। खुशबू वाला घास खाऊं। फिर बन में घास में सूंघता है। सूंघत–सूंघते भूख लगती है फिर थोड़ा खाता है। सारे दिन जब तक शाम होवे, निराश होकर रह जाता है घास से कुछ प्राप्त नहीं होता है। सुगन्ध है नाभी में। ढूंढता है बन, घास और पत्तों में। इसलिये हे मेरे मन तू हिरण की तरह ये संसार रूपी वन में है। ऐसा तो गहरा बन है। जिसमें अनन्त जीव गुम है। पता नहीं, कहां किसमें खोज रहे हैं। इसलिये हे मेरे मन। तू हिरण की तरह इस संसार रूपी वन में है। ऐसा तो गहरा बन है। जिसमें अनन्त जीव गुम है। पता नहीं, कहां जाते हैं। पता नहीं, कहां पर है। शरीर का ख्याल पता नहीं कहां पर है। पता नहीं, कहां घूमते हैं। सुख मछली मांस में, जुआ में, शराब में, सिनेमा

में ढूढ रहे हैं। पुत्र में धन में, शरीर मे ढूढ रहे हैं। इधर–उधर। इधर है ही नहीं। वो सुख तेरे अन्दर है। "ढूंढत बन में मिलत न ताही।" कैसे मिलें। हे मेरे मन। तेरे अन्दर है। मिलेगा कैसे ? साधन से। साधन के बिना कोई वस्तु हाथ नहीं आयेगी। याद करना। साधन हमारे ऋषि, मुनि, महात्मा तैयार कर गये हैं। अपने को केवल रस्ता लेना है। "ताप क्लेशा पाप मिटाओ"। तीन प्रकार के ताप–अध्यात्म, अद्भूतक, अद्देवक, आधि, व्याधि, उपाधि। शरीर का ग्रहण। प्रेम से बोलो हरे राम। क्लेशा, अविद्या, असमता। राग, द्वेष। ये मिटाओ। सुनकर संतन बाति। महात्माओं की बात सुन तो सही। हे मेरे मन तू बात सुनना चाहता नही है। दुनियां के अन्दर पांच प्रकार के मनुष्य देखे हैं। आप भी देखना इधर पुने में भी आप भी उनके अंदर हो। परन्तु कौन से नम्बर में आयेंगे। आप उस पर विचार करना। एक वो मनुष्य है जो संतों की बात महात्माओं की बात सुनना चाहते ही नहीं है। बाकी सिनेमा हो, नाटक हो, घोड़ा हो, घोड़े दौड़वाते हों। सच्ची करके पूछो। मती मार गई है। घोड़े का खाना खराब तो उनका भी खाना खराब मिलेगा क्या? महाराज उनको लाखों रूपये मिलते हैं। घोड़ों को भी मारते हैं। जीव। यह प्लाट करके गरीबों को दे तो शहर हो जावे। सच्ची करके पूछो। रविवार को देखा कितनी भीड़। महात्मा कोई वेदान्त की कथा करें तो उधर जाकर देखो कि क्या है ? प्रेम से बोलो हरे राम। सुनना तो चाहते ही नहीं हैं बाकी नाटक, झगड़ा, सिनेमा, तमाशा वो तो बहुत हैं सुनना तो चाहते ही नहीं हैं। दूसरे चाहते हैं कि महात्माओं के सत्संग कथा सुनें। परन्तु फुर्सत नहीं है। महाराज सभी चीज महंगी हो गई। क्या करें। ? हम बाल–बच्चे की करें कि आपके सत्संग की करें। हम फंस गये हैं। किसी ने फंसाया है उनसे पूछो खुद फंसा है कि किसी ने फंसाया है। तो सत् समर्थ है। अगर तू खुद फंसा है तो भगवान की भी ताकत नहीं है, कि तेरे को छुड़ायेंगे। बात बताऊँ सच्ची। महाराज फुर्सत नहीं है भला। कब फुर्सत होगी। हरि ....

जब तक है जिन्दगी, फुर्सत न होगी काम से।
कुछ समय ऐसा निकालो, प्रीत कर लो श्री राम से।।

फुर्सत हो॰। नहीं कुछ समय निकालो। भगवान से प्रीत करो। प्रेम से बोलो हरे राम। गुरु महाराज ने कहा–

इसी दुनिया का काम सभोई, ना कब होगा पूरा जी।
बड़े बहादुर अनन्त चल गये, छोड़ के बीच अधूरा जी।
चिरंजीवी, पुनः इच्छाचारी, काल किया चकचूरा जी।
कह टेऊँ सब काम तजे तुम, नाम जपे निज नूरा जी।।

इसी दुनिया का काम सभोई, ना कब होगा पूराजी। पूरा नहीं होगा। "बड़े बहादुर अनन्त चले गये, छोड़ के बीच अधूरा जी।" रावण जैसे सभी अधूरे में, चले गये। किसी ने पूरा नहीं किया। "धंधे किसे न साध्या, धंधे साध्या जग।" सेई गुरमुख बाचिया जिन पकड़ी हर की पग।।" धंधे ने उसको पूरा कर दिया। धंधा पूरा नहीं किया। नौकरी वालों को नौकरी ने पूरा कर दिया। नौकरी पूरी नहीं कर सके। चिंरजीवी, इच्छाचारी कोई कहता है। मरे तो मरें भी नहीं। काल उन्हें भी खा गया है। हे मेरे मन निश्चय करो। प्रभु का भजन करो। प्रेम से बोलो हरे राम। फुर्सत नहीं है। भला कब फर्सत मिलेगी। बताओ। प्रेम से बोलो हरे राम। तीसरे मनुष्य। प्रेम से बोलो हरे राम! आते हैं परन्तु कथा, संतों के वचन, सत्संग समझ नहीं पाते हैं। वो इधर खड़े होकर भाई–माई चले गये। जो सत्संग के बीच चले गये यानि उनको कथा समझ में आयी नहीं। कहने लगे महाराज कथा तो समझ आयी परन्तु उनको काम था बोले– नहीं, काम नहीं था। समझ में नहीं आयी। जब तक बात समझ में नयीं आयेगी तब तक उसमें से रस और आनंद नहीं आयेगा। समझते नहीं हैं। कहने लगे महाराज उनको काम था। बोले, नहीं तेरे को पता है जिनको यह बात समझ में आयी। उन्होंने राजाओं ने राजायी छोड़ दी।

"गोपीचन्द्र भरथरी राजा, सिर पर धारी धूर
मस्ताना मन क्या दूढे घर–घर की दूर,"

राजा कई गोपीचन्द्र भरथरी कई ने राज छोड़ दिया। समझ में नहीं आयी। ये कितने हुये तीन–चौथे आते हैं– काम छोड़ के आकर के बैठते हैं, श्रवण करते हैं सुनते हैं समझते हैं। परन्तु कर नहीं सकते हैं। कर नहीं सकते हैं। भाई–माई अभी बैठे हो।

अभी विचार करो। मछली–मांस खाना, सिगरेट पीना, सिनेमा जाना, देती–लेती (दहेज) पर पैसा लेना, बोली करते हैं। जबरदस्ती से। अपने स्वार्थ के लिए झूठ बोलना, बिना कारण किसी जीव को दु:ख देना ये बातें कोई अच्छी हैं एक तो उठकर कहे अच्छी है डरना मत। फिर आप सभी ने छोड़ दिया है, समझते हैं। परन्तु छोड़ नहीं सकते हैं। ये चौथे लोग। परन्तु कर नहीं सकते। परन्तु कारण क्या है? ये महात्माओं, गुरूओं से पूछना चाहिए समझते भी हैं। परन्तु कर नहीं सकते। ये पूछना चाहिए। ये कौन सा बीच में रोला है। ये महात्मा सत्गुरू रोला निकाल देंगे।

प्रेम से बोलो हरे राम। पांचवे प्रेमी बड़े श्रद्धा, प्रेम से आते हैं। महात्माओं के सत्संग में बैठते हैं। श्रवण करके, मनन करते हैं, निध्यासन करते हैं। विश्वास रख के लोक परलोक बनाकर के मुक्त हो जाते हैं। हे मेरे मन! "ताप क्लेशा पाप मिटाओ, सुनकर संतन बाती"। महात्माओं की बात सुन। प्रेम से बोलो हरे राम। ये साधन कर। क्या कर? हरि:

चारो साधन तुम्ही साधो, ध्यान धरो दिन राती रे
तुम पाओ ज्ञाति, मन एकांति, होवे शांति।
राम मिलन पढ़ पाती।

प्रेम से बोलो हरे राम। "चारो साधन तुम्ही साधो, ध्यान धरो दिन राती।" भगवान के मिलने के मोक्ष के दो रास्ते हैं। याद करना। रास्ता कहो, मार्ग कहो। दो रास्ते हैं। 1. ज्ञान मार्ग 2. योग मार्ग। फल दोनों का एक है किसी को ज्ञान मार्ग और किसी को योग मार्ग ठीक लगता है। रास्ते हैं दो। यह गुरू महाराज प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के छन्दावली में लिखा है– हरि:

ज्ञान योग ये दोनों मार्ग, अमर लोक को जाता है।
जो जन जिस मार्ग से जावत, आत्म घर को पाता है।
एक बार उस घर में जाकर, फेर लौट नहीं आता है।
कह टेऊँ सब बंधन तोड़े, निज स्वरूप समाता है।

ज्ञान, योग। ये दोनों मार्ग अमर लोक को जाते हैं। अमरापुर कहो अमरलोक एक देश है। उसमें अमरापुर है। चलोगे अमरापुर जितने बैठे हो। उधर महाराज है क्या? टिकट लो। प्रेम से बोलो हरे राम। टिकट तीन प्रकार के हैं। रास्ते तीन प्रकार के हैं– 1. पैदल, 2. गाड़ी 3. समुद्र, 4. हवाई जहाज, आप किसमें चलोगे। हवाई जहाज में। हवाई जहाज में कम से कम तीन बातें चाहिए। कौन सी वो देखो हमारे में हैं पहले तो उसका किराया ज्यादा है। दूसरा बीमार को नहीं चढ़ायेंगे। ठीक हो। तीसरा–कानों में रूई डालेंगे। आवाज है ज्यादा। प्रेम से बोलो हरे राम। ये तीनों बाते हैं। तेरे में। किराया माने निश्चय? विश्वास, श्रद्धा, सत् शास्त्र, गुरूओं में महात्माओं में, भगवान में और बीमार माना–कनिष्ठ, मध्यम नहीं, उत्तम बुद्धि वाला बैठ सकेगा। तीसरा कानों में रूई कोई गालियां दे, कोई कुछ कहे, एकदम चुप कोई निन्दा करे, कोई अपजस करे, कोई जस करे, कानों में डालो रूई। फिर बिठायेंगे। एक समय गर्मी के दिनों में चैत्र मेले के बाद गुरू महाराज थोड़े महिने उधर रहते थे। चौमासे में। सर्दियों में, निकलती थी मण्डली, शहर में ज्यादातर। दास गुरू महाराज जी से आज्ञा पाके जाते थे हरिद्वार, ऋषिकेश। एक समय मुल्तान में रूका तो उधर ज्ञान फले का पूरणदास था जो काले कपड़े पहनकर वारी पर बैठता था। वो गुरू महाराज का प्रीतम था। प्रेम ज्यादा था उधर शाम को हुआ–सत्संग। एक महात्मा आया। उसने कश्मीर की महिमा की। ऐसी महिमा की जो कश्मीर की महिमा करे सत्संग में से घटाया। सत्संग है कश्मीर। ऐसा विचार किया। कश्मीर देखना चाहिए। ऐसी जो महिमा करते हैं तो कश्मीर देखना चाहिए। जितने प्रेमी बैठे हो। आप भी देखो के अमरापुर है क्या?सुनकर के खुशी हुई। अमरापुर देखें तो अच्छा?

अमरापुर निज धाम हमारा, पहुंचत वहां कोई गुर का प्यारा
जिसमें कोई वर्ण न जाती, भेद पंथ की नहिं उतपाती,
ऊंच नीच का नहीं विचारा, अमरापुर निज धाम हमारा,
पहुंचत वहां कोई गुर का प्यारा।

"जिसमें कोई वर्ण न जाती।" वर्ण आश्रम के झगड़े लगे हुये हैं। उधर वर्ण जाती नहीं हैं। वो कहे मेरा पंथ बड़ा है, वो कहे मेरा पंथ बड़ा है। प्रेम से बोलो हरे राम। "ऊँच–नीच का नहीं विचारा।" ये ऊँचा है ब्राह्मण, है शुद्र है।

जहां न धरनी पवन अकाशा, सूर्य चन्द्र का नहिं प्रकाशा।
दिन नहीं रजनी तम न उजियारा
अमरापुर निज धाम हमारा, पहुंचत वहां कोई गुर का प्यारा

धरती आकाश उधर नहीं है। न कोई जमीन न कोई आकाश, न कोई सूर्य, चन्द्र का प्रकाश है। "दिन न रजनी" न कोई दिन है, न कोई रात है, न तम न कोई उजारा न कोई अंधेरा है न कोई प्रकाश है। बाकी क्या है। "धर्मराज न जावत ताहीं।" प्रेम से बोलो हरे राम। "जन्म–मरण का दुःख न जांही।" जहां जन्म–मरण का दुःख नहीं है। "घन–बिन बरस अमृत धारा।" घन माना बादल। बादल के बिना अमृत की धारा बरस रही है। प्रेम से बोलो हरे राम।

कह टेऊँ वहां जो जन जावत, सो फिर वापस लौट न आवत।
अद्भुत ऐसा खेल अपारा, अमरापुर निज धाम हमारा।
पहुंचत वहां कोई गुर का प्यारा, अमरापुर ....।

गुरू महाराज कहते हैं। उधर जो कोई जायेगा फिर वापस लौट नहीं आयेगा। प्रेम से बोलो हरे राम। उससे फिर ज्यादा मुल्क या दश हो तो उससे ज्यादा कोई है ही नहीं। प्रेम से बोलो हरे राम। "अद्भुत ऐसा खेल अपारा।" बड़ा खेल है। प्रेम से बोलो हरे राम। "अमरापुर निज धाम हमारा" अमर लोक में है अमरापुर। उसके वास्ते दो मार्ग हैं– 1. ज्ञान मार्ग 2. योग मार्ग।

ज्ञान मार्ग की 11 साधन 7 भूमिकायें हैं मुख्य। बड़ा रास्ता बम्बई जाता है। बम्बई से जायेगा, दिल्ली, फिर दिल्ली से कई रास्ते निकलेंगे। बड़ा रास्ता है बम्बई का। उसमें से कई रास्ते निकल खत्म होते जायेंगे। बाकि रास्ते हैं दो। ज्ञान, योग, ज्ञान मार्ग की 11 साधन 7 भूमिकाएँ मुख्य। इसमें से कई रास्ते खत्म होते जाते हैं कर्म उपासना। दूसरा योग मार्ग। ये चार प्रकार के हैं– 1. राज योग 2. लय योग, 3. मन्तर योग 4. हठ योग। मुख्य ये दोनों मार्ग उधर जाते हैं। दोनों का फल एक ही निकला है। जितने प्रेमी बैठे हों। ये भजन इधर रखते हैं।

"चारों साधन तुम ही साधो।" पहले चार साधन जो सम्पन्न हैं, वो उत्तम जिज्ञासु हैं। ये वेदान्त कहते हैं।

मल विक्षेप जाकों नहीं, किन्तु एक अज्ञान।
इव चव साधन सहित जो सो अधिकृत मति मान।।

जिसका मल विक्षेप का पर्दा दूर हो गया है। चारों साधन सम्पन्न है, वो आत्म ज्ञान का अधिकारी है। जितने प्रेमी बैठे हों, सत्संग में तीनों प्रकार के लोग आते हैं।

1. उत्तम, 2. मध्यम, 3. कनिष्ठ

जो चार वचन सुने हैं। उसका विचार करना। किसी को शंका हो तो वो भली कहे। समाधान होगा। शंका हो भाई–माई तो भली कहे। सांई मैं शंका करूं आप नहीं। आप शंका करोगे तो बात दूसरी हो जायेगी कैसे होगी? बताऊँ दीवाली के दिन एक बड़ा हलवाई की दुकान एक इस साईड दूसरी उस साईड में दीवाली में मिठाईयां, सुन्दर पन्नियां लगाकर, रंग लगाकर दोनों दुकान लगीं एक ने सस्ती की तो दूसरी भी सस्ती करने लगा तो देखा कि घाटा पड़ रहा है तो एक ने कहा– ऐसे मत कर। जब वह क्रोध में आया तो खबर माता–पिता की भी सुध नहीं रहती है तो मिठाई उठाकर के उसको लगाने लगा। एक–दूसरों को मिठाईयां लड्डू लगाने लगे। कई लोग मिठाईयां खाने भी लगे। फिर आखिरी में एक सत्संगी, विवेकी पुरूष ने कहा– कि क्या कर रहे हो। उसने उसको समझाकर के दोनों एक ही भाव रखो, उसको समझाकर के बिठाया। फिर और कहने लगे कि तुम कब वापस लड़ोगे। संत बसंत राम करेंगे शंका तो उत्तम जिज्ञासु कहते हैं। संतों का आपस में अगर उत्तर–प्रश्न हो तो बात सही नहीं होगी। वो तो खुश होंगे। लेकिन दूसरे कहेंगे साध आपस में लड़ पड़े। प्रेम से बोलो हरे राम। चार वचन सुनते हो। सुबह को खास उत्तम जिज्ञासु के लिए सत्संग। रात को व्यवहार सत्ता चलती है। जो चार वचन सुने हैं उसका विचार करना।

"ज्योति खत्री", जयपुर

सत्गुरु शान्तिप्रकाश महिमा भजन पुस्तक

प्रेम प्रकाश मंडली रामनगर सूरत की और से सत्गुरु शांति प्रकाश महिमा भजनों की एक पुस्तक प्रकाशित होने जा रही है अतः आप सभी सुहृदय कवि सज्जनों से निवेदन किया जाता है कि यदि आपके पास पूज्य गुरुदेव के महिमा रचित भजन कवितायें आदि हों तो कृपया इस पते पर भेजें।

स्वामी टेऊंराम मंदिर (ट्रस्ट) रामनगर कॉलोनी, सूरत–5

स्वामी शांतिप्रकाश अमृत वाणी

पूज्य गुरुदेव की पावन-गिरा से छलके-अमृत बिन्दु

एकादशीय सूत्र

मानस में एक बात बड़ी मार्मिक रूप से आई है हम थोड़ा ध्यान दें–प्रसंग है–एक बार श्री रघुनाथजी के बुलाये हुये गुरु वसिष्ठ जी, ब्राह्मण और अन्य सब नगर वासी सभा में आये। जब गुरु, मुनि, ब्राह्मण तथा अन्य सब सज्जन यथा योग्य बैठ गये तब भक्तों के जन्म–मरण को मिटाने वाले श्रीराम जी वचन बोले–वही मेरा सेवक है और वही प्रियतम है जो मेरी आज्ञा माने। हे भाई। यदि मैं कुछ अनीति की बात कहूं तो भय भुलाकर मुझे रोक देना। तब प्रभु ने कहा–

बडे भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।

साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। पाई न जेहि परलोक संवारा।।

भाई। यह जो मानव शरीर हमें प्राप्त हुआ है, यह बड़े भाग्य की बात है। चूंकि यह शरीर देवों को भी दुर्लभ होता है। अतः इसी न्याय से हम सभी बड़े सौभाग्यशाली हैं। जो हमें ऐसा देव दुर्लभ शरीर मिला है। फिर इसका महत्व व उपयोग क्या है ? बोले यह साधन योनि व मोक्ष का द्वारा है। इससे हम मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। जो इस शरीर को प्राप्त करके अपना परलोक नहीं बनाता फिर उसके लिये सजा कौन सी है ?

सो परत्र दुख पावई सिर धुनि धुनि पछिताइ। कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ।।

फिर वह परलोक में दुख पाता है। सिर को पीट–पीटकर पछताता है। वो अपना दोष न समझ करके काल–कर्म व ईश्वर पर दोष लगाता है। अतः प्रभू कृपा से मिली इस दुर्लभ देह द्वारा हम सतकर्म करके अपना केवल कल्याण करें।

परमात्मा ने इस शरीर में एक–एक अव्यव बड़ा महत्वपूर्ण रखा है। हरेक की अपनी–अपनी महिमा है। अपनी इन इंद्रियों द्वारा हम क्या करें ? इसका हम कैसे उपयोग करें ? इस विषय पर पूज्य गुरुदेव युगऋषि सद्‌गुरु शांति प्रकाश जी महाराज ने अपनी पावन सरल वाणी द्वारा मार्गदर्शन दिया है। आईये अमृत बिन्दुओं पर चिंतन करें। इन बिदुओं में से प्रथम चिंतन है–

तन

कबहुंक कर करूणा नर देही'' परमात्मा की विशेष कृपा से यह विशेष मानव योनि हमें प्राप्त हुई है। अब भाई–हमारा कर्तव्य बनता है कि हम इसका सद्‌उपयोग करें। शरीर का सद्‌उपयोग क्या है–हम इसके द्वारा मानव सेवा करें। पर उपकार करें। द्वितीय बिंदु है–

आँख

आँखों का सदैव सही उपयोग करो। कैसे ? इसे गुरु, परमात्मा व संतों के पावन दर्शनों में लगाओ। इससे मन प्रसन्न व प्रफुल्ल बना रहेगा। बाहिर मत देखो वरन् दुख होगा।

हाथ

हाथों की शोभा ठाकुर की सेवा व सन्तों की सेवा आदि से होती है। इससे मुक्ति का द्वार खुल जाता है।

जिह्‌वा

जिह्‌वा भी सबसे महत्वपूर्ण है। इसलिये इसका उपयोग भी महत्वपूर्ण होना चाहिये और सबसे महत्वपूर्ण कार्य है–प्रभु का पावन नाम का उच्चारण करना। इस जिह्‌वा से परमात्मा के निर्मल नाम का ऊँचे स्वर

से उच्चारण करो। इससे पापों की मैल धुल जायेगी। इससे हृदय की शुद्धि होती है।

पैर

पैर परमात्मा की उत्तम कृति है। इसलिये इन्हें परमात्मा के ही उत्तम कृत्य की तरफ ले जायें। तभी पैरों की सार्थकता है। वरना नहीं।

कान

अरे भाई। जो कान कृष्ण का कीर्तन व भगवत कथा श्रवण नहीं किया करते वो समझो कान–कान नहीं हैं अपितु वो सर्प के बिल हैं। कानों की शोभा भगवत चर्चा सुनने में है। यही कानों का सही उपयोग हैं।

मन

मनुष्य का मन सबसे कठिन विषय है। फिर भी इसके ठीक उपाय हैं–यदि हम इसे प्यार से एकांत में समझायेंगे, तो जरूर शांत होगा। मन शांत होगा तो सब कुछ शांत हो रहेगा यदि मन अशांत होगा तो सारा जीवन अशांत हो जायेगा। जो शांत है वो अमृतमय है और जो अशांत है उसके लिये अमृत भी जहर का कार्य करेगा।

बुद्धि

भाई परमात्मा की बड़ी कृपा है जो हमें एक सर्वश्रेष्ठ साधन दिया है–बुद्धि।

बुद्धि यानि विवेक। हम यदि अपने जीवन में विवेक पूर्वक संसार में विचरण करेंगे तो निश्चित ही दुखों से छूट जायेंगे।

बस इसका सही उपयोग करना सीख लें–वो कैसे–इसे सतशास्त्रों, सन्तों व सत्गुरु के ज्ञान को ग्रहण करने में लगा दें। यदि आप विवेक से विचरण करेंगे तो इसमें आपकी इज्जत है वरना.........।

चित्त

आदमी का चित्त बड़ा चंचल रहता है। चित्त की चंचलता के कारण इसकी बड़ी लम्बी–लम्बी छलांगे हो जाती हैं। जिससे वह दुखी हो जाता है।

अतः आदमी के सुखी व आनंदमय रहने का एक ही उपाय है कि इसे (चित्त को) सर्वदा के लिये प्रभू के व गुरु के ध्यान में स्थिति दें।

स्वांस

प्रतिदिन हम इक्कीस हजार छः सौ स्वांस लेते हैं। कभी आपने विचार किया है कि–इस एक–एक स्वांस का मूल्य कितना है ? इसका मूल्य इतना है यदि हम न जीवन भर की कमाई दें तो भी एक स्वांस ज्यादा नहीं मिले इतना इसका मूल्य है। और हम इसे ऐसे ही व्यर्थ की चेष्टाओं में व्यर्थ के गप्पों में उसे बर्बाद कर देते हैं। यह कितनी ना समझी व अज्ञानता है ?

यदि इस मूल्यवान वस्तु का कदर नहीं करेंगे तो परमात्मा की दरबार में बहुत बड़ा दण्ड मिलेगा खूब नाम सुमरन करो यही इसका कदर है।

धन की पवित्रता

संसार में सबसे बड़ा हाथ दानी का माना गया है। यदि परमात्मा ने आपको पर्याप्त धन दिया है तो इसका सद्उपयोग करके धन को सफल बनाओ।

गरीब, दीन, हीन व निर्धनों की यथाशक्ति सेवा करने से धन की शुद्धि होती है।

–संकलन–प्रेम प्रकाशी दिलीप, बड़ौदा

सूचना

15 से 19 अक्टूबर 2002 तक सम्पन्न

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 106 वां जन्म महोत्सव

हरिद्वार मेले को आप केबिल डिस्क के माध्यम से इन चैनलों पर देखें

संस्कार चैनल

10 नवम्बर 2002 रविवार दोपहर 3 बजे

17 नवम्बर 2002 रविवार दोपहर 3 बजे

आस्था चैनल

24 नवम्बर 2002 रविवार रात्रि 9 बजे

(स्वयं भी देखें औरों को भी बतावें)

पुरस्कृत निबंध (द्वितीय पुरस्कार)

धन्न गुरु टेऊँराम

सर्व मंगल का मूल है, टेऊँराम शुभ नाम।
जांके स्मरण ध्यान से, नाशत विघ्न तमाम।।

...दनीय, परम पवित्र सिन्धु प्रदेश के हैदराबाद जिले में पावन सिन्धु नदी के तट पर "खण्डू" नामक गांव में विक्रम सम्वत् 1944 आषाढ़ शुक्ल पक्ष षष्ठी तिथि 6 जुलाई सन् 1887 शुभ शनिवार के दिन प्रातः 5 बजे परम पूज्य सद्‌गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का फूलवंशी क्षत्रिय कुल में भक्त श्री चेलाराम जी श्री माता कृष्णा देवी के घर में जन्म हुआ। (संतों द्वारा माता कृष्णा को दिए गए आशीष वचनों को पूरा करने हेतु स्वयं परमात्मा सत्पुरूष योगी महात्मा के रूप में अवतरित हुए।)

दो बड़े भाईयों (श्री वेन्सीलाल, श्री टहलराम) और दो बड़ी बहनों (ज्ञानी बाई, ईश्वरी बाई) के दुलारे सद्‌गुरू महाराज बाल अवस्था से सात्विक सदैव हंसमुख एवं कोमल स्वभाव के थे। बाल अवस्था से ही सद्‌गुरू महाराज में प्रभु प्रेम की लगन थी, अपने सहपाठी मित्रों को खेल-खेल में प्रभु के पावन नाम का जाप करवाते, ध्यान लगाना सिखाते और सुंदर भजन गाकर उनमें प्रभु प्रेम की लौ जगाते। बाल अवस्था में ही सद्‌गुरू महाराज जी को श्री वरूणदेव भगवान झूलेलाल का साक्षात्कार हुआ। (श्री वरूणदेव, भगवान झूलेलाल जी, सद्‌गुरू महाराज जी के परम मित्र थे, जन कल्याण व लोक हितार्थ हेतु महाराज श्री ने जब जब उन्हें याद किया श्री वरूणदेव ने आकर अपनी मित्रता को निभाया। यह मित्रता लीला पर्यंत बनी बनी रही। (जय झूलेलाल)

सद्‌गुरू महाराज जी के पिता श्री चेलाराम जी नित्य सत्संग घर पर करते थे, संतों महात्माओं का सदा ही घर पर आगमन होता था। इस तरह सद्‌गुरू महाराज जी का भी जीवन संतों की सेवा और सत्संग में गुजरता। इस तरह सदगुरू महाराज जी की बाल अवस्था प्रारंभ से ही प्रभु नाम के सुमरण ध्यान में बीती। परम पूज्य सद्‌गुरू महाराज जी ने 14 वर्ष की आयु में परम श्रद्धेय श्री आसूराम जी महाराज से विधि पूर्वक मंत्र दीक्षा लेकर उन्हें अपना गुरू बनाया। सद्‌गुरू महाराज जी की अवस्था जब 16 वर्ष की हुई तब पिताश्री चेलाराम जी नश्वर देह को त्याग कर सदा के लिए अमरापुर वासी हुए। अब पिताश्री के स्थान पर सद्‌गुरू महाराज जी नियमपूर्वक प्रातः और संध्या घर पर सत्संग करते। सद्‌गुरू महाराज जी प्रेम में मग्न हो अपने वैराग्य युक्त भजन रचकर जब सुनाते तो सुनने वाले अपनी देह की सुधबुध भूल जाते। सद्‌गुरू महाराज जी इकतारा लेकर बड़ी मौज से गाते थे, प्रतिदिन सत्संग की मौज बढ़ती गई।

सद्‌गुरू महाराज जी का व्यावहारिक अर्थोपार्जन में चित्त न लगता। "जिसने परमार्थ का सत्यव्रत धारण किया हो उसका जगत के इस मायावी कारोबार में भला कैसे चित्त लगे।" श्री सद्‌गुरू महाराज जी ने सत्संग रूपी दुकान चलाने में अपना मन लगाया। धर्म कर्म ज्ञान भक्ति की दुकान चल पड़ी, श्रद्धालु ग्राहक आने लगे। प्रेमियों की बढ़ती हुई संख्या को देखकर कुछ विशिष्ट वर्ग के व्यक्तियों का ईर्ष्यावश विरोधाभास भी हुआ, पर सत्संग कार्य चलता रहा। सद्‌गुरू महाराज जी अपना नियम पालन करते तटस्थ रहे। अंत में विरोधी लोगों ने सद्‌गुरू महाराज की महिमा को पहचाना और क्षमायाचना कर श्री महाराज की शरण में आए।

इसी बात को श्री महाराज जी अपने उपदेश में बताते हैं कि – "अपने मन में दृढ़ विश्वास रखो कि इस सत्संग रूपी वृक्ष को संसार में कोई भी काटने में समर्थ नहीं है। इस वृक्ष का आधार परब्रम्ह परमात्मा है। वह दिव्य है सर्वत्र उसका प्रकाश फैल रहा है इस वृक्ष के सत्पुरूष महात्मा बड़ी टहनियां हैं। इसलिए तन मन का अहंकार छोड़कर उन सत्पुरूषों की सेवा करते रहो। सत्संगी प्रेमी जिज्ञासु इस सत्संग वृक्ष की छोटी शाखाएं हैं इन प्रेमियों को भी पवित्र हृदय वाला ही पहचान सकता है। इसमें वचन रूपी पत्ते पारस के समान हैं। जिनको धारण करने से अन्तःकरण की सारी मैल निवृत्त हो जाती है। संतों के तीखे वचन कांटों के समान हैं इन वचनों के द्वारा जीवन का विरह बढ़ता है। ये वचन जिसके हृदय में चुभ जाते हैं वे जीते ही मर जाते हैं। इस वृक्ष में दैवी सम्पदा के गुण फूलों के समान हैं जिसके धारण करने से सब कार्य सिद्ध हो जाते

हैं। इसमें ज्ञान रूपी फल लगा हुआ है जिसके आ जाने से यह जीव अमर बन जाता है। अहं ब्रह्मास्मि आदि वाक्यों से इसे ब्रह्मानंद प्राप्त होता है और इससे यम की भयता ही निवृत्त हो जाती है। कृपा रूपी इस वृक्ष की सुहावनी छाया है जो भी इसके नीचे बैठते हैं उनके तन मन को महान शांति मिलती है। इस वृक्ष का बीज गुरू मंत्र है यह बीज लौकिक धन से नहीं मिलता किंतु जो निर्मान होकर तन मन की दक्षिणा चढ़ाता है उसे ही यह बीज मिलता है। इस सत्संग रूपी वृक्ष की जो भी प्राणी पूजा करते हैं। वे लोग चिर शांति को प्राप्त करते हैं और वे लोग संसार सागर से पार होकर मोक्ष की प्राप्ति करते हैं।"

खण्डू ग्राम मे प्रेमियों की संख्या बढ़ने लगी सद्गुरू महाराज जी का स्वभाव अब गंभीर शांत होने लगा। एकांत वास पाने के लिए सद्गुरू महाराज जी कभी शमशान में, कभी वन पर्वतों की गुफाओं में कभी कंदराओं में चले जाते। वहां एकांत में चित्त की वृत्ति को एकाग्र कर आत्म स्वरूप के आनंद में लीन हो जाते। एक समय वन प्रवास के समय सद्गुरू महाराज जी के समक्ष "माया" का आगमन हुआ, परंतु जिन सत्पुरूष महात्माओं की वृत्ति परमात्मा में लगी रहती है उन पर माया के छल बल का प्रभाव नहीं पड़ता। देवराज इन्द्र द्वारा परीक्षा लेने हेतु आई माया से सद्गुरू महाराज जी ने कहा– 'आप देवराज इन्द्र को हमारी तरफ से कहना कि हमें न आपके सिंहासन की आवश्यकता है और न ही स्वर्ग लोक की, हम तो ब्रह्मलोक से आए हैं और वापिस भी वहीं जाएंगे।'

परम उदारी, करूणा की मूर्ति, प्रेम के सागर, इकतारापाणी श्री सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज का प्रयास सदा से ही अज्ञान मोह जन्य निद्रा में सोए हुए जीवों को जगाने, भय भ्रम दूर कर उन्हें सत्य की राह बताने, लोगों को प्रेमोपदेश देकर परमात्मा की भक्ति की ओर प्रेरित करने, भेदभाव रहित होकर सेवा करने में बीतता। सद्गुरू महाराज जी के ज्ञानमयोपदेश से जन्म जन्मांतर का प्रगाढ़ अज्ञानमय अंधकार नष्ट हो जाता था। इसके साथ ही अज्ञान जन्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, दम्भ, पाखंड आदि समस्त विकार समूल नष्ट हो जाते थे।

सत्य सनातन धर्म प्रचार हेतु सद्गुरू महाराज जी ने सम्पूर्ण सिन्ध प्रदेश की यात्रा ग्राम ग्राम नगर नगर में भ्रमण कर अनेक प्राणियों को धर्मोपदेश कर सन्मार्ग में चलने की प्रेरणा दी। संत बुद्धपुरी के आमंत्रण पर श्री महाराज ने दक्षिण भाग में स्थित "लाड़" टण्डे बाग की यात्रा की, वहीं अपने उपदेशों द्वारा जनकल्याण करते हुए यात्रा संपन्न कर होली उत्सव के अवसर पर खण्डू पधारे। श्री महाराज जी होली का उत्सव हमेशा खण्डू में ही मनाते थे। होली का उत्सव खण्डू ग्राम में आनंद पूर्वक मनाने के पश्चात् अब सद्गुरू महाराज जी ने प्रेमियों को प्रेम में ही रखने के उद्देश्य से ही खण्डू ग्राम छोड़कर अन्यत्र जाने का संकल्प किया।

श्री अमरापुर स्थान की स्थापनाः–

फाल्गुन माह सम्वत् 1978 को परम पूज्य श्री सद्गुरू जी महाराज टण्डे आदम नगर में आ गए। कुछ शिष्यों को साथ ले नगर से दूर दक्षिण दिशा में जहां घना जंगल था और चारों तरफ बालू के ऊँचे नीचे ढेर थे, सर्वत्र जंगली जीव जंतुओं का साम्राज्य था, ऐसे स्थान पर सद्गुरू महाराज जी ने डेरा डाला। शिष्यों को वहीं घास–फूस की झोंपड़ियाँ बनाने का आदेश दिया। कुछ दिन पश्चात् वहां स्वार्थी और ईर्ष्यालु व्यक्तियों का विरोध हुआ। विरोधियों ने झोंपड़े जला डाले पर सद्गुरू महाराज जी प्रभु की इच्छा मानकर मौन रहे। आखिर भक्त की भक्ति के आगे श्री हरि को झुकना पड़ा। (सद्गुरू महाराज जी कहा करते थे मैंने सुना है सन्मार्ग पर चलते हुए भक्तों की पीड़ा हरने परमात्मा स्वयं आते हैं।) आखिरकार अंग्रेज दंपत्ति के वेश में श्री हरि श्री लक्ष्मी जी सहित आए। जब अन्जान बनकर झोंपड़ों में लगी आग के विषय में अंग्रेज दंपत्ति ने पूछा कि यह सब किसने किया है तब मानव वेश में आए परमात्मा को पहचानकर सद्गुरू महाराज जी ने कहा– "प्रभु यह सब आपकी ही लीला है। आपकी आज्ञा से ही संसार के समस्त कार्य होते हैं आप जो कराओ सो हम करें, आपकी ही आज्ञा से यह दुर्दशा हुई है, सो अब आप ही स्वयं नवनिर्माण करें। कुछ समय पश्चात् प्रभु की लीला से वह सारी जगह (लगभग 7 एकड) सद्गुरू महाराज जी को आश्रम निर्माण हेतु सरकार द्वारा अर्पित की गई। उसी स्थान पर "**अमरापुर स्थान**" का निर्माण हुआ। परम पूज्य श्री सद्गुरू महाराज जी ने अपने कर कमलों से अमरापुर स्थान की स्थापना की, और समस्त जिज्ञासुओं, प्रेमियों, संत महात्माओं को एक स्थान पर ही मिलाप कराने से शुभ विचार से चैत्र मेले की परम्परा का शुभारंभ किया।

चैत्र मेले का शुभारम्भ चैत्र मात्र शुक्ल पक्ष की 12 तारीख सम्वत् 1979 को परम पूज्य सद्गुरू महाराज जी द्वारा किया गया। श्री अमरापुर स्थान की स्थापना के पश्चात् आश्रम में कुटियाओं का, सत्संग मंडप, भंडार गृह आदि के निर्माण का सेवा कार्य चलने लगा। आश्रम के खर्च एवं पैसों के हिसाब किताब के लिए श्री मूलचंद जी को मोदी नियुक्त किया गया था। एक बार श्री मूलचंद मोदी को बाजरे के व्यवसाय में संभावित अत्यधिक नुकसान होने के बदले सद्गुरू महाराज जी की असीम कृपा से वह नुकसान हजारों के लाभ में बदला। श्री मूलचंद जी को उस समय लगभग दस हजार का अतिरिक्त मुनाफा हुआ। तब श्री मूलचंद मोदी ने साधु महात्माओं हेतु एक पक्का बड़ा कमरा, एवं कुछ पक्की कुटियाएँ बनाने हेतु सेवा धनराशि सद्गुरू महाराज जी के श्री चरणों में अर्पित की। संतों के दिन–रात के निरंतर परिश्रम से एक माह में पक्का विशाल कमरा एवं कुछ कुटियाओं का निर्माण कार्य संपन्न हुआ। उक्त निर्माण कार्य के समय सद्गुरू महाराज हाथ में लाठी रखते थे और सभी सेवाधारियों के काम का निरीक्षण करते थे। सभी सेवाधारी सद्गुरू महाराज जी के दर्शन कर आनंद से भर कर कार्य करते हुए गाते रहते थे और कुछ उनका जयजयकार मनाते थे जिसकी वजह से उन्हें थकान का अनुभव नहीं होता था। इस तरह सेवा सत्संग करते निर्माण कार्य संपन्न हुआ। श्री अमरापुर स्थान रूपी इस बैकुंठपुरी को श्री सद्गुरू महाराज जी ने स्वयं शारीरिक परिश्रम कर अपने अमृतमयी श्रम बूंदों से पवित्र किया है और हमारे पंथ के पूज्य विभूतियों, संतों महात्माओं ने दिन रात परिश्रम, सेवा लगन से इस अमरापुरी गुलिस्तान को संवारा है, इसकी पावन भूमि में हमारे आचार्य परम वंदनीय सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज का और पूज्य संतों महात्माओं के श्रम का अथाह अमृत रस बहा है। जिससे यह पावन भूमि स्वर्ग से भी पावन हो गई है। इसकी पावन रज को मस्तक पर लगाने से अपार शांति और सुख आनंद की प्राप्ति होती है। श्री अमरापुर की इस पावन भूमि को कोटि कोटि नमन है।

सत्य सनातन धर्म प्रचार हेतु सद्गुरू महाराज जी द्वारा की गई सिंध प्रदेश की यात्रा का संक्षिप्त उल्लेखः–

संतों की महिमा अपरम्पार है। संत स्वयं अविद्या नींद से जागकर दूसरे जीवों को भी अविद्या नींद से जगाते हैं। कितने ही कष्ट सहन कर भ्रमण कर जगत के जीवों का उद्धार करते हैं। परम श्रद्धेय आचार्य श्री सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज का अवतार जगत के जीवों का उद्धार करने हेतु ही हुआ। इसलिए सद्गुरू महाराज जी सदैव सैलानी रहे। जगत कल्याण हेतु भ्रमण करते रहते थे। सिंध के अनेकों नगर ग्रामों (शिकारपुर, कंधकोट, गौंसपुर, लाड़काना, हैदराबाद, चक, खाही बडाईन, सखर, कराची, लाहौर, शहदादपुर, खानपुर, रूस्तम, कश्मोर आदि अन्य) में स्वयं जाकर लोगों को दर्शन देकर कृतार्थ किया और धर्म वेदांत का उपदेश देकर सत्य और प्रेम का प्रकाश जगाया।

यात्रा विवरणः–भाई वसणराम की पुण्य तिथि पर भगत संत कंवरराम साहब के आमंत्रण पर सद्गुरू महाराज जी रोहिड़ी ग्राम पहुंचे। भगत साहब से सद्गुरू महाराज जी का अन्य यात्राओ में भी मिलाप हो चुका था। भगत साहब से श्री महाराज जी का विशेष प्रेम था।

एक बार रहड़की में प्रवचन के समय सद्गुरू महाराज जी ने संत कंवरराम साहब से निवेदन किया कि'आप मांस खाना छोड़ देवें जैसे माता बच्चे के उत्तम स्वास्थ्य के लिए कुछ वस्तुओं का वर्जन करती है उसी प्रकार आप संत लोग संसार के माता पिता हैं। आप तो सदैव समर्थ और निर्लेप हैं परंतु अगर दूसरों के कल्याण हेतु मांस खाना छोड़ दें तो अत्यंत ही उत्तम रहेगा क्योंकि आप को देखकर कई लोग मांस खाना छोड़ देंगे।'

रोहिड़ी ग्राम पहुंचकर सत्संग द्वारा प्रेम का उपदेश दिया। तत्पश्चात् भगत साहब से विदा ले गढ़ी आदूशाह ग्राम के प्रेमियों को प्रेम का अमृत पिलाते 'चक'ग्राम पहुंचे। जहां भक्ति वेदान्त, एकता का प्रचार किया। यहीं पर पूज्य श्री स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज एवं उद्धवदास जी महाराज ने नाम की दीक्षा ली और उनके शिष्य बने। यहीं से स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज और स्वामी ऊद्धवदास जी अपना घरबार छोड़कर सद्गुरू महाराज जी के साथ यात्रा पर चल पड़े। आगे यात्रा करते सद्गुरू महाराज जी मंडली समेत 'अदरतकी' ग्राम पहुंचे, ग्राम में बहुत जन समुदाय को देखकर सद्गुरू महाराज जी ने भाई आवतराम से पूछा कि 'ग्राम तो छोटा है पर इतनी जनता इस गांव में कैसे आई है?' इसके उत्तर में भाई आवतराम ने कहा-- 'यहां मंगलराम की स्त्री चंद्रदर्शन की रात को झूमती है।

लाडकाना, सखर और आसपास के लोग दूर दूर से उस रात कुछ पुत्र प्राप्ति हेतु, कुछ शरीर के कष्ट निवारण हेतु प्रश्न पूछने हेतु आते हैं। आज चन्द्रदर्शन है, इसलिए इतनी जनता आई है।' मंगलराम ने गुरू महाराज से प्रार्थना की ऐसी दया करें जिससे मेरी स्त्री झूमना बंद करे। सद्‌गुरू महाराज जी ने उस स्त्री के पाखण्ड का नाश कर लोगों को जिन्न–भूतों, जादू–टोनों के भम्र में न आने का उपदेश देकर उस स्त्री को भी सत्य का मार्ग बताकर, नामोपदेश देकर उसका कल्याण किया। आगे यात्रा करते सद्‌गुरू महाराज जी रूस्तम गांव में पहुंचे जहां खालसा पंथ के लोगों का गुरूद्वारा था। उनके द्वारा यह प्रचार किया जाता थां कि 'गुरू ग्रंथ साहब ही गुरू है, अन्य किसी देहधारी गुरू बनाने की आवश्यकता नहीं है'। वहां सद्‌गुरू महाराज जी ने देहधारी गुरू की आवश्यकता को सत्संग द्वारा सहज रूप से समझाकर उनका संशय दूर किया। गुरूनानक देव जी द्वारा ही दिए गए उपदेशों को **"कह नानक प्रभु यही जनाई, बिन गुरू मुक्ति न पाईए भाई"।** स्मरण कराकर गुरू भक्ति का मार्ग बताया। इस प्रकार से सद्‌गुरू महाराज जी कभी गुरूजनों की वार्ता करते थे कभी धर्म की और कभी अवतारों की महिमा और कभी वेदांत पर प्रवचन करते थे। सभी पंथों के प्रेमी हिंदू, मुसलमान, सिक्ख सब सुनकर अत्यंत प्रसन्न होते थे क्योंकि सद्‌गुरू महाराज जी की वाणी अभेद थी। सद्‌गुरू महाराज जी किसी धर्म का खण्डन नहीं करते थे। सदैव एकता का पाठ पढ़ाते थे।

महिमा वृत्तांतः–आगे यात्रा करते सद्‌गुरू महाराज जी शिकारपुर पहुंचे, भूरामल जी के घर पर सत्संग और भोजन का आमंत्रण था। भोजन लगभग सौ आदमियों का बना था,सत्संग के पश्चात् सद्‌गुरू महाराज जी ने उपस्थित श्रोताओं और मेहमानों से भोजन करने का आग्रह किया, लगभग 500 आदमियों का समुदाय था। बरकत के धणी, दया के भंडार सद्‌गुरू महाराज जी ने भंडारे में आकर अपने कमंडल से पानी का छींटा लगाकर, देग के ऊपर सफेद चद्दर लगाकर सेवाधारियों को सत्‌नाम साक्षी कहते हुए भोजन परोसने की आज्ञा दी। समस्त संत मंडल के साथ चार–पांच सौ व्यक्तियों ने भोजन पाया तब भी आठ दस लोगों का भोजन शेष था। दूसरा वृत्तांत बख्शापुर ग्राम में कुंए का पानी [illegible]रा था, सद्‌गुरू महाराज जी द्वारा कमंडल में से जल का छींटा उस कुंए में डालने से कुंए का जल मीठा एवं पीने योग्य हो गया। वह कुंआ आज भी बख्शापुर में स्थित है। ऐसे ही एक बार मेले के अवसर पर आश्रम में स्थित कुंए का जल एकदम नीचे आ गया। संतों और सेवाधारियों ने सद्‌गुरू महाराज जी से प्रार्थना की, तब सद्‌गुरू महाराज जी ने अपना कमंडल संत उद्धवदास जी को देकर कहा– 'इस कमंडल का जल सत्‌नाम साक्षी बोलते हुए कुंए में उड़ेल दो।' कमंडल का जल कुंए में डालते ही ऊपर तक जल भर आया और बड़े ही आनंद से मेला कार्य पूरा हुआ फिर कभी जल की कमी नहीं हुई।

सद्‌गुरू महाराज जी की उत्तराखंड यात्राः–

परम पूज्य सद्‌गुरू टेऊँराम जी महाराज संत मंडली बनाकर साथ में कुछ प्रेमियों को लेकर उत्तराखंड की यात्रा पर निकले। टंडे आदम से यात्रा आरंभ करके हैदराबाद पहुंचे। सत्संग के समय सद्‌गुरू महाराज जी ने जब अपने प्रवचन में कहा– 'यह जीव स्वयं ईश्वर का रूप है, तब इस बात का खण्डन करते हुए ब्रह्मसमाजी पंडितों ने काफी शोर मचाया। बाद में शास्त्रार्थ भी हुआ। अंत में सद्‌गुरू महाराज जी ने वेदांत के अनुसार तर्क रखते हुए यह साबित किया कि वास्तव में यह जीव ब्रह्म का स्वरूप है। यह तत्व का अभेद ज्ञान बिना सद्‌गुरू के प्राप्त नहीं होता है। सद्‌गुरू जब जिज्ञासु को आत्मज्ञान देता है तब ही जिज्ञासु आत्मज्ञानी होकर वैराग्य से सब पदार्थों का त्याग कर जीवन मुक्त होकर संसार में विचरण करता हैं। आगे यात्रा करते हुए लाहौर, अमृतसर का दर्शन कर रेलगाड़ी से हरिद्वार पहुंचे। हरिद्वार में सद्‌गुरू महाराज जी संत मंडल सहित "संत चेतनदास अवधूत की कुटिया" में आए। उस समय कुटिया के महंत स्वामी प्रेमदास जी थे। हरिद्वार में नित्य गंगा स्नान, हर की पौडी का दर्शन, संतों से ज्ञान वार्ता वेदांत वार्ता का आनंद रहता। कुछ दिन हरिद्वार कनखल में रहकर ऋषीकेश में स्वर्गाश्रम, लक्ष्मण झूला, भरत मंदिर का दर्शन कर संत मंडल सहित यात्रा करते सद्‌गुरू महाराज जी यमुनोत्री पहुंचे तत्पश्चात गंगोत्री में गंगा उदगम का दर्शन कर केदारनाथ धाम पहुंचे। वहां केदारेश्वर शिवलिंग, ज्योर्तिलिंग का दर्शन कर बद्रीनारायण पधारे। वहां पांच दिन प्रवास कर अलकनंदा में स्नान कर हिमालय में निवासी संतों महात्माओं का दर्शन कर

उनसे ज्ञान चर्चा करते हुए जोशी मठ होते हुए पुनः हरिद्वार आए। यह सम्वत् 1990 श्रावण मास का समय था। कुछ समय हरिद्वार में पुनः रहकर मथुरा वृंदावन बृज भूमि पहुंचे। यहां भगवान कृष्ण की झांकियों और सावन के झूलों का दर्शन कर जयपुर पहुंचे, जयपुर में स्टेशन मार्ग में एक संध्या भ्रमण करते हुए सद्गुरू महाराज जी ने एक सुंदर तालाब देखा। महाराज श्री को वह स्थान उत्तम और मनोरम लगा। इसकी चर्चा उस समय महाराज श्री ने स्वामी सर्वानंद जी से की थी (आगे चलकर सद्गुरू महाराज जी की प्रेरणा से जयपुर में उसी स्थान पर अमरापुर स्थान की स्थापना हुई)। इस यात्रा में श्री स्वामी सर्वानंद जी महाराज को कालरा रोग हो गया था, इसलिए शीघ्र हैदराबाद आकर स्वामी सर्वानंद जी का उपचार कराया गया, तत्वपश्चात संत मंडल सहित सद्गुरू महाराज जी टंडे आदम आश्रम पहुंचे।

परम पूज्य आचार्य सद्गुरू श्री टेऊँराम जी महाराज ने अपना **"प्रेम प्रकाश पंथ"** बनाया। समस्त प्रेम प्रकाशी शिष्यों को एकजुट करने के लिए वैदिक मर्यादा और रीति से यह शुभ कार्य संपन्न किया। परम पूज्य आचार्य देव श्री सद्गुरू महाराज जी ने हम प्रेम प्रकाशियों के कल्याणार्थ मूल मंत्र **"सत्नाम साक्षी"** को प्रणाम मंत्र की आज्ञा दी। इस तरह सत्नाम साक्षी हम समस्त प्रेम प्रकाशियों का सगुण मंत्र और प्रणाम मंत्र है।

परम श्रद्धेय आचार्य देव श्री टेऊँराम जी महाराज ने कुंभ मेले के अवसर पर संतों महात्माओं, मुसाफिरों और प्रेमियों की सुविधा के लिए **"प्रेम प्रकाश छावनी"** रखने की परम्परा का शुभारंभ किया, इस छावनी में "अन्न क्षेत्र" भी लगाया जाता है। हरिद्वार प्रयाग, उज्जैन और नासिक चारों कुंभ मेलों के अवसर पर आज तक उसी परम्परा का निर्वाह होता है। सद्गुरू महाराज जी का समस्त जीवन प्राणी मात्र की सेवा, लोक कल्याण, परमार्थ, परोपकार में व्यतीत हुआ। श्री सद्गुरू महाराज जी 55 वर्ष की आयु में हैदराबाद सिंध के प्रेमप्रकाश आश्रम में स्वामी माधवदास के यहां सम्वत् 1999 में इस पंच भौतिक अनित्य शरीर का त्याग करके ब्रह्म ज्योति में समाए। सद्गुरू महाराज जी के पार्थिव शरीर को टण्डे आदम लाया गया और वहीं पर विधि पूर्वक संस्कार करके पवित्र अस्थियां एकत्रित करके विशाल समाधि बनाई गई।

सन् 1947 में भारत विभाजन के पश्चात् पूज्य श्री स्वामी सर्वानंद जी महाराज समस्त संत मंडल सहित जयपुर में सद्गुरू महाराज जी की पवित्र अस्थियां साथ ले आये। यहां जयपुर में पुनः नवीन 'अमरापुर स्थान' बनाया गया और उसमें गुफा अंदर सुंदर मनोहर समाधि का निर्माण किया गया। यह पावन स्थान हम प्रेम प्रकाशियो के लिए तीर्थ रूप बन गया है।

श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथः–

परम पूज्य आचार्य देव श्री टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित समस्त रचनाएं बड़े ग्रंथ के रूप में छपी हैं इसका नाम "श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ" रखा गया है। इसमें ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, प्रेम से युक्त उपदेशों को भजनों द्वारा, कविता द्वारा दर्शाया गया है। ब्रह्म का बोध कराती दोहावली और अनन्य शिक्षाओं, कल्याणकारी उपदेशों का इस ग्रंथ में समावेश है।

उपसंहारः–परम पूज्य, परम श्रद्धेय, प्रातः स्मरणीय सद्गुरू श्री टेऊँराम जी महाराज ने जो हमको सत्य, प्रेम, अहिंसा, भाईचारे, सेवा का जो मार्ग बतलाया है हम उन पर सदा चलकर अपना कल्याण करें। अपना, समाज का और देश का उत्थान करें। अपने प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय का सदा मान बढ़ाएं। श्री सद्गुरू महाराज जी के वचनों पर चलना ही हमारा धर्म है, परम कर्त्तव्य है।

हम परम पूज्य, परम पावन, आचार्य देव जी भगवान श्री सद्गुरू जी महाराज के पावन श्री चरणों में कोटिशः कोटिशः नमन करते हैं।

"सद्गुरू देव भगवान की जय।। धन गुरू टेऊँराम।।
ॐ शांतिः। शांतिः।। शांतिः।।।"

सेवा में–नामदेव प्रेमप्रकाशी, भाटापारा

फोन नम्बर परिवर्तित

जैसा कि आप सब जानते ही हैं कि सारे देश के टेलीफोन नम्बर परिवर्तित किये गये हैं। सम्पूर्ण देश के टेलीफोन नम्बर में परिवर्तन किया गया है। अब श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान व अन्य आश्रमों के टेलीफोन नम्बर्स के पहिले 2 नम्बर जोड़ दिये गये हैं। श्री अमरापुर स्थान के नम्बर्स अब इस प्रकार हो गये हैं। **2372423, 2372424** इसी प्रकार आप सभी आश्रमों के नम्बर्स में 2 पहिले जोड़कर ही टेलीफोन नम्बर्स मिला सकते हैं। सारे देश के नम्बर्स में 2 का अंक पहिले जोड़ा गया है।

कथा भाग — 2

साक्षी दर्शन

छन्दः—

किसी देश के महीपती को, शौक शिकार का रहता था।
रैन दिवस का ध्यान न रहता, भूख प्यास को सहता था।।
इक दिन राजा मन्त्री को ले, खेलन दूर शिकार गया।
खेलत—खेलत प्यास लगी बहु, जिस कारण लाचार भया।।
वहाँ जंगल में पेड़ के नीचे, राजा जाकर बैठ रहा।
पानी कारण प्राण जात हैं, मंत्री को ये वचन कहा।।1।।

कहते हैं किसी देश में एक धर्मात्मा राजा राज्य करता था। उसे शिकार खेलने का इतना शौक था कि जब—जब वह शिकार खेलने जाता था तो सब बातें भूल जाता था। यहां तक कि भूख, प्यास, आराम तो क्या पर दिन—रात भी उसे सूझ नहीं पड़ती थी। वैसे तो राजा सेवकों को लेकर शिकार पर जाया करता था, पर एक दिन दैव योग से केवल प्रधानमंत्री को ही साथ लेकर नगर से बहुत दूर एक घने जंगल में जा निकला। वहां शिकार खेलते—खेलते राजा को थकावट महसूस होने लगी और प्यास भी खूब सताने लगी। मंत्री को अपनी हालत बताकर राजा ने स्वयं भी पानी की तलाश की मगर पानी न मिल सका। अंत में राजा घबराकर मंत्री का सहारा लेकर एक पेड़ के नीचे छाया में बैठ गया। जब घबराहट थोड़ी कम हुई, तब राजा मंत्री को कहने लगा कि पानी के बिना मेरे प्राण सूखे जा रहे हैं। जल्दी से पानी पिलाओ नहीं तो मेरे प्राण निकल जायेंगे। पानी—पानी कहता हुआ राजा अचेत हो गया।।1।।

ऐसे सुन मंत्री ने कहा, राजन धीरज धार।
पानी लेकर आत हूँ, थोड़ी देर मंझार।।2।।

अपने राजा की यह गंभीर स्थिति देखकर जैसे तैसे राजा को सचेत कर मंत्री ने हाथ जोड़कर निवेदन की कि आपका कल्याण हो महाराज। आप चिन्ता न करें हिम्मत से काम लें, मैं अभी जाकर जल्दी पानी ले आता हूँ।।1।।

छन्दः—

राजा की यह दशा देखकर, मंत्री बहु घबरान लगा।
गहन जंगल में इधर—उधर वह, दौड़—धूप बहु करन लगा।।
पानी कारण ऊंचे तरू पर, मंत्री आखिर जाय चढ़ा।
वहीं पास में अनार का एक, सुंदर बगीचा दीख पड़ा।।
जल्दी राव के पास पहुँचकर, सारा हाल सुनाया जी।
जैसे तैसे राव को लेकर, मंत्री बाग में आया जी।।
बाग में आया देख भूप को, माली मनि हर्षाया जी।
नम्र वचन कह आसन देकर, आदर साथ बिठाया जी।।

अपने राजा की यह दयनीय दशा देखकर मंत्री भी घबरा तो गया था फिर भी हिम्मत रखकर घने जंगल में इधर—उधर पानी की तलाश करने लगा। आखिर में कोई चारा न देखकर मंत्री एकदम एक लंबे पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ पर चढ़कर चारों ओर नजर घुमाकर देखा तो उसे बिल्कुल पास में एक अनारों का सुंदर बगीचा दीख पड़ा। बगीचा देखकर मंत्री बहुत प्रसन्न हुआ, बड़ी उतावली से राजा के पास जा पहुँचा। थोड़े में सब समाचार बताकर जैसे तैसे राजा को बाग में ले आया।

अपने राजा और मंत्री के बाग में पधारने का शुभ समाचार पाकर माली दौड़ता हुआ राजा के पास जा पहुँचा। पांव छूकर प्रणाम किया, फिर मधुर एवं नम्र वचनों से राजा का स्वागत सत्कार कर उन्हें सादर अपनी बैठक में ले जाकर आसनों पर बिठाया।।2।।

दोहाः—

माली तब कहने लगा, जोड़े दोनों हाथ।
कहिये क्या सेवा करूं, आज्ञा दीजे नाथ।।3।।

आसन पर विराजमान राजा के सामने हाथ जोड़कर माली कहने लगा, हे नाथ! आज्ञा दीजिये क्या सेवा करूं।।3।।

छन्दः—

ऐसा सुनकर वजीर बोला, पानी जल्दी लाओ जी।
राजा को बहु प्यास लगी है, उसकी प्यास बुझाओ जी।।
माली प्रसन्न होकर भागा, रस अनार ले आया जी।
अपने राव को निज हाथों से, प्रेम के साथ पिलाया जी।।
अमृत सम रस पान करन से, राजा को बहु चैन भया।
माली के हित राजा के मनि, दया भाव कुछ आय गया।।

माली की प्रार्थना सुनकर मंत्री ने आज्ञा दी कि जल्दी पानी ले आओ क्योंकि राजा जी को बहुत प्यास लगी है। पानी पिलाकर उनकी प्यास बुझाओ।

राजा की सेवा का सुअवसर पाकर माली बहुत प्रसन्न हुआ। जल्दी भाग कर अनार रस का एक बड़ा प्याला भरकर ले आया। बड़ी श्रद्धा एवं प्रेम से अपने हाथों से राजा को पिलाने लगा। अमृत समान रस पीते ही राजा की घबराहट, बैचेनी और थकावट सब दूर हो गयी। नया जीवन पाकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। भोले–भाले माली की सेवा, प्रेम और बोलचाल पर राजा को बहुत आनंद आया। माली की गरीबी पर भी राजा को दया आ गयी।।3।।

दोहाः–

लख माली के नेह को, कहन लगे मनि राव
माफ करूँ "कर" गरीब का, उपजा मनि यह भाव।।4।।

माली के हार्दिक प्रेम को देखकर राजा के मन में यह भावना उत्पन्न हुई कि इस गरीब माली की सहायता करनी चाहिये। बागभूमि आदि का कर माफ कर देना चाहिये। साथ–साथ माली की सब मजबूरियों का भी विचार करने लगा।

छन्दः–

माली को कुछ सुविधा नाहीं, दूर जंगल में रहता है।
बिन बिजली बिन मार्ग के वह, भारी संकट सहता है।।
राजा का यह परम धर्म है, सकल प्रजा को सुखी करे।
तन मन धन पुनि वाणी करके, सब जीवों के दुःख हरे।।
यही सोच मनि राजा बोला, माली रस ले आओ जी।
मुझ को फिर भी प्यास लगी है, प्याला और पिलाओ जी।।
आज्ञा पाकर माली जाकर, चार अनार ले आया जी।
राव के आगे चारों पुणिकर, प्याला और पिलाया जी।।4।।

राजा सोचने लगा कि एक तो माली नगर से बहुत दूर जंगल में रहता है। दूसरा वहाँ तक न तो बिजली का प्रबंध है न पक्की सड़क। माली को शहर तक आने जाने में काफी कष्ट होता होगा। प्रजा के बारे में सोच विचार कर राजा फिर राज धर्म का विचार करने लगा कि राजा का यह परम कर्तव्य है कि प्रजा के सभी कष्टों एवं कठिनाईयों को यथा संभव दूर करने का प्रयास करे। तन, मन, धन और वाणी से सब जीवों को सुख पहुँचावे। इस प्रकार सोच विचार कर माली को राजा कहने लगा। माली! मुझे और भी प्यास लगी है, एक प्याला और पिलाओ। आज्ञा पाकर माली चार अनार ले आया और राजा के सामने रस निकाला और प्याले में डालकर राजा को पीने के लिये दिया।।4।।

दोहाः–

राजा ने जब रस पिया, तब मनि करा विचार।
मेरे सम मूरख नहीं, होगा इस संसार।।5।।

अब की बार जब राजा ने रस पिया तो उनके विचार बदल गए। सोचने लगा कि मेरे जैसा मूर्ख संसार में और कोई भी न हुआ है, न होगा।।5।।

छन्दः–

चार अनार के रस से इतना, भर गया बड़ा प्याला जी।
मैंने सब कुछ जान लिया अब, बाग है कीमत वाला जी।।
अब तक मुझको इस माली ने, दिया न कर इक पाई है।
क्यों न "कर" को दूना कर दूं, इसको बहुत कमाई है।।
अब तो मैं इस माली से यह, बाग अनार का ले लूंगा।
नहीं माना तो भय दिखलाकर, थोड़े पैसे दे दूंगा।
निश्चय कर फिर बात बनाकर, माली को धनवाद दिया।
माली मेरे प्राण बचाकर, तुमने बड़ा उपकार किया।।
महा सुंदर यह देख बगीचा, मेरे मनि बहु भाया है।
अनार का रस और पिलाओ, मुझको प्यास सताया है।5।।

क्योंकि बिना सोझे समझे माली को गरीब समझकर उसे सुख सुविधा पहुँचाने का विचार कर रहा था, परन्तु यहां तो बात ही कुछ और है। माली ने अभी मेरे सामने ही चार अनार निचोड़े थे, जिनसे इतना बड़ा प्याला रस से भर गया था। अब तो मैं सब कुछ समझ गया। यह बाग अधिक उपजाऊ और बड़ा कीमती लगता है। माली को इससे बड़ी कमाई होती होगी। राजा माया के चक्कर में आ गया। पराई सम्पत्ति को देखकर प्रायः सबका मन ललचा जाता है। लोभ लालच ही माया के हथियार हैं। आंख, कान, जीभ, नाक एवं चमड़ी के रास्ते से ही यह माया मनुष्य के मन तक पहुंच जाती है। जब मनुष्य माया के फंदे में पूरी तरह से फंस जाता है तब वह अंधा और बहरा हो जाता है। उसे उचित–अनुचित, भला–बुरा, हानि–लाभ, अपना–पराया आदि कुछ भी नहीं सूझता। संत, गुरू, भगवान एवं शास्त्र आदि पूज्य देवी देवताओं की अवहेलना करने में भी नहीं चूकता, इसलिए इस माया को (जिसके हाथों में काम,

क्रोध एवं लोभ जैसे अमोघ अस्त्र हैं) प्रबल एवं दुस्तर बताया गया है। विशेषकर नकली ज्ञानी ही इस माया के चंगुल में फंसते हैं।

वैसे तो राजा धर्मज्ञ एवं न्याय प्रिय था, पर लोभी मन और लालची आंखों ने राजा को धोखा दिया। इसलिए राजा गरीब के सारे बगीचे को अपने कब्जे में लेने के लिए इस प्रकार की योजना बनाने लगा। ''यह माली मेरे राज्य में रहते हुए भी आज तक मेरे दरबार में नहीं आया है, न ही बाग व जमीन का कर दिया है, देखा जाये तो अनारों से माली को काफी कमाई होती है। अब इसको कड़ा दंड देना चाहिए और कर भी दूसरों से दुगना लगाना चाहिए। जिस किसी बहाने से माली को डरा धमका कर थोड़े पैसे देकर सारा बाग ले लेना चाहिए।'' इस प्रकार मन में निश्चय कर बात बनाकर माली को धन्यवाद देते हुए राजा कहने लगा– माली! तुमने मेरे प्राण बचाकर बड़ा उपकार किया है। जन्म भर तुम्हारे एहसान को नहीं भूलूँगा। अनारों से लदे सुन्दर बगीचे और तुम्हारे हार्दिक स्नेह को देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। अनारों का रस अमृत समान लगता है, जी चाहता है कि रस पीता ही रहूँ। एक प्याला और भी पिलाओ। राजा के वचन सुनकर सरल हृदय माली बहुत खुश हुआ।

दोहा:–

आठ अनार निचोड़ कर, डाले प्याले माहिं।
जो रस पहले निकसिया, सो रस निकला मांहि।।

आज्ञा पाकर अनार लेकर माली रस निकालने लगा। एक के बाद एक बराबर आठ अनारों को निचोड़ा फिर भी वह रस नहीं निकला, जो कि थोड़ी देर पहले मात्र चार अनारों में से निकला था।

छन्द:–

अनार रस का देख तमाशा, राजा अति हैरान भया।
माली से तब लगा पूछने, पहला रस वो कहां गया।।
पहले चार अनार के रस से, भर गया प्याला पूरा जी।
अब तो आठ अनार निचोड़े, फिर क्यों रह गया अधूरा जी।।
बोलो माली क्या है कारण, मुझे बड़ा वीचारा है।
तुम्हरे इस बगीचे में या, अनार में इसरारा है।।6।।

राजा का पूरा ध्यान माली की ओर था (जो कि रस निकाल रहा था) माली ने रस निकालकर राजा को पीने के लिए दिया। माली से रस का प्याला लेकर राजा ने पिया तो सही, लेकिन वह स्वाद नहीं आया। यह तमाशा देखकर राजा बड़े आश्चर्य में पड़ गया। माली से पूछने लगा– ''अरे माली! बताओ तो सही, क्या कारण है जो अब की बार आठ अनारों से भी न तो वह रस निकला और न ही वह स्वाद ही आया? क्या तुम बदल गये या अनार बदल गये। या बगीचे, अनारों अथवा तुम्हारे हाथों में कोई जादू है? माली मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। अगर तुम जानते हो तो मुझे सही–सही बताओ, आखिर बात क्या है?''।।6।।

दोहा:–

माली तब कहने लगा, सुनिये भूप सुजान।
जितना मुझको ज्ञान है, उतना करूं बखान।।7।।

राजा के मर्म भरे वचन सुनकर माली हाथ जोड़कर कहने लगा। हे राजन! मैंने जो कुछ समझा है वह अपनी बुद्धि के अनुसार बता रहा हूँ, कृपया सुनिये।।7।।

छन्द:–

भगवत की निज कृपा से अब, जरा समझ में आया है।
राजन तेरे भाव के अंदर, सारा खेल समाया है।।
पहले तेरे मन में राजन, शुभ फुरना को आया था।
जिसने सभी अनारों को भी, बहु रसदार बनाया था।
राजन् तेरे शुभ फुरने ने, बाग को सुंदर सजाया था।
और तो मेरे मनि भी राजन, अद्‌भुत आनंद छाया था।।

अन्नदाता! सच पूछिये तो यह तमाशा देखकर मैं भी अचरज में पड़ गया हूँ। जब आप गरीब के बाग में पधारे थे, उस समय मेरे मन में एक अजीब सी खुशी लहरा गयी (रही) थी। अनारों में भी लबालब रस भर गया था। सब कुछ सुखद सुहावना नजर जा रहा था जो पहले कभी नहीं देखा था। लेकिन अब थोड़ी–सी देर में सब बातें जादू हो गयीं। न जाने कहां चली गयीं। राजन् मैं तो गंवार और मन्द मति हूँ। इस माया को क्या जानूं। फिर भी आपकी आज्ञा को तो नहीं टाल सकता। भगवान की कृपा से जो कुछ थोड़ा बहुत समझ पाया हूँ वह यह है कि जो कुछ तमाशा आपने देखा, वह आपकी भावना का ही खेल है। मेरी समझ में तो आपने शुद्ध मन से कोई शुभ फुरना किया होगा, जिस कारण सारा बगीचा हरा भरा हो गया था। अनारों में भी रस भर गया था,

मेरे मन में भी एक अद्भुत आनंद छा गया था।

दोहाः–

अब तो शायद आपने, बदल दिया है ख्याल।
जां कर रस अनार का, सूखगया तत्काल।।8।।

परन्तु राजन् अब शायद अपने किसी विशेष कारण से अपने ख्याल को बदल दिया हो, जिस कारण इतनी जल्दी अनारों का रस सूख गया।।8।।

छन्दः–

सभी फलों का सूख गया रस, वृक्ष सभी मुरझाये हैं।
नदियाँ नाले सूख गये सब, फूल कमल कुम्हलाये हैं।।
राजन् तुमने खराब फुरने, अपने मन में लायें हैं।
जिन फुरनों ने शांत मंडल में, फेर बदल करवाये हैं।।
फुरने का यह फेरा है सब, दूजा कुछ भी नाहीं हैं।
राजन् अब तुम दिल में देखो, रोका ये किस माहीं हैं।।

माली अपने बगीले की हालत देखकर विकल हो गया ओर दीन वाणी में राजा को कहने लगा– ''हे नाथ! बगीचे की ओर तो जरा देखो अनारों का रस तो सूख गया पर वृक्षों के पत्ते भी झड़ गये। नदी नालों का पानी तक सूख गया। फूल लताएं कुम्हला गयीं। राजन्! आपने अपने मन में न जाने ऐसा कौन सा खराब फुरना (संकल्प) किया है, जिसने नीरव शांत वातावरण को क्षुब्ध कर दिया है, जलवायु को भी दूषित बना दिया है। सारी प्रकृति को ही बदल दिया है। राजन्! ये सब आपके भावों का ही जादू है। मुझे तो ऐसा ही समझ में आ रहा हैऔर कोई कारण मुझे दिखाई नहीं देता। हे नाथ! अब आप अपने में विचार कर देखें तो यह सब गड़बड़ किसमें हैं।?'' इतना कहकर माली डरते हुए हाथ जोड़कर कहने लगा–''राजन्! मैंने जो कुछ कहा है उसके लिए मुझे क्षमा करें। हो सकता है मेरे विचार गलत हों क्योंकि मैं अनाड़ी हूँ, राजाओं के मन की बात क्या जानूं। न जाने आपके मन में किस प्रकार के विचार पैदा हो रहे हैं, जिन्हें मैं ठीक–ठीक नहीं जानता। आप अपने विचारों के साक्षी हो, अब आप कारण बताकर मेरे संशय, शोक एवं भय को दूर करने की कृपा करें। आप हमारे माता–पिता हैं।

दोहाः–

माली के सुन मर्म के, अनुभव वचन रसाल।
सारी बात के भेद को, समझ गए भूपाल।।9।।

यद्यपि माली के वचन कड़वे और दिल में तीरों की तरह चुभने वाले थे फिर भी युक्तियुक्त थे। वैसे प्रिय और मधुर वचन बोलने वाले लोग तो हर जगह आसानी से मिल जाते हैं। परन्तु कड़वे और कल्याणकारी वचन सुनने वाले भी दुर्लभ हैं तो सुनाने वाले भी दुर्लभ हैं।

श्लोकः–सुलभाः पुरुषा राजन्सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्थ, वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।

बुद्धिमान लोग कहते हैं कि जहां कड़वे एवं लाभदायक वचन सुनने एवं सुनाने वाले हों वहां पर सुख सम्पत्ति सदैव बनी रहती है।

श्लोकः–अप्रियस्यापि पथ्यस्थ, परिणामः सुखावहः।
वक्ता श्रोता च यत्रास्ति, रमन्ते तभ सम्पदः।।

वचन तो कड़वे हों पर फल अमृत के समान हों, ऐसे वचन सुनने और सुनाने वाले जहाँ निवास करते हैं, वहाँ सुमति और सम्पत्ति निवास करती है। वास्तव में अपना कल्याण चाहने वाले बहुत थोड़े लोग होते हैं क्यांकि जो वचन हितकर होते हैं, वे आरंभ में जहर के समान कड़वे होते हैं। कड़वे वचनों में ही शाश्वत सुख छिपा रहता है। जो कोई भी कड़े वचनों को सहर्ष सहन करने की क्षमता रखता हो, उसे ही शाश्वत सुख की प्राप्ति हो सकेगी।

श्लोकः– यतदग्रे विषमिव, परिणामेऽमृतोपमम्।
तत्सुखं सात्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धि प्रसादजम्।।

गीता का भी यही उपदेश है कि जो आरंभ में जहर के समान हो और अंत में अमृत के समान हो उसे सच्चा सुख कहते हैं। शास्त्र के रहस्य को न जानने वाले, आत्मश्लाघी (अपने मुख से अपनी प्रशंसा करने वाले) अपनी प्रशंसा में प्रसन्न और अपनी निंदा में अप्रसन्न होने वाले, अपनी कला, विद्या, बुद्धि, शक्ति, सम्पत्ति और बड़प्पन आदि का घमंड करने वाले लोग प्रायः कड़वे वचन (जिनका फल अमृत समान होता है) सहन नहीं करते क्योंकि कड़वे वचनों के आरंभ में जहर लगा रहता है, ऐसा कौन होगा जो आंखों देखा जहर पीयेगा। ऐसे वचन सुनकर लोग या तो सुनी अनसुनी कर देते हैं या लड़ने को तैयार हो जाते हैं। इसलिये शाश्वत सुख को प्राप्त नहीं कर सकते।

यद्यपि राजा लोभ के वश में हो गया था, फिर

भी धर्मज्ञ एवं न्यायप्रिय राजा ने माली के वचनों को जो कि मीठे एवं मर्म भरे थे, धैर्य ओर ध्यान से सुना। सारी बात को समझा तथा मन ही मन अपनी भूल का अनुभव कर राजा पश्चाताप करने लगा।।9।।

छन्दः–

माली को तब कहा भूप ने, ना कुछ गलती तेरी है।
माली तुमने साच बताया, सारी गलती मेरी है।।
बाग भूमि का टैक्स सारा, माफ तुम्हें कर देता हूँ।
जल्दी कोरा कागज लाओ, अपनी सही कर देता हूँ।।
जिसने जाना उसी देव को, कहे टेऊँ जा पाऊँगा।
दर्शन कर उस परमदेव का, जीवन सफल बनाऊँगा।।

भूल को स्वीकार करना, उसके दण्ड को भुगतना तथा फिर से भूल न करना भूल के प्रायः तीन अंग बताये गये हैं। उपरोक्त तीनों अंगों का पालन करना अत्यन्त कठिन कार्य है। साधारणतया तो ऐसा देखा गया है कि कुछ लोग तो अपनी भूल कभी स्वीकार ही नहीं करते, उल्टा गलती बतलाने वालों के जानी दुश्मन बन जाते हैं। कुछ लोग अपनी गलती स्वयं स्वीकार न कर दूसरों के माथे मढ़ देते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो बार–बार गलती करते रहने पर भी अपने को सत्यवादी एवं बुद्धिमान समझते हैं। जब साधारण से साधारण लोग भी अपनी गलती स्वीकार करने को तैयार नहीं होते तो राजाओं–महाराजाओं का तो कहना ही क्या है क्योंकि वे सब कुछ करने में समर्थ होते हैं। अगर राजा चाहता तो माली से सब कुछ छीनकर उसे देश से बाहर निकाल सकता था, परन्तु राजा धर्मज्ञ तो था ही, जड़ प्रकृति ने भी प्रत्यक्ष दर्शन देकर उसे अपनी भूल का अनुभव कराया था। साक्षी ने उसे सावधान कर दिया था। इसलिये अपनी भूल समझकर माली को अभयदान देते हुए राजा ने कहा–

"माली! अब डरने या घबराने की जरूरत नहीं है। तुम सर्वथा निर्दोष हो। सब गलतीं मेरी है। तुम्हारा एक–एक वचन सत्य धर्म से भरा हुआ है। इसमें कोई संदेह नहीं है। मैंने जब तुम्हारे वचनों का विचार किया तो अपने को ही दोषी पाया। सचमुच नीच स्वार्थ के वश होकर मेरे भाव बदल गए थे, तुम्हारा सारा बगीचा मैं अन्याय से हड़प करना चाहता था। अब तुम अपने मन से भय, शोक और संशय निकाल दो और जल्दी से एक कोरा कागज ले आओ तो मैं अपने हस्ताक्षर कर तुम्हें सदा के लिए भूमि बाग आदि के कर से मुक्त कर दूँ।"

आज्ञा पाकर माली कागज ले आया। कागज लेकर राजा ने ज्यों ही शुद्ध मन एवं शुद्ध भाव से हस्ताक्षर किये, त्यों ही माली के जीवन में फिर से वही बहार आ गयी। राजा के मन में भी एक अजीब सी खुशी लहराने लगी। उमंग में भरकर राजा ने कहा–

"माली! आपने मेरी आँखें खोल दीं, मैं तो मोह की नींद में सो रहा था। अब जिस देव ने इस रहस्य को जाना और स्वीकार किया है, उसका दर्शन कर अपना जीवन सफल बनाऊँगा।।

दोहाः–

ऐसे कह राजा गया, अपने राज मंझार।
कह टेऊँ अब ध्यान से, सुनो कथा सार।।10।।

माली से ऐसा कहकर राजा, मंत्री सहित अपने नगर को चला गया। तपस्या कर उस परम देव का दर्शन कर राजा परम पद को प्राप्त हो गया।।10।।

दोहाः–

साक्षी का प्रकाश है, तीन लोक के माहिं।
पाप कर्म बद भावना, भूल करो कब नाहिं।।11।।

उपरोक्त कथा का सार तत्व समझाते हुए स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहते हैं कि तीनों लोक साक्षी के प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं, परन्तु जिस पर गुरू की कृपा होती है उसे ही साक्षी का दर्शन होता है। गुरू कृपा किसको कहते हैं? कैसे होती है और किस पर होती है? इन सब प्रश्नों के ठीक–ठीक उत्तर इतिहास और पुराण ही दे सकते हैं। सच्चे हृदय से गलती को स्वीकार करना ही साक्षी का दर्शन कहलाता है। छल कपट या बल प्रयोग से अपनी गलतियों को छिपाना नहीं चाहिये। आज नहीं तो कल गलती प्रकट हो ही जायेगी, फिर शर्मिन्दा होना पड़ेगा।

प्रेषक–श्री सत्गुरू कृपा, जयपुर
रचयिता सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
(साक्षी दर्शन पुस्तक से उद्धृत)

समीक्षा

अमरापुर दर्शन

(व्ही.सी.डी. कैसेट) वीडियो सी.डी.

"आचार्य श्री" की पावन तपोस्थली श्री अमरापुर स्थान जिसके दर्शन मात्र से संतप्त हृदय को आत्म सुख व परम शांति की प्राप्ति होती है।

इस पावन भूमि पर अनेक संत महापुरूषों के श्री चरण पग धरे हैं। उनकी पावन रज के प्रताप से चहुँ ओर भक्तिमय आभा प्रकाशित हो रही है। ऐसी दिव्य अलौकिक आभा की पुण्य स्थली है श्री अमरापुर स्थान।

इस महान तीर्थस्थल की एक वी.सी.डी. कैसेट तैयार की गई है जिसमें मुख्य द्वार से लेकर गर्भ गृह तक सभी स्थलों को दर्शाया गया है। साथ ही साथ इस स्थल की पृष्ठ भूमि के बारे में अवगत कराया गया है। दैनिक सत्संग आरती आदि को भी बड़े सुन्दर रूप में दिखाया गया है। इस कैसेट को श्री श्याम मनवानी व मुकेश कुमार जी ने बड़े सुंदर ढंग से शूटिंग कर तैयार करवाया है। आप घर बैठे ही कैसेट के माध्यम से इस पुण्य तीर्थ स्थल के दर्शन कर सकते हैं। यह कैसेट आप सभी धर्मानुयायियों के लिए संग्रहणीय है। कैसेट का **मूल्य मात्र 100 रू.** रखा गया है।

प्राप्ति स्थलः– श्री अमरापुर स्थान, जयपुर इसके अतिरिक्त सभी प्रमुख आश्रमों पर उपलब्ध है।

पुस्तक समीक्षा

गुरु वन्दना

(स्वामी सर्वानंद महिमा भजन)

108 पूर्णांक अंकों को विशेष महत्व देते हुये आचार्य श्री जी के परम शिष्य स्वामी सर्वानंद जी महाराज के महिमा संबंधित 108 भजनों का संकलन कर **"गुरू वन्दना"** नामक पुस्तक प्रकाशित की गई है।

इस पुस्तक में प्रार्थना–सद्‌गुरू सर्वानंदाष्टकम्–चालीसा 108 भजन आरतियाँ आदि सम्मिलित की गई हैं।

हरिद्वार में महाराज श्री के पावन जन्मोत्सव पर भव्य सत्संग सभागार में "पूज्य श्री" के कर कमलों द्वारा इस "गुरू वन्दना" पुस्तक का विमोचन किया गया। पुस्तक का मूल्य मात्र 10 रू. रखा गया है।

इससे पूर्व "आचार्य सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज" की महिमा संबंधी भजन **"गुरू आराधना"** नामक पुस्तक प्रकाशित की गई थी जो कि अत्यधिक मांग के कारण शीघ्र समाप्त हो गई। अब पुनः द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है। इस पुस्तक को अंग्रेजी, हिंदी, सिंधी में प्रकाशित किया गया है। प्रत्येक भाषा की **पुस्तक का मूल्य 10 रू.** रखा गया है।

प्राप्ति स्थलः–श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर – 1 (राज) फोन– 0141–2342423, 2372424

सभी प्रमुख आश्रमों पर भी उपलब्ध है।

महिमा भजन पुस्तक का प्रकाशन

बड़ौदा– 15 अक्टूबर 2002:– सत्‌गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज के 106 वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर श्री प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा के भव्य सत्संग सभागार में हजारों प्रेमियों की उपस्थिति में स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के पावन कर कमलों द्वारा बहु प्रतीक्षित **सद्‌गुरू टेऊँराम महिमा भजन** पुस्तक के प्रथम भाग का विमोचन संपन्न हुआ।

अत्यंत मनमोहक व स्वर्ण अक्षरों से सुसज्जित इस पुस्तक में 258 भजन सतगुरू टेऊँराम महिमा के हैं एवं 64 भजन सतगुरू सर्वानंद महिमा के हैं। विभिन्न कवियों, गुणीजनों, संतों व कलाकारों द्वारा रचित यह भजन गुरु महाराज के धवल यश को प्रदर्शित करते हैं। इन भजनों का संकलन पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी ने स्वयं किया है। हिन्दी–सिन्धी भजनों के इस अपूर्व संग्रह में कुल 258+64=322 भजन हैं। यह पुस्तक समस्त आश्रमों के बुक स्टालों पर उपलब्ध है।

पुस्तक का नामः– महिमा भजन – प्रथम भाग मूल्यः– 25 रू. मात्र, समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों पर उपलब्ध

प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का ब्यावर, पलवल, हथीन, पिनगंवा में भव्य स्वागत

ब्यावर में द्वितीय विराट सत्संग समागम, पलवल में माता चतुरीबाई वार्षिकोत्सव

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय व सनातन धर्म का प्रचार प्रसार करने एवं जीवों के उद्धार हेतु माह जून से सितम्बर 2002 तक पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक (अमेरिका, स्पेन, दुबई आदि देशों में) अपनी अमृतरूपी सत्संग वाणी की बरखा कराते हुए अपनी तपोभूमि भारत देश में पधारे, प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के मण्डलाध्यक्ष पूज्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व उनके साथ पधारे संत मण्डली संत दयाप्रकाश , संत नामदेव (हांगकांग), संत नरेश प्रेम प्रकाशी, संत परसराम प्रेम प्रकाशी, संत हरीश प्रेम प्रकाशी, संत संजय प्रेम प्रकाशी, संत झामनदास (भीलवाड़ा) संत जयमुक्त (खैरथल), भगत मूलचन्द, कवि वीरभान आदि संत मंडली के प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर में द्वितीय विराट सतसंग समागम महोत्सव दिनांक 2 अक्टूबर 2002 को पधारने पर ब्यावर आश्रम के ट्रस्टी एवं कार्यकर्ता श्री सुन्दरदास डेटानी, नानकराम, हरी हेमलानी, उद्धवदास जी, नानकराम व नारायणदास रतनानी (ट्रस्टी आदर्शनगर आश्रम अजमेर) एवं ब्यावर, अजमेर, जोधपुर, पाली, सुमेरपुर शहरों से पधारे हजारों प्रेमियों द्वारा फूलों की बरखा कर सद्गुरु महाराज का स्वागत कर दर्शनों का लाभ प्राप्त किया।

दिनांक 2 अक्टूबर को सद्गुरु महाराज के स्वागत में ब्यावर शहर के भगत चौराहे पर प्रातः 10 बजे से ब्यावर, अजमेर, पाली, सुमेरपुर से पधारे हजारों प्रेमियों ने सद्गुरु महाराज के स्वागत में फूलमालाऐं, फूल व कुछ माताओं ने कलश लेकर प्रतीक्षा की, दोपहर 12 बजे तक भगत चौराहे ब्यावर पर एक विशाल जनसैलाब सद्गुरु महाराज के दर्शनों हेतु एकत्रित हो गया। ब्यावर शहर के मुख्य रास्तों को वहां के प्रेमियों एवं स्थानीय निवासियों (खेतावात, माहेश्वरी, अग्रवाल आदि) ने बहुत ही सुन्दर तरीके से स्वागत द्वार बनाकर फूलों की बरखा कर स्वागत किया।

सद्गुरु महाराज निश्चित समय पर 12 बजे दोपहर को अपनी संत मण्डली के साथ पधारे। भगत चौराहे ब्यावर से सद्गुरु महाराज को एक सजे रथ पर आसीन कराकर एवं पीछे अन्य संतों को कारों में बैठाकर आगे पीछें हजारों प्रेमियों के साथ जुलूस ब्यावर शहर के प्रमुख स्थानों से गुजरते हुए निकला। तीव्र गरमी के बाबजूद भी ब्यावर के निवासियों द्वारा सद्गुरु महाराज व संत मंडली का बड़े ही उमंग एवं जोश के साथ फूलों की बरखा कर, सद्गुरु महाराज टेऊंराम जी महाराज की जयघोष के साथ स्वागत किया एवं दर्शन प्राप्त किया।

ठीक 2 बजे दोपहर सद्गुरु महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर पहुंचे।

दिनांक 2 अक्टूबर को सायंकालीन एवं दिनांक 3 से 5 अक्टूबर तक सदगरु महाराज एवं उनके साथ पधारे संतमंडली ने अपनी मधुर अमृतमय सत्संग वाणी से ब्यावर शहर में सत्संग रूपी गंगा का प्रवाह कर प्रेमियों को लाभान्वित किया। इस अवधि में सद्गुरु महाराज व संत मंडली ने प्रेम प्रकाश आश्रम (दादी सती, दादी रूकमणी) के यहां ब्यावर व एशिया की प्रथम सीमेन्ट फैक्ट्री में निवास कर रहे प्रेमियों के निवेदन पर उन्हें सतसंग दर्शन का लाभ दिया।

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व उनकी संत मंडली के अमृत गंगा रूपी संतवाणी से हजारों प्रेमी मंत्रमुग्ध व तन्मय होकर बैठकर

सत्संग श्रवण करते थे। सद्गुरु महाराज जी स्वामी टेऊंराम जी महाराज की महिमा का वर्णन कर समझाया कि–

भजन–सद्गुरु साहब संत मिलाया.........2

जागया भाग हमारा संत मिलाया 2

सद्गुरु साहब संत मिलाया..........

स्वामी जी ने बतलाया कि जब हमें संतों का संग शरण मिलती है हम बड़े भाग्यशाली होते हैं। हमें ऐसा नहीं मानना चाहिये कि हमारे पास दुनिया की सारी भौतिक वस्तुऐं धन दौलत ऐश्वर्य प्राप्त है तो हम भाग्यशाली हैं–जो गलत है। जिस व्यक्ति को संतों का संग प्राप्त है वही भाग्यशाली कहलाता है। क्योंकि संतों के संग शरण से ईश्वर की प्राप्ति होती हे। धन पदार्थ तो आसानी से प्राप्त होता है परंतु संतों का संग शरण कठिनाई से प्राप्त होता है। हम ईश्वर के अंश हैं फिर भी हम दुखी हैं क्योंकि हमने माया ममता का संग पकड़ रखा है। यदि हमें सुख, शान्ति व ईश्वर की प्राप्ति करनी है तो हमें संतों के संग शरण में जाना चाहिये। सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने बचपन से ही दुनिया के समस्त भौतिक सुखों को त्याग कर जंगलों शमशानों में तपस्या कर सत्य सुख प्राप्ति की खोज कर उसे हमें सौलह शिक्षाओं के ज्ञान रूप भंडार में प्रदान करगये हैं। सद्गुरु महाराज ने हमें सौलह शिक्षाओं में बतलाया है कि सारे दुख, झगड़े फसाद की समाप्ति व सुख की प्राप्ति चुप रहने का नाम मंत्र का जाप करने पर समाप्त हो जाती है एवं जिसका व्यवहार आम है उसी का ही परमार्थ होता है। सद्गुरु महाराज ने आगे बतलाया है कि जीव अपने आप बन्धन में फंसता है और गुरु के वचनों पर अमल करने पर उन बन्धनों से मुक्त होता है। अन्त समय में धन सम्पति साथ नहीं जाती है साथ जायेगा केवल हरि का नाम। इसलिये हमें सारे संसार के भौतिक व्यवहारों का त्याग कर गुरु का संग शरण कर उनके द्वारा दिये गये नाम मंत्र का सुमरण कर प्रभु परमात्मा को प्राप्त करना चाहिये। "राम नाम बिन को ना तुहिंजो, प्रेमी राम नाम न विसार तूं।"

आगे स्वामी जी ने अपनी अमृत रूपी वाणी में समझाया है कि–

दोहा– सद्गुरु के सत शब्द का करले निशदिन जाप।
कहे टेऊँ तिस जप से मिटे सकल संताप।।

दोहा– कहे टेऊं संसार में बात यही है सार।
भजन करो भगवान का छोड़ो विषय विकार।।

दोहा– पहले अपने आप पर करे कृपा जन जोय।
कहे टेऊं तिस मनुष पर सबकी कृपा होय।।

दोहा– संत राम में भेद नहीं संत राम स्वरूप।
कहे टेऊं रट राम को भये राम के रूप।।

दोहा– चाह नहीं चिंता नहीं–मनवा बेपरवाह।
जिसको कुछ नहीं चाहिये–वो शाहन के शाह।।

स्वामी जी ने आगे बतलाया है कि हमें संत राम में भेद नहीं समझना चाहिये जिन्होंने भी दोनों के स्वरूप को एक समझा है उसका कल्याण होकर ईश्वर की प्राप्ति हुई है क्योंकि संतों की शरण में आने से हमें ईश्वर की प्राप्ति होती है संतों ने ईश्वर प्राप्ति के लिये हमें प्रतिदिन मंत्र नाम का जाप करने का मार्ग बतलाया है। जिसने भी संसार की समस्त व्यवहारिक बातों का त्याग कर दिया है और नाम मंत्र का जाप किया है उसने ही ईश्वर की प्राप्ति की है। इसलिये हमें प्रतिदिन गुरुमंत्र का जाप करना चाहिये।

अन्तरा–रहे समुद्र में सिपी निमाणी
बादल ज्यो पर पीए थी पाणी
तीए जग खे अन्दर धार तू

2. तन दे जग जे व्यवहार खे
मन दे गुरुअ जे विचारनि खे
ईहे बेई लोक संवार तूं

भजन–नाम हरि का भुला न देना जीवन अपना रूला न देना।

अन्तरा–मानुष चोला दुर्लभ पाया राम भजन बिन वृथा जाया
ऐसा वेला हाथ न आवे क्यों तुम मूर्ख पाप कमावे
पाप करे तू गंवा न देना।

भजन– मात गर्भ में कोलु कयो तो भजन करण जो ईश्वर सां
बाहिर निकरी रस में रीझी पहिंजा फर्ज भुलाया तो

सद्गुरु महाराज ने हमें समझाया है कि जब जीव माता के गर्भ में था तो उसने कुंभी नरक से बाहर आने के लिए प्रभु परमात्मा को वचन दिया, कि प्रभु परमात्मा आप मुझे इस कुंभी नरक से बाहर निकालो तो मैं आपका भजन करूंगा परन्तु हे जीव तू इस कुंभी नरक से बाहर आने पर संसार के भौतिक सुखों की प्राप्ति में प्रभु परमात्मा का भजन करना भूल गया है। यह मनुष्य का चोला जो तुमने पाया है वह राम भजन बिना सदा व्यर्थ है इसलिये अभी भी जाग और प्रभु परमात्मा का सुमरन कर। यह जो मानुष जन्म पाया है इसमें अपना तन संसार की वृति में लगाओ अर्थात् संसार में भले हो और अपने फर्ज पूरे करो परन्तु अपना मन गुरु द्वारा दिये गये अमोलक वचन मंत्र में लगाकर दोनों लोकों में विजय प्राप्त करना, जैसे एक सिपी समुद्र में रहती है परन्तु वह समुद्र का पानी नहीं पीकर बादलों का पानी पीती है।

भजन–सिक सां शरनि पिया जे तुहिंजे तिनजा दर्द मिटाईं
पंजई जिनजे पांद आहिनि रग रग तिनजी रचाईं
संभिरी आया जे सागर ते तिनखों पार पुजाईं
टेऊं दुबी दियनि जे सागर में, तिनखे लाल लभाईं।

स्वामी जी ने आगे अमृतवाणी में हमें समझाया कि जिस प्रार्थना में अटल विश्वास, श्रद्धा, प्रेम सरलता से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं।

दृष्टांत–एक बार जब बालक प्रहलाद घूमते–घूमते एक कुम्हार के घर के बारह आकर खड़े हुए जहां कच्चे मटके आग में पक रहे थे और कुम्हारिन बैठक में राम–राम नाम का जाप कर रही थी। तो बालक प्रहलाद ने पूछा कि मेरे पिता के देश में राम नाम जाप की मनाही है तुम्हें मेरे पिता का नाम जाप करना चाहिये क्योंकि वह भगवान है। कुम्हारिन ने कहा कि जब कच्चे घडे को उठाते समय बिल्ली ने उनमें बच्चों को जन्म दिया था। परन्तु हम घड़े आग में पकाते समय उन बच्चों को निकालना भूल गये थे इसलिये मैं प्रभु परमात्मा राम का विश्वास श्रद्धा से सुमरन कर प्रार्थना कर रही हूं कि बिल्ली के बच्चों को आग से बचा देना सो अवश्य बचा लेंगे। आपका पिता भगवान नहीं है केवल राम ही भगवान है। बालक प्रहलाद ठीक सातवें दिन जब मटके आग में पककर ठंडे हुए बिल्ली के बच्चों को देखने के लिये कुम्हार के घर आये जब उसने देखा कि बिल्ली के बच्चे जीवित हैं तब उसे प्रभु परमात्मा में अटल विश्वास एवं श्रद्धा जागृत हुई तभी उसे ज्ञात हुआ कि ईश्वर ही प्रभु परमात्मा है जिसके नाम जपने से असम्भव से सम्भव कर्म भी हो जाते हैं। मेरे पिता कोई भगवान नही हैं। इसलिये हमें प्रभु परमात्मा से प्रार्थना अटल विश्वास रखते हुए श्रद्धा प्रेम व सरलता भाव से करनी चाहिये ताकि असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं।

दोहा– धन यौवन उड़ जायेंगे जैसे उड़त कपूर।
नारायण गोविन्द भज क्यों जग चाटे धूल।

भजन–रे मन मेरा भटकत काहीं जो सुख चाहत सो तुझ मांहि
मृग की नाभि है कस्तूरी अपने से वह जानत दूरी
देखत बन–बन मिलत न काहि

भजन–कूड़ कपट ऐं कुविद्या सां थो मूर्ख माया जोड़ी
सत्गुरु संतनि ईश्वर खां तूं छोथो मुंहड़ो मोड़ी
हले साणु न पैसो अधेलो

भजन–भांग तम्बाकू सुरा पान और जात प्रभात
नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात
लग्न लगी जब राम से लोकन से क्याकाम
टेऊं मोहि न भावही खान पान आराम।

अन्त में स्वामी जी ने हमें सद्गुरु टेऊंराम महाराज द्वरा दिये गये उपदेशों द्वारा अपनी अमृत रूपी वाणी से समझाया कि हमें संसार के सारे भौतिक सुखों को त्याग कर गुरु की शरण में जाकर प्रभु परमात्मा का सुमरन करना चाहिये, क्यों कि अन्त में हमारे साथ धन नश्वर शरीर साथ नहीं जाता है, केवल प्रभु परमात्मा का नाम ही साथ जाता है। हमें सारे झूठ,

कुविद्या, झूठी माया को छोड़कर प्रभु परमात्मा का सुमरन करना चाहिये हमें प्रभु परमात्मा को प्राप्त करने के लिये इधर–उधर नहीं भटकना चाहिये, जैसे अकेला लोहा पानी में डुबोऐंगे तो वह डूब जायेगा यदि उसके साथ लकड़ी लगा देंगे तो वह पानी में तैरने लग जायेगा, उसी तरह हमें संतों का संग करके इस भवसागर से पार पहुंचना चाहिये। भांग सुपारी के सेवन से उसके नशे का प्रभाव कुछ समय के लिये होता है परन्तु हमको गुरु के नाम मंत्र का नशा हो जाता है तो उसका प्रभाव हमेशा–हमेशा के लिये रहता है और हम गुरु मंत्र का रात दिन जाप कर प्रभु परमात्मा की प्राप्ति करते हैं अतः हमें संसार के समस्त भौतिक व्यवहारों को त्याग कर गुरु की शरण में जाकर उनके द्वारा दिये गये वचनों पर अमल करें नाम मंत्र का रात दिन जाप करके प्रभु परमात्मा की प्राप्ति कर भवसागर से पार होना चाहिये।

सत्गुरु महाराज ने दिनांक 5–10–02 को प्रातः हवन की पूर्णाहूति कर सद्गुरु महाराज श्री टेऊंराम महाराज के झंडे की रस्म पूर्ण कर रात्री को पल्लव पाकर सत्संग यज्ञ की समाप्ति कर उपस्थित हजारों प्रेमियों के मन हृदय में ज्ञान की सत्संग बरखा की अमिट व अविस्मरणीय छाप छोड़कर दर्शनों से लाभान्वित कर संत मण्डली के साथ जयपुर के लिये प्रस्थान किया।

–मोहन शिवनानी, अजमेर से

पलवल में माता चतुरीबाई का वर्सी उत्सव

दिनांक 22 अक्टूबर हरिद्वार मेले की समाप्ति के पश्चात पूज्य स्वामी जी संत मण्डली एवं प्रेमीयों सहित हरिद्वार से प्रातः 8 बजे श्री अमरापुर स्थान की बस द्वारा रवाना हुये।

सांय 5 बजे पलवल पहुंचने पर बड़ी संख्या में प्रेमियों ने शोभायात्रा निकालकर, पुष्प वर्षा द्वारा पूज्य स्वामी जी का भव्य स्वागत किया।

प्रेम प्रकाश आश्रम पलवल में मनाई जा रही **माता चतुरीबाई के वर्सी उपलक्ष्य** में दिनांक 22 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक प्रतिदिन सत्संग का कार्यक्रम रात्रि 8 से 10 बजे तक रखा गया।

दिनांक 22–10–02 को सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने आशीर्वाद के दो अनमोल वचन कहकर मेले का शुभारम्भ किया।

प्रातः 23 अक्टूबर हवन का आयोजन था जिसमें सत्गुरु महाराज सन्तों एवं प्रेमियों द्वारा मन्त्रोच्चारण कर हवन में आहूतियाँ दी गयीं। उसके पश्चात् ध्वजारोहण किया गया, तत्पश्चात आम भण्डारे का आयोजन हुआ।

दिनांक 24 अक्टूबर को सांयकालीन सत्संग में सन्त–महात्माओं ने एवं सत्गुरु महाराज ने सत्संग रूपी अमृत वचनों का प्रेमियों को रसास्वादन कराया।

25 तारीख को प्रातःकालीन सत्संग एवं माता चतुरीबाई के वर्सी उत्सव के उपलक्ष्य मं रखे गये पाठों का पारायण किया गया।

दिनांक 25 अक्टूबर रात्रि सत्संग में सन्तों ने भजन व प्रवचन किये तदोपरान्त पूज्य स्वामी जी ने बताया कि–

भजन–सत्गुरु टेऊँराम मेरे मुझ पर कृपा करना।
भूले ना नाम तेरा बस इतनी दया करना।।
1. **जिसे दुनिया ठुकराये, उसे तुम अपनाते हो**
मंझधार में जग छोड़े, तुम साथ निभाते हो
इस निर्बल बालक के तुम साथ सदा रहना

अमृतमय वचनों में समझाया कि गुरु कृपा बिना परमात्मा की प्राप्ती करना बहुत कठिन कार्य है, क्योंकि यह मन बड़ा ही चंचल है, गुरु की कृपा से ही मन की चंचलता मिटती है। जैसे ही मन की चंचलता मिटी, मन स्थिर हो जाता है। स्थिर मन से ही परमात्मा की भक्ति करना संभव होता है इसलिये गुरु का इतना अधिक महत्व बताया गया है क्योंकि सत्गुरु ऐसा दान देते हैं, जो दुनिया में कहीं और से प्राप्त नहीं और सत्गुरु का अपना कोई स्वार्थ नहीं, क्योंकि परमात्मा की प्राप्ति के बदले गुरु को कुछ नहीं दिया जा सकता, परमात्मा से बढ़कर कुछ और

नहीं कबीरदास जी ने कहा–

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पांऐ

बलिहारी गुरुदेव पर, जिन गोविन्द दियो बताए

उन महापुरुषों की कृपा अनिवर्चनीय है उन्हीं की कृपा से माता चतुरीबाई ने परमात्मा से आत्मसाक्षात्कार किया। इसलिये आज उनका वर्सी उत्सव मनाया जा रहा है।

होडल–पुन्हाना में सत्संग

दिनांक 26 अक्टूबर प्रातः 8 बजे सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज संत मण्डली सहित सड़क मार्ग द्वारा होडल और पुन्हाना में सत्संग की ज्ञानगंगा बहाकर एवं प्रेमियों को आशीर्वाद देकर पिनगंवा की और प्रस्थान किया।

दिनांक 26 अक्टूबर रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक प्रेमियों ने सत्संग समागम का लाभ लिया।

फिरोजपुर, माण्डी खेड़ा में सत्संग दर्शन

27 अक्टूबर प्रातः 8 बजे सत्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डली समेत फिरोजपुर और माण्डीखेड़ा में प्रेमियों को सत्संग रूपी सरोवर में ज्ञान की डुबकी लगवाई। सत्संग कार्यक्रम सम्पन्न करने के पश्चात पिनगंवा की और प्रस्थान हुआ।

27 अक्टूबर रात्रि के प्रवचनों में सत्गुरु महाराज ने बताया कि परमात्मा ने दो प्रकार के मार्ग बनाये

1. प्रेय मार्ग 2. श्रेय मार्ग

प्रेय मार्ग–जो मार्ग परमात्मा की और तो नहीं जाता पर देखने में बड़ा सुखद, सुन्दर प्रतीत होता है परन्तु जिसका परिणाम दुखद होता है।

श्रेय मार्ग–जिस मार्ग में आरम्भ में कठिनाईयाँ आती हैं। जो दिखने में बड़ा ही दुष्कर प्रतीत होता है, परंतु जिसकी मंजिल परमात्मा तक पहुंचती है, उसे श्रेय मार्ग कहा गया है। आगे बताया कि हम भी उन महापुरुषों के चरण चिन्हों पर भी श्रेय मार्ग का अनुसरण कर परमात्मा की प्राप्ति करें। इतना बताकार गुरु महाराज जी ने पल्लव पाकर सत्संग वेला की समाप्ति की। **–हरीश प्रेमप्रकाशी, (जयपुर) यात्रा से**

हथीन में सत्संग गंगा

28 अक्टूबर 2002 को प्रातःकाल स्वामी जी ने पिनगंवा से 8 बजे हथीन के लिये प्रस्थान किया। प्रातःकाल चिड़ियां चूं–चूं करके गीत गा रही थीं इससे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सांई जी के आने की खुशी में चहचहा रही हों। सभी प्रेमी दरबार के मुख्य द्वार पर पुष्पों की सुगन्धित मालाऐं हाथों में लिये तथा पलकें बिछाए स्वामी जी के आने की बाट निहार रहे थे। प्रतीक्षित घड़ियां पूरी हुईं। उन प्रेमियों को दर्शन देने के लिये गुरुदेव पधारे। सभी प्रेमियों ने (डॉ. धनपतराय तनेजा, श्री गिरधारीलाल, श्रीनाथ बत्रा) आदि ने स्वामी जी का भव्य स्वागत किया। स्वामी जी को पष्पों की मालाऐं पहनाईं। स्वामी जी के आने की खुशी में बच्चा–बच्चा खुशी से झूम उठा। आज प्रातः यहाँ हवन–ध्वजारोहण का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास से किया गया। हवन–ध्वजारोहण के समय भगत मूलचंद जी ने "हम गीत सनातन गायेंगे–नित झंडा धर्म झुलायेंगे" और "स्वामी टेऊँराम तुहिंजो झंडो झूले" का गायन बड़े ही प्रेम से किया। तत्पश्चात आरती की गयी और स्वामी जी ने पल्लव पाया। तत्पश्चात सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द पब्लिक स्कूल हथीन के बच्चों ने स्वामी जी के समक्ष कुछ भजन प्रस्तुत किये। स्वामी जी ने खुश होकर बच्चों को खर्ची व फुलझड़ियां बांटी। इसके बाद भण्डारे का आयोजन किया गया।

29 अक्टूबर 2002 सांयकाल 6 बजे से 6:30 बजे तक आरतियों का गायन हुआ और 6:30 से 7:00 बजे तक हथीन के युवक मंडल ने कुछ भजनों को प्रस्तुत किया। 7:00 से 7:30 बजे तक संत हरीश तथा स्वामी दयाप्रकाश जी ने सत्संग किया और अन्त में सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के सत्‌संग रूपी सुमन से सबके चेहरे आलोकित हो उठे।

भजन–मैं मूढ अज्ञानी हूँ प्रभु दास तुम्हारा।

तुम सर्व कला समर्थ गुरुदेव हमारा,

दुःख दर्द सर्व टारो–सर्व टारो–सर्व टारो,

अपना ही दास जान हमें पार उतारो।।

सत्गुरु न विसारो– न विसारो–न विसारो।।

अपनी अमृतवाणी में सत्गुरु के आगे प्रार्थना करते हुए पूज्य गुरु महाराज जी कह रहे हैं। कि हमें दुनियां भले ही कितना भी क्यों न सताए या धिक्कारे पर सांई आप हमें नहीं भूलना। मुझे अपना अज्ञानी बालक समझ कर मेरे सभी दुःख दूर करना।

"संसार नदी के दो तट हैं, इक मोक्ष दूजा बंधन है।" संसार रूपी नदी के दो किनारे हैं एक किनारा मोक्ष की तरफ है तथा दूसरा किनारा बंधन की तरफ है। जिस किनारे पर हमें दुःख दिखलाई देते हैं–कांटे दिखाई देते हैं उन दुःखों मुश्किलों तथा कठिनाईयों का सामना करने के पश्चात् हमें सुख प्राप्त होता है। हमें भी किसी दूसरे की बजाय अपने मन के साथ लड़ाई करनी है। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को बहुत शिक्षाऐं दीं। बाहर का युद्ध भी तुम्हें लड़ना है चाहे हार हो चाहे जीत।

श्लोक–कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनं।

मन के साथ संघर्ष करके जो स्वराज्य तुम्हें प्राप्त होगा वह बहुत ही सुख वाला होगा। बाहर का राज्य तो क्षणभंगुर है।

दोहा– ईश्वर अंश जीव अविनाशी चेतन अमल सहज सुखराशी।।

मन से रहित–दुःखों से रहित, परमात्मा ने तुम्हें स्वरूप प्रदान किया है। संसार से मन को लगाया तो दुःख की प्राप्ति हुई, संसार से हटाकर यदि हम अपने मन को ईश्वर की तरफ ईश्वर के ध्यान में लगायेंगे तो सुख की प्राप्ति भी आसानी से हो जायेगी।

भजन–जीवन तो अमोलक है। इसे व्यर्थ न गंवाना तुम–2

स्वांसों की मिली पूंजी–2 इसे न मुफ्त लुटाना तुम–2

हमें अपने स्वांसो की कीमत को पहचानना चाहिये इन्हें यूंही व्यर्थ में नहीं गंवाना चाहिए। इन्हें ईश्वर के सुमिरन, ध्यान व चिंतन में लगाना चाहिए। हमें भी गुरुदेव के पावन चरणों में यही प्रार्थना करनी चाहिए। इतना कहते हुए स्वामी जी ने सत्संग का समापन किया और धुनि लगाई।

"रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम

जय यदुनन्दन जय घनश्याम–श्रीकृष्ण मुरारी राधेश्याम

साक्षी शिवोहम–साक्षी शिवोहम।।"

तत्पश्चात् पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया गया।

प्रातः 7 बजे हथीन से दिल्ली की और प्रस्थान किया, दिल्ली में सायंकालीन सत्संग कर प्रातःकाल 11 बजे दिल्ली रेल्वे स्टेशन से पूना की और रवाना हुये। **पूना में पूज्य स्वामी ग्वालानंद जी महाराज के वार्षिकोत्सव** में स्वामी ग्वालानन्द आश्रम में एक दिवसीय सत्संग वर्खा कर पूज्य स्वामी जी जयपुर की और रवाना हुये। **–मीनू प्रेम प्रकाशी, यात्रा से (हथीन)**

श्री अमरापुर धाम जयपुर

श्री अमरापुर स्थान (मन्दिर) की

दैनिक शीतकालीन समय सारणी

मन्दिर खुलने का समय

सुबह : 6.00 बजे से 12.00 बजे तक

सांय : 3.00 बजे से 9.00 बजे तक

प्रतिदिन सत्संग का समय

सुबह : 7.00 बजे से 8.15 बजे तक प्रार्थना–सत्संग

सांय : 4.00 बजे से 5.30 बजे तक भजनसंध्या–सत्संग

प्रत्येक रविवार

सुबह : 7.00 बजे से 9.15 बजे तक (सत्संग–प्रवचन कैसेट)

सांय : 4.00 बजे से 5.30 बजे तक (भजन संध्या) सत्संग

आरती का समय

सांय 5.30 बजे से 5.50 बजे तक

प्रत्येक गुरुवार व शनिवार

प्रातः 7 बजे प्रार्थना–सत्संग गुरु प्रार्थनाष्टक

सांय : 6.00 बजे सत्नाम साक्षी संकीर्तन एवं समाधि स्थल पर पुष्पों की झांकी

झांकी दर्शन समय

सांय 5 से रात्रि 9.00 बजे तक

नोटः दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक मुख्य द्वार व श्री मन्दिर बन्द रहेगा।

गंगा मैया की गोद में मनाया गया

सम्पूर्ण धरा में फैला दिव्य आनन्द प्रसंग था जन्मोत्सव का सद्गुरु सर्वानन्द

खास बातें

1. सद्गुरु महाराज के पंच दिवसीय जन्मोत्सव का सजीव प्रसारण इंटरनेट पर लाईव किया गया।
2. सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज के महिमा से संबंधित 108 भजन की पुस्तक "गुरु वन्दना" का विमोचन।
3. सद्गुरु महाराज के सोने के लोकेट व चांदी के सिक्के पूज्य श्री के कर कमलों से जारी किये गये।
4. एक म्यूजिकल यंत्र जिसमें "सत्नाम साक्षी सर्व आधार जो सुमरे सो उतरे पार" धुन थी, का विमोचन।
5. महाराज श्री के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में 106 पौण्ड का केक।
6. प्रेमियों के स्वास्थ्य की देखभाल के लिये आश्रम में ही स्थापित स्वामी सर्वानन्द डिस्पेन्सरी में डॉ. भगवानदास द्वारा यात्रियों के स्वास्थ्य की देखभाल की जा रही थी।
7. सुव्यवस्था की दृष्टि से आगन्तुक यात्री प्रेमियों के सुविधार्थ परिचय–पत्र (पास) की व्यवस्था रखी गयी थी।
8. सत्साहित्य व पत्रिकाओं की उपलब्धि स्टॉल पर अनवरत जारी थी।
9. श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल द्वारा लागत मूल्यों पर विभिन्न खाद्य पदार्थों की स्टॉल।
10. प्रेमियों की सुविधार्थ एस.टी.डी. की व्यवस्था की गयी।
11. पूछताछ काउन्टर प्रवेश द्वार से प्रवेश करते ही दादा तीर्थदास जी के द्वारा संचालित, कार्यरत था।
12. मंच संचालन सन्त हरिओमलाल जी, संत प्रतापराय जी व भगत मूलचंद जी द्वारा किया जा रहा था।

आचार्य श्री टेऊँराम जी महाराज के परम शिष्य, तपोमूर्ति सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का पावन 106 वाँ जन्मोत्सव श्री पावन गंगा मैया की गोद में 15 से 19 अक्टूबर तक श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्तमण्डल के पावन सानिध्य में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। आईये हम भी लेखनी के माध्यम से इस उत्सव के आनन्द में आनन्दित होवें।

15 अक्टूबर–प्रभात वेला, गंगा मैया की पावन भूमि व हरिनाम का स्वर सम्पूर्ण श्री दरबार में गुंजायमान हो रहा था। आश्रम की परम्परा के अनुसार 4:30 बजे से 5:30 बजे तक हरिनाम की फेरी लगाई जाती थी। प्रेमीगण शीघ्र अतिशीघ्र अपने दैनिक क्रियाकलापों से निपटकर सत्संग श्रवण के लिये लालायित हो रहे थे।

पूर्व की तरह इस बार आश्रम के ठीक सामने सत्संग पण्डाल न बनाकर आश्रम के बायीं तरफ स्थित दशनाम आश्रम में बनाया गया। दशनाम आश्रम के भव्य प्रवेश द्वार से होकर ज्योंही विशाल सत्संग परिसर में प्रवेश हुआ, मन को मोहित व चित्त को आकर्षित करने वाले दृश्य की अनुभूति हुई विशाल सत्संग पण्डाल जिसके सामने विशाल सत्संग मंच, ऊपर तीनों तरफ से मनोहरकारी पर्दे लगाये गये उसके ऊपर रंग बिरंगी लाईट व झूमर भी बड़े ही अच्छे लग रहे थे। मंच के ऊपर मनोहरकारी परदा जिसमें हमारे आचार्य श्री की मनमोहित प्रतिमा जिसमें वो अपने वरद हस्त से आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं वहीं थोड़ा नीचे सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का तैलीय चित्र जिसके चारों और सूर्य और चन्द्रमा और तारे परिक्रमा दे रहे थे। बीच में विशाल अक्षरों में स्वामी जी के जन्मोत्सव का सन्देश लिखा हुआ था। नीचे विशाल झोपड़ीनुमा प्रकोष्ठ जिसमें हमारे प्यारे इष्टदेव लक्ष्मीनारायण, आचार्य स्वामी टेऊंराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज एवं सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की

चित्ताकर्षक तैलीय चित्रों को विराजित किया गया था।

मंच के बांयी तरफ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्‌भगवत गीता के पाठ साहब रखे हुए थे। निर्धारित समय 7 बजे श्री प्रार्थना के स्वर गुंजायमान हुऐ। सत्संग गंगा के साथ–साथ श्री ग्रन्थ साहब के पाठ रखे गये इसके पश्चात 9 बजे श्री दरबार में बायीं और स्थित विशाल वृक्ष के नीचे हवन का आयोजन किया गया।

कितना मनोहरकारी दृश्य था। बीच में पवित्र अग्नि कुण्ड, कुण्ड के चारों और श्वेत व गेरू वस्त्र धारण किये सन्त श्री की आभा देखते ही बनती थी। सन्त श्री को चारों तरफ से घेरे प्रेमीगण बैठे थे। तैयारी के पश्चात हवन शुरू हुआ, लगभग एक घण्टे तक मंत्रोच्चार के पश्चात अंतिम आहुति देकर हवन की समाप्ति की गयी। इसके पश्चात् विशेष कार्यक्रम ध्वजा वन्दन का शुरू हुआ। प्रेम प्रकाश ध्वजा की पूजा अर्चना के पश्चात् ध्वजा को स्तम्भ तक ले जाया गया।

श्री दरबार की सम्पूर्ण छत प्रेमियों से भर गयी। सभी इस दुर्लभ दृश्य को देखने के लिये आतुर हो रहे थे। सन्त श्री ने जैसे ही ध्वजा को स्थापित किया, सम्पूर्ण श्री दरबार सद्‌गुरु भगवान के जयघोष से गुंजायमान हो उठा। सम्पूर्ण सन्तगण व प्रेमीगण "हम गीत सनातन गायेंगे नित झण्डा धर्म झुलायेंगे" भजन गाने लगे। इसी के साथ शहनाई वादन शुरू हुआ। प्रेमीगण मंत्रमुग्ध होकर हाथों से करतल व पैरों से नृत्य करने लगे, सन्तगण व प्रेमीगण लगभग एक घण्टे तक समय का भान न करते हुए नृत्य में तल्लीन थे और अन्त में शिवोऽम का उच्चारण कर और सद्‌गुरु महाराज जी की जय जयकार के साथ इस कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

शोभायात्रा–सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष आश्रम से शोभायात्रा निकाली जाती है। शोभायात्रा की तैयारी 12 बजे से ही शुरू हो गयी थी। दोपहर 4 बजे आश्रम से यह यात्रा शुरू हुई। आगे–आगे हाथी घोड़े अगवानी कर रहे थे तथा उसके पीछे रंग–बिरंगी पोशाकें पहने जोकर चल रहे थे और उनके बाद हमारे आचार्य श्री टेऊंराम जी महाराज, सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज, सद्‌गुरु शान्तिप्रकाश जी महाराज व सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के तैलीय चित्र जिन पर पुष्पों की मनभावन सजावट करके सुन्दर झांकियां सजाई गयीं थीं। उसी के साथ–साथ शहर की मशहूर बैण्ड भी इस शोभायात्रा में मधुरकारी धुन बजा रही थी।

इसके पीछे–पीछे हमारे वर्तमान प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूजनीय सद्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व उनके साथ अनेक सन्तगण भी पैदल चल रहे थे। और उनके पीछे माताऐं व बहनें प्रेमातुर होकर चल रही थीं। स्वामी जी सभी सन्तगणों के बीच सूर्य की भांति चमक रहे थे, और उनके चारों तरफ किरणों के समान अन्य सन्तगण शोभा पा रहे थे।

इस शोभायात्रा में मुख्य थी हरिनाम संकीर्तन की झांकी। एक चौपहिया वाहन जो सम्पूर्ण रूप से सुसज्जित था। रंग–बिरंगी मालाओं व पुष्पों से। इस चौपहिया वाहन के मध्य में विराजित थे हमारे प्यारे आचार्य स्वामी टेऊंराम जी महाराज जिनके मुखमण्डल की आभा आज सूरज से भी तेज देदीप्यमान रही थी। वहीं उनके गले में पड़ी पुष्पों की सुन्दर माला ऐसे शोभा पा रही थी, जैसे भगवान शंकर के साथ गंगा जी शोभा पाती हैं। भक्तवृन्द स्वामी जी की अलौकिक आभा को निहारने के लिये उत्सुक थे और उस अलौकिक आभा के साथ उन्हें मधुर धुनि के उच्चारण का भी अवसर मिल रहा था। वाहन के आगे–आगे ध्वनि विस्तारक यंत्र अपने हाथ में लिये "सन्त हरिओमलाल जी" चल रहे थे। असंख्य प्रेमीगण इस भक्तिरस में डुबकी लगाने के लिये उनके पीछे चले जा रहे थे।

उन्होंने जैसे ही "जय–जय राधा रमण हरि बोल, भज गोविन्दम बाल मुकन्दम सर्वानन्दम हरे–हरे, की मधुर' संकीर्तन धुनि का उच्चारण किया। प्रेमीयों का हृदय प्रेमानन्द की उड़ान भरने लगा वह अपनी सुध–बुध भूलकर हाथों से करतल कर इस मधुर धुन का उच्चारण करने लगे। इस मधुर धुनियों में ढोलक, झांझ का मधुर स्वर जब मिला तो यह मधुर धुनि और अत्यधिक मधुर हो गयी।

इतना मधुर संकीर्तन और साथ–साथ स्वामी जी का सानिध्य पाकर प्रेमीगण नृत्य करने लगे सन्तगण भी इस मधुर धुनियों के प्रवाह में ऐसे डूबे कि अपनी दोनों भुजाओं को ऊपर उठाकर पांवों को नृत्य करने से रोक न सके।

क्या अलौकिक दृश्य है, जिसने इस दृश्य को अपनी आंखों से देखा वह तो धन्य ही हो गया। सन्त श्री व प्रेमियों का प्रवाह बढ़ता ही जा रहा था। ऐसा कोई विरला ही होगा जिसे इस मधुरकारी धुनि का स्वर सुनने के बाद भी पैर नृत्य करने से रोक रहे होंगे। इतना मधुर संकीर्तन स्वामी जी का साथ था तो किसी को भी समय का भान न रहा। आखिर 5:20 बजे शहर के मुख्य मार्ग से गुजरती हुई यह शोभायात्रा भीमगोड़ा चौक पहुंची।

यहाँ मुख्य मार्ग पर आचार्य श्री टेऊंराम जी महाराज की आदमकद संगमरमर की मूर्ति स्थापित है। जिसके चारों और शीशे की दीवारें बनी हैं। स्वामी जी की आज्ञा से "सन्त जयदेव जी" आचार्य श्री की प्रतिमा के पास ऊपर गये और महाराज श्री की प्रतिमा को दुशाला व पुष्प के हार पहनाऐ, सभी भक्तगण स्वामी जी की जय जयकार करने लगे। पूरा चौक स्वामी जी के उद्घोष से गूंज उठा।

धीरे–धीरे प्रेम रस का पान व हरि का गुणगान करते हुए यह शोभायात्रा चली जा रही थी। बीच–बीच में आकर्षक आतिशबाजी भी इस शोभायात्रा में चार चांद लगा रही थीं। आखिरकार यह शोभायात्रा शहर के मुख्य मार्ग से होती हुई हरि की पौड़ी पहुंची। हरि की पौड़ी पहुंचकर स्वामी जी ने गंगा मैया की गोद में दीपक विसर्जित किया। चारों तरफ गंगा मैया और गुरु महाराज की जय जयकार गुंजायमान हो उठी। इसी प्रकार समय की सीमा को ध्यान में रखकर स्वामी जी ने सभी प्रेमियों को सत्संग परिसर में एकत्रित होने के लिये कहा, निर्धारित समय पर सत्संग शुरू हुआ और स्वामी जी ने पल्लव पहनकर मेले का विधिवत शुभारम्भ किया।

16 से 17 अक्टूबर हर रोज प्रातःकालीन सत्संग गंगा शुरू होती जिसमें प्रातः 7 से 11 बजे व सांय 3 से 8 बजे तक सत्संग प्रवचन की अमृत धारा में पूज्य गुरु महाराज व सन्तगण हजारों भक्तों को अमृत पिलाते, स्वामी जी जैसे ही सत्संग परिसर में आते शहनाई वादन की मधुर धुन शुरू होती और जब वह पुनः आश्रम में जाते तो यह मधुर शहनाई वादन सुनाई देता था।

18 अक्टूबर आज श्री दरबार में ब्रह्मभोज था। शहर में रहने वाले समस्त आश्रमों के सन्त महात्माओं को इस ब्रह्मभोज में आने का निमंत्रण दिया गया था। निर्धारित समय पर सत्संग कार्यक्रम के पश्चात स्वामी जी की देखरेख में ब्रह्मभोज शुरू हुआ, श्री दरबार का सत्संग स्थल व भण्डारा स्थल विभिन्न संतों महात्माओ से भर गया। सप्रेम सन्तों महात्माओं को भोजन कराकर उन्हें वस्त्रादि दक्षिणा भेंट की गयी। सभी भक्तगण सन्तों के दर्शन करने के लिये कतारबद्ध खड़े हो गये। तत्पश्चात् प्रेमियों ने प्रेम पूर्वक भण्डारा ग्रहण किया शाम को पुनः सत्संग गंगा में प्रेमियों ने पवित्र स्नान किया डुबकी लगाई।

19 अक्टूबर आज हमारे **परम पूजनीय सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज का 106 वां पावन अवतरण दिवस था।** गंगा मैया की पावन गोद व गुरु महाराज का दिन आज सन्त व भक्तों का हृदय अत्यधिक उत्साह से भरा हुआ था। आज सभी भक्तगण शीघ्र अतिशीघ्र श्री दरबार के सत्संग परिसर में इकट्ठे होने लगे इस दिन प्रातःकाल पूज्य महाराज श्री की प्रतिमा जो श्री

मंदिर में स्थित है, को पंचामृत से अभिषेक करके नवीन व नूतन वस्त्राभूषणों से अलंकृत किया गया। निर्धारित समय पर सत्संग गंगा का अमृत छलकने लगा। विभिन्न स्थानों से आये सन्तगणों ने अपने अमृत प्रवचन में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालकर उनकी महिमा का गुणगान किया।

आज श्री सत्संग परिसर में स्थित पाठ साहब का पारायण भी सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् जैसे ही सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपनी ओजस्वी वाणी से मधुर रस छलकाना शुरू किया, पूरा सत्संग परिसर भर गया। ऐसा कोई भी कोना न था। जो खाली नजर आ रहा हो। पूरा सत्संग परिसर का सम्पूर्ण भाग सन्तों प्रेमियों से शोभित हो रहा था। स्वामी जी ने अपनी सौम्य वाणी में बताया कि–

दोहा– शरण पड़यो छोड़े नहीं बड़ी बड़न को ओट
जैसे फलहत गिरते गिरे गिरत न लागी चोट"

भजन–सिक सा शरण पया जे तुहिंजे
तिनजां दर्द मिटाईं,
ओ मुहिंजा सचा साईं राम
आहिन तुहिंजे आसरे ते
मोती तिनखे मिलाईं, पंजई जिनजे पांध में आहिन
रग–रग तिनजी रचाईं.......

गुरु महाराज जी कहते हैं कि हमें उन महापुरुषों की शरण लेनी चाहिए जो हमें इस संसार सागर से पार ले जायें। हम ऐसे महापुरुषों की शरण लेनी चाहिए ऐसे महापुरुषों के हम गुणों का बखान नहीं कर सकते।

हम कितनी भी ऐसे महापुरुषों की महिमा गायें पर वह सागर की एक बूंद के समान होगी। ऐसे महापुरुष हैं जो कभी भी बीच में नहीं छोड़ते पर हमारा मन भटक जाता है। हमें हमारा पूरा ध्यान परमात्मा के भजन में लगाना चाहिये। परमात्मा से मन की तार को जोड़ें संसार से मन की तार को तोड़ें, जब हमारा मन निश्चल होगा, तभी हमें परमात्मा की प्राप्ति होगी। हमारे मन में सुख का भण्डार है पर मन की चंचलता हैं कि हमें सुख में भी दुख का अहसास होता है। हमें परमात्मा को प्राप्त करने के लिये सन्त महात्माओं की शरण लेनी चाहिए। सन्तों का संग करने से हमारा मन संसार से मुड़कर गुरु के चरणों में लगता है। गुरु और परमात्मा एक हैं।

गुरु और भगवान अलग हैं यह सब संशय हैं। हमें दोनों को एक ही समझकर अपना मन निश्चल करके हरि की भक्ति के द्वारा परमात्मा की प्राप्ति करनी होगी।

इस प्रकार स्वामी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी को विराम दिया नियमित आरती के पश्चात् सत्संग की समाप्ति की गयी। इस प्रकार सांयकालीन सत्संग सभा शुरू हुई जो कि इस पंच दिवसीय सत्संग ज्ञान गंगा की आखिरी सभा थी। आज सत्संग परिसर की सजावट देखकर नेत्र तृप्त हो गये। पूरा सत्संग परिसर रंग–बिरंगे गुब्बारे, पताकाओं व झालरों से शोभायमान था। वहीं सत्संग मंच भी सन्तगणों की दिव्यकारी आभा से जगमगा रहा था। मंच के दांयी और पूज्य सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का तैलीय चित्र रखा गया था और उसके आगे रखे गये शुद्ध घी के 106 दीपक।

विभिन्न सन्तगणों ने अपने अमृत वचन प्रेमियों को सुनाये, तत्पश्चात 6:30 बजे पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपने कर कमलों से दीपक की ज्योति जैसे ही प्रज्जवलित की, पूरा सत्संग परिसर तालियों की गड़गड़ाहट व गुरु महाराज की जय जयकार से गूंज उठा। फिर स्वामी जी ने अपने अमृत वचन की गंगा शुरू की तो सब प्रेमी आनन्दपूर्वक उस गंगा में डुबकी लगाने लगे। पूरा सत्संग परिसर प्रेमियों से भर गया। प्रेमियों की सुविधार्थ सभास्थल के दूरस्थ क्षेत्र में बड़े प्रोजेक्टर लगाये गये ताकि सभी प्रेमियों को स्वामी जी के अमृत वचन के अतिरिक्त दिव्यकारी आभा का भी

दर्शन हो सकें।

वही सत्संग मंच के पास रखा गया विशाल 106 पौंड का केक बड़ा ही आकर्षक लग रहा था। स्वामी जी ने पलल्व पहनकर मेले के निर्विघ्न समाप्ति पर सबको बधाई दी। तत्पश्चात स्वामी जी व सन्तगणों को चार मंजिला केक काटने के लिये आमंत्रित किया गया। ऊंचे स्वर में सभी सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज का उद्घोष करने लगे। सभी प्रेमीगण अपनी खुशियों को रोक नहीं पाये और उठकर नृत्य करने लगे। पर जैसे ही स्वामी जी ने माईक पर अपनी सौम्य वाणी में धुनि लगाई तो प्रेमीगण अपनी सुध–बुध भूल गये। एक तो सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज के जन्मोत्सव की खुशी व दूसरा गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज अपनी मधुर वाणी में "वाधायूं–वाधायूं लख–लख वाधायूं" भजन गा रहे थे तो प्रेमीगण मंत्रमुग्ध होकर जैसे न चन्द्रमा के प्रेम में चकोर अपना सर्वस्व भूल जाता है वैसे ही प्रेमीगण स्वामी जी की मीठी बोली में मुग्ध होकर नृत्य करने लगे। आज कोई भी ऐसा न था जिसे गुरु महाराज के जन्मदिवस की खुशी न हो।

फिर **"जहिंजो नालो टेऊंराम आ–दण्डेवारो"** की धुनि लगाई, सभी सन्तगण व प्रेमीगण गुरु महाराज के जन्मोत्सव की खुशियों को नृत्य के माध्यम से प्रकट कर रहे थे। पूरा आधा घण्टा और मधुर धुनि का सिलसिला चलता रहा। विभिन्न कैमरामैन व मूवीमैन इस दुर्लभ दृश्यों को अपने कैमरे में संजोने में व्यस्त थे, न तो कोई सन्तगण न तो प्रेमी थक रहे थे। मधुर धुनियों का स्वर धीमे होने की बजाये तीव्र ही होता जा रहा था। मधुर धुनि व बैण्ड वादन न रूक रहा था और न ही प्रेमी नृत्य करने से रूक रहे थे।

आखिर समय की सीमा को ध्यान में रखकर शिवोऽम का उच्चारण कर इस विशाल दिव्य जन्मोत्सव की सत्संग ज्ञानगंगा के कार्यक्रम का यहीं विराम हुआ।

सभी प्रेमी ने बेसुध बेमन से अपने स्थान से उठे और गुरु महाराज के आगे हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगे कि पुनः ऐसे आनन्दकारी दिव्यक्षणों की प्राप्ति शीघ्र हो।

इस पंचदिवसीय उत्सव में गुरुवर पूज्य श्री स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज, स्वामी देवप्रकाश जी महाराज उल्हासनगर, स्वामी जयदेव जी दिल्ली, स्वामी अनंतप्रकाश जी पूना, संत हरिओमलाल जी ग्वालियर, संत प्रतापराय जी मुरैना, संत दयाप्रकाश जी जयपुर, संत हीरानन्द जी जयपुर, संत झामनदास जी सिवनी, संत शंकरलाल जी धुलिया, संत झामनदास जी भीलवाड़ा, संत मोनूराम जी जयपुर, संत श्यामलाल जी कोटा, संत लालूराम जी दिल्ली, संत मुरलीधर जी खैरथल, संत नरेशलाल इन्दौर, संत हंसप्रकाश जी अहमदाबाद, संत शम्भूलाल जी इन्दौर, संत नरेश कुमार जी, संत हरीश कुमार जी, संत परसराम जी, संत लक्ष्मण जी के अतिरिक्त अमरापुर स्थान के नन्हे सन्तगण व अनेक सन्तवृन्द इस सत्संग ज्ञानगंगा में शामिल हुये। **–गुड़िया प्रेम प्रकाशी, जयपुर से**

वाराणसी में भी दिव्यानन्द

अश्विनी मास के चन्द्रदर्शन से चौथ तक हर्षोल्लास के साथ वाराणसी के सभी प्रेमियों ने मिल करके प्रेम प्रकाश मंदिर सिन्धुनगर सिगरा में सद्गुरु सर्वानन्द के जन्मोत्सव के पांच दिन तक भरपूर दिव्यानन्द लिया।

रोजाना दोनों वक्त प्रार्थना, परिक्रमा व सत्संग सबने मिल कर बहुत उत्साह के साथ भाग लिया और गुरु महाराज की जय एवं सत्नाम साक्षी के घोष से सारा सिन्धुनगर गुंजायमान होता रहा।

मंदिर को बड़े ही सुन्दर ढंग से सजाया गया था। आखिरी वाले दिन प्रातः 6 से 8 बजे सत्संग, प्रार्थना परिक्रमा हुई और 8 से 10 बजे तक हवन का आयोजन किया गया एवं 10 से 11 बजे तक प्रेम प्रकाश ग्रंथ एवं श्रीमद्भगवत गीता का भोग सम्पन्न हुआ।

इसके बाद प्रेम प्रकाश ध्वजा पूजन के बाद सन्तों के लिये भण्डारा उसके बाद आम भण्डारा हुआ।

सायंकाल 106 दीपक जलाये गये। तत्पश्चात्

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जन्मोत्सव का केक काटा गया एवं सत्संग की समाप्ति के साथ प्रसाद वितरण किया गया, समापन के बाद सारे प्रेमियों ने मिलकर बड़े उत्साह के साथ यह गीत गाया

हैप्पी बर्थ डे सद्गुरु सर्वानन्द हैप्पी बर्थडे स्वामी सर्वानन्द
1.युग युग आपकी ज्योति जले युग युग आपकी बात चले
2 सद्गुरु टेऊंराम के प्यारे, गुरुभक्ति के अखण्ड भण्डारे
3.सूरत आपकी अति सुखदायी,दर्शन कर मैं शान्ती पायी।
4 मन मोहन की मुरली जैसी थी आवाज आप की सांई
5.लाख लाख है सबको बधाई स्वामी सर्वानन्द की झांकी
हैप्पी बर्थ डे...... **–प्रेम प्रकाश मण्डली, वाराणसी**

बड़ौदा में भी जन्मोत्सव का दिव्यानन्द

बड़ौदा–30 अब्टूबर–सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 106 वां जन्मोत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा में पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज व स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में दिनांक 15 अक्टूबर से 19 अक्टूबर 2002 तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

15 अक्टूबर को प्रातः श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व गीता का पाठ प्रारम्भ किया गया। 16 अक्टूबर को हवन का आयोजन किया गया। इससे पूर्व 15 अक्टूबर प्रातः 5:30 बजे प्रभात फेरी निकाली गयी जो सारी वारसिया कैम्प की परिक्रमा कर पुनः आश्रम पर समाप्त हुई। प्रतिदिन प्रातः सांय अनेक संतों द्वारा गुरु महाराज जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला गया। 19 अक्टूबर को पाठों का पारायण कर फिर आम भण्डारे का आयोजन किया गया जिसमें हजारों प्रेमियों ने भण्डारे में प्रसाद पाया। रात्रि को एक विशेष समारोह में 106 दीप प्रज्जवलित कर, केक काटा गया। अंत में पल्लव पाकर उत्सव की समाप्ति की गयी। **ग्वालियर** आश्रम पर भी सद्गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव के अन्तर्गत भजन गायन नृत्य प्रतियोगिता, भजन अन्ताक्षरी प्रतियोगिता एवं अन्यान्य मोहक कार्यक्रमों ने प्रेमियों में नये उत्साह का संचार किया। इसी प्रकार देश विदेश के आश्रमों पर सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जन्मोत्सव का मंगलमय आनन्द प्रेमियों ने लूटा।

संतवाणी

"धीरज को मन में धरो, धीरज सुख की खान।
धीर धरे जो विपत्ति में, टेऊँ सो बुद्धिमान।"
–स्वामी टेऊँराम जी

भागते जीवन में धैर्य कहां है। आदमी बिना सोच–विचार किये अपने सांसारिक कामकाज में लगा हुआ है। संत का कहना है कि मन में धीरज है तो चहूं ओर प्रगति और सफलता ही सफलता है। यह तो सुखों की खान है। समस्थिति की तो बात छोड़िए, विपत्ति में भी जो धीरज रखता है उससे बड़ा बुद्धिमान नहीं है। सामान्यतः विपत्ति में आदमी धीरज अथवा धैर्य छोड़ देता है, जिससे उसके समक्ष और अधिक विपत्ति आ जाती है। अगर इस विपत्ति की स्थिति में पूरी तरह सोच–विचार कर उससे निकलने में बुद्धि को लगायें तो उसका निवारण भी होगा। सही मायने में वो बुद्धिमान कहलाएगा।

इसीलिये स्वामी जी अपने अगले दोहे में कहते हैं,
"कह टेऊँ घबराय मत, धीरज से कर काम।
धीर उदार गंभीर मति, पावत है आराम।"

यह संतवाणी सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित है। **राजस्थान पत्रिका** में प्रत्येक बुधवार संयुक्त संस्करण में प्रकाशित होती है। राजस्थान पत्रिका, राजस्थान-बैंगलोर-अहमदाबाद आदि स्थानों पर प्रकाशित होती है। प्रत्येक बुधवार राजस्थान पत्रिका के पेज 4 नं. पर "संतवाणी" अवश्य पढ़ें। राजस्थान पत्रिका के सम्पादक एवं सभी सदस्यों को साधुवाद आशीर्वाद सद्गुरु महाराज जी का।

सद्गुरु टेऊँराम महिमा भजन संग्रह पुस्तक का प्रकाशन

श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा "आचार्य सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज" के महिमा संबंधी "भजन संग्रह पुस्तक" प्रकाशित की जा रही है जिसमें आचार्य श्री की महिमा के भजन संकलित किये जायेंगे। अतः सभी संत प्रवर, कवि, गायक, भजनीक, प्रेमी–भक्तजनों से निवेदन है कि आपके द्वारा अथवा अन्य कवियों द्वारा रचित महिमा संबंधी भजनों का संकलन करके (शुद्धि करवाकर) सुन्दर लिखावट या कम्प्यूटर टाइप करवाकर शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें। सभी भजनों का संकलन कर "सद्गुरू टेऊँराम महिमा भजन संग्रह पुस्तक" में प्रकाशित किया जावेगा। आशा है इस पुण्य कार्य में आप सभी प्रयासरत रहकर भजन शीघ्र भेजेंगे।

नोटः–"प्रेम प्रकाश मण्डल के संतों के फोटो भी हों तो शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

भजन भेजने का पता : भजन संग्रह पुस्तक
श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर–302001
फोनः 0141–2372423, 2372424

समीक्षा

सद्‌गुरु सर्वानन्द संदेश का नये रुप में प्रकाशन

सत्‌गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज के 106 वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर श्री प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा द्वारा प्रकाशित एक दूसरी पुस्तक सर्वानंद संदेश का विमोचन पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

इस नयी पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें पूरे साल भर के सर्वानंद संदेश संकलित हैं। इससे पूर्व प्रकाशित पुस्तक में 14 अक्टूबर तक संदेश प्रकाशित हैं। अब इसमें 15 अक्टूबर से और जोडकर इसे 31 दिसम्बर तक किया गया है यानी अब सर्वानंद संदेश 1 जनवरी से 31 दिसम्बर तक पूरे साल के विचारों का सुंदर संग्रह हो गया है। इसका **मूल्य मात्र 10 रूपये** रखा गया है। अत्यंक मनमोहक व आकर्षक रूप से प्रकाशित यह पुस्तक प्रेम प्रकाश आश्रमों के बुक स्टालों पर उपलब्ध रहेंगी।

सी.डी. व ऑडियो कैसेट

सबसे ऊँची प्रेम सगाई

प्रेम की भाषा को समझ पाना बडा कठिन है। प्रेम के कारण भगवान स्वयं वशीभूत होकर हर कार्य करने के लिए आतुर हो जाते हैं वो कार्य चाहे झूठन उठाना हो, चाहे झूठन खाना। प्रेम में ऐसा जादू भरा होता है जो स्वयं ही खिंचा चला आता है। प्रेम के कारण ज्ञान–ध्यान सब कुछ भूल जाता है। अपने शरीर तक का भान नहीं रहता। विधाता ने भी क्या समझकर प्रेम को बनाया होगा।

ऐसे ही प्रेम की अलौकिक महिमा का बखान करते हुये "पूज्य सद्‌गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज" "के मुखारबिन्दु से निःसृत अमृतमयी प्रवचनों को सहेजा गया है, "सबसे ऊँची प्रेम सगाई" कैसेट में बड़े सुन्दर रूप से प्रेम के विषय पर अनेक प्रसंग बताये हैं सद्‌गुरु महाराज जी ने। हरिद्वार में पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के कर कमलों द्वारा "सबसे ऊँची प्रेम लगाई" सी.डी. व ऑडियो कैसेट का विमोचन करतल ध्वनि से किया गया। कैसेट में 45 मिनट प्रवचन, तीन भजन, धुनि, पल्लव आदि सम्मिलित किये गये हैं। सी.डी. कैसेट का **मूल्य मात्र 30 रू. एवं ऑडियो कैसेट 20 रू.** रखा गया है। **प्राप्ति स्थलः श्री अमरापुर स्थान जयपुर के अतिरिक्त सभी प्रमुख आश्रमों पर उपलब्ध है।** –श्याम गुरनानी, जयपुर

सद्‌गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर अनेक वस्तुओं का विमोचन

1. गुरू वन्दना (स्वामी सर्वानंद महिमा भजन पुस्तक) = 10 रू.
2. सबसे ऊँची प्रेम सगाई (स्वामी सर्वानंद जी महाराज प्रवचन कैसेट) = सी.डी. 30 रू., ऑडियो 20 रू.
3. लेमिनेशन फोटो (तीन नई डिजाइनों में) = 40–40 रू.
4. कलाई घडियाँ – गोल्डन – 125 रू. सिल्वर – 115 रू. लेदर – 100 रू.
5. चाँदी के सिक्के – 70 रू.
6. अमरापुर दर्शन (वी.सी.डी. कैसेट) = 100 रू.
7. पानी के फ्रेम में महाराज श्री फोटू = 25 रू.

ये सभी सामान श्री अमरापुर स्थान जयपुर पर उपलब्ध है।

हमारे नये सहयोगी

कानपुर–श्री मनोज कुमार टेकचंदानी 112/363 स्वरूप नगर कानपुर टेलीफोन : 2292495

कानपुर क्षेत्र के प्रेमियों सदस्यों को अब श्री मनोज कुमार जी ही प्रत्येक मास प्रेम प्रकाश संदेश उप्लब्ध करायेंगे। कृप्या कानपुर क्षेत्र के प्रेमी श्री मनोज कुमार जी से सम्पर्क करें।

वाराणसी–वाराणसी क्षेत्र के सदस्यों को प्रेम प्रकाश संदेश पत्रिका प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धू नगर सिगरा वाराणसी में ही प्राप्त हुआ करेगी। इसके लिये प्रेमी आश्रम के व्यवस्थापक श्री महादेव जी से सम्पर्क करने की कृपा करें।

फैजाबाद–श्री भावनदास जी, प्रेम प्रकाश आश्रम, क्वाँटर 24/4 रामनगर कॉलोनी, फैजाबाद।

बस्ती–श्री ब्रजेश कुमार नानवानी, प्रेम प्रकाश ड्रेसस, मंगल बाजार, पुरानी बस्ती, बस्ती (उ0प्र0) भी प्रेम प्रकाश संदेश परिवार के नये सहयोगी के रूप में अपने अपने क्षेत्र में प्रेम प्रकाश संदेश के माध्यम से गुरुसेवा के प्रचार प्रसार कार्य में सहयोग करेंगे।

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

3 मार्च से 4 मार्च	2003 तक	डबरा
5 मार्च	2003	दतिया
6 मार्च से 8 मार्च	2003 तक	मुरैना
9 मार्च से 12 मार्च	2003 तक	आगरा
13 मार्च से 14 मार्च	2003 तक	अलीगढ़
15 मार्च से 18 मार्च	2003 तक	हरिद्वार
19 मार्च	2003	दिल्ली से गांधीधाम के लिये बरेली एक्सप्रेस में यात्रा
20 मार्च से 22 मार्च	2003 तक	गांधीधाम
23 मार्च से 24 मार्च	2003 तक	राजकोट
25 मार्च से 26 मार्च	2003 तक	जामनगर
27 मार्च	2003	द्वारिका
28 मार्च	2003	सोमनाथ, जेतपुर
29 मार्च	2003	भावनगर
30 मार्च से 1 अप्रेल	2003 तक	अहमदाबाद
2 अप्रेल से 3 अप्रेल	2003 तक	जयपुर
4 अप्रेल से 6 अप्रेल	2003 तक	पाली, जोधपुर
7 अप्रेल से 22 अप्रेल	2003 तक	जयपुर (चैत्र मेला)
23 अप्रेल	2003	देवास
24 अप्रेल से 29 अप्रेल	2003 तक	इन्दौर (स्वामी मुरलीधर वर्सी)
30 अप्रेल से 1 मई	2003 तक	रतलाम (स्वामी जयप्रकाश वर्सी)
2 मई से 8 मई	2003 तक	दिल्ली
9 मई से 10 मई	2003 तक	लखनऊ
11 मई से 16 मई	2003 तक	कानपुर (सद्‌गुरू हरिदासराम जयन्ती)
17 मई से 19 मई	2003 तक	इलाहाबाद
19 मई से 21 मई	2003 तक	वाराणसी, बनारस
22 मई से 23 मई	2003 तक	फैजाबाद

तीज-त्यौहार

19	नवम्बर 2002	मंगलवार	श्री सत्यनारायण व्रत, कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरुनानक जयंती
20	नवम्बर 2002	बुधवार	कार्तिक स्नान पूर्णिमा
23	नवम्बर 2002	शनिवार	श्री गणेश चौथ व्रत
30	नवम्बर 2002	शनिवार	उत्पत्ति एकादशी व्रत
04	दिसम्बर 2002	बुधवार	अमावस्या
05	दिसम्बर 2002	गुरुवार	चन्ददर्शन
09	दिसम्बर 2002	सोमवार	चौथ, सत्‌गुरु टेऊँराम जन्मदिवस (मासिक)
15	दिसम्बर 2002	रविवार	मोक्षदा एकादशी, पौष संक्रान्ति, गीता जयन्ती महोत्सव (शीतल गीता मंदिर, अजमेर, मीरा कृष्ण मंदिर बड़ौदा)
19	दिसम्बर 2002	गुरुवार	श्री सत्यनारायण व्रत
23	दिसम्बर 2002	सोमवार	श्री गणेश चौथ व्रत
30	दिसम्बर 2002	सोमवार	सफला एकादशी व्रत

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

16 नवम्बर से 23 नवम्बर	2002 तक	जकार्ता,	006221-3909362, 3902987 ☎ मो. 0062816-1805140
23 नवम्बर से 29 नवम्बर	2002 तक	बैंकाक	☎ 00662-3815742, 3815743
29 नवम्बर से 5 दिसम्बर	2002 तक	मनीला	☎ 00632-8525305, 5218049
7 दिसम्बर	2002	मुम्बई	☎ 022-26057711,26057579
8 दिसम्बर से 10 दिसम्बर	2002 तक	अहमदाबाद	☎ 079-22863900,22869816
11 दिसम्बर से 14 दिसम्बर	2002 तक	कोटा	☎ 0744-2451476,2325873
15 दिसम्बर	2002	अजमेर	☎ 0145-2622526
16 दिसम्बर से 17 दिसम्बर	2002 तक	जयपुर	☎ 0141-2372423,2372424
18 दिसम्बर से 19 दिसम्बर	2002 तक	बड़ौदा	☎ 0265-2523479,2565094
20 दिसम्बर से 21 दिसम्बर	2002 तक	इन्दौर, उज्जैन	☎ 0731-2468140, 2300140
22 दिसम्बर से 29 दिसम्बर	2002 तक	जयपुर	☎ 0141-2372423,2372424
30 दिसम्बर 02 से 6 जनवरी	2003 तक	मुम्बई	☎ 022-26057711,26057579
7 जनवरी से 10 जनवरी	2003 तक	रायपुर (प्रेम प्रकाश आश्रम वार्षिकोत्सव)	
11 जनवरी से 13 जनवरी	2003 तक	भाटापारा (माता समझबाई वर्सी)	
14 जनवरी से 16 जनवरी	2003 तक	कोरबा	
17 जनवरी से 18 जनवरी	2003 तक	रायगढ़	
19 जनवरी से 20 जनवरी	2003 तक	धमतरी	
21 जनवरी	2003	भानुप्रतापपुर	
22 जनवरी	2003	दल्ली राजहरा	
23 जनवरी	2003	राजनांदगांव	
24 जनवरी	2003	बेमेतरा	
25 जनवरी से 26 जनवरी	2003 तक	दुर्ग	
27 जनवरी	2003	यात्रा (दुर्ग से प्रातः गोण्डवाना एक्सप्रेस से भोपाल, ग्वालियर के रास्ते दिल्ली यात्रा)	
28 जनवरी से 31 जनवरी	2003 तक	हरिद्वार	
1 फरवरी	2003	यात्रा, सड़क मार्ग से जयपुर के लिए	
2 फरवरी से 5 फरवरी	2003 तक	जयपुर	
5 फरवरी	2003	जयपुर से नागपुर के लिये शाम को चेन्नई एक्सप्रेस में यात्रा	
6 फरवरी से 7 फरवरी	2003 तक	कामठी	
8 फरवरी से 10 फरवरी	2003 तक	सिवनी	
11 फरवरी से 12 फरवरी	2003 तक	बालाघाट	
13 फरवरी से 16 फरवरी	2003 तक	गोंदिया, तिरोड़ा	
17 फरवरी	2003	भण्डारा	
18 से 21 फरवरी	2003 तक	नागपुर, अमरावती	
22 फरवरी	2003	यात्रा जयपुर के लिये नागपुर से चेन्नई एक्सप्रेस में	
23 फरवरी से 25 फरवरी	2003 तक	जयपुर	
26 फरवरी	2003	जयपुर से सड़क मार्ग द्वारा ग्वालियर के लिये यात्रा	
26 फरवरी से 2 मार्च	2003 तक	ग्वालियर (स्वामी गणेशानन्द जयंती)	

(इसके आगे का यात्रा कार्यक्रम एवं तीज त्यौहार पृष्ठ—39 पर भी देखें।)

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

प्रेम प्रकाश मन्दिर, खार मुम्बई में

सत्संग समागम

1 जनवरी से 5 जनवरी, 2003 तक

समस्त धर्मप्रेमी सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्मी आचार्य सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रेम प्रकाश मन्दिर, खार का वार्षिकोत्सव बुधवार १ जनवरी से ५ जनवरी २००३ रविवार तक वर्तमान श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया जाएगा। इस महोत्सव में **आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज,** सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, सद्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज की पवित्र जीवन कथाओं का वर्णन किया जाएगा।

आप सब इस विराट महोत्सव में आकर महापुरुषों की गुण गाथा श्रवण कर अपने जीवन को सफल बनाएं।

कार्यक्रम

1 जनवरी 2003
प्रातः काल सत्संग, हवन व ध्वजा-वन्दन

1 जनवरी से 5 जनवरी
प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग प्रेम प्रकाश मन्दिर, खार

1 जनवरी से 5 जनवरी
सांय ६ से ८ बजे तक सत्संग लोकहित कुटीर १६ नं. रोड़, खार वेस्ट, मुम्बई

5 जनवरी रविवार सायं 8 बजे पल्लव उत्सव की समाप्ति

सेवामें : प्रेम प्रकाश मण्डली, मुम्बई
e-mail : amrapur@vsnl.com
website :premprakashpanth.com

पता : श्री प्रेम प्रकाश मन्दिर, प्रेम सागर रोड नं. 19 वेस्ट, मुम्बई
फोन : 022-6057579, 6057711

श्री गीता जयन्ती महोत्सव

15-12-2002 रविवार से 19-12-2002 गुरूवार तक

सतगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता मे मनाया जायगा। इस शुभ अवसर पर भारत के कोन-कोने से संत महात्मा, भक्त, गुणीजन श्रीमद् भगवद् गीता पर प्रकाश डालेंगे और गीता अमृत बरसा के दुखों से निवृत्ति करवाएगें

15-12-2002 रविवार : सुबह 8 बजे श्रीमद् भगवद् गीता के 108 पाठ साहेब का व श्री प्रेम प्रकाश ग्रथ साहेब के पाठ साहेब का आरभ किया जाएगा। उसके बाद सत्संग कीर्तन होगा। सुबह 11 बजे श्री गुरु ग्रंथ साहेब के पहले अखण्डपाठ साहेब का आरंभ होगा।

16-12-2002 सोमवार : सुबह 8 से 11 बजे तक श्रीमद् भगवद् गीता की पूजा उसके बाद संत महात्माओं का कीर्तन प्रवचन होगा।

17-12-2002 मंगलवार : सुबह 8 बजे श्रीमद् भगवद् गीता की पूजा उसके बाद संत महात्माओं का कीर्तन प्रवचन होगा और श्री गुरू ग्रंथ साहेब के पहले अखण्ड पाठ का भोग, उसके बाद दूसरे अखण्ड पाठ साहेब का आरंभ, शाम 5 से 8 बजे तक सत्संग प्रवचन होगा।

18-12-2002 बुधवार : सुबह 8 बजे श्रीमद् भगवद् गीता की पूजा, संत महात्माओं का कीर्तन प्रवचन, शाम 5 से 8 सत्संग प्रवचन होगा।

19-12-2002 गुरूवार : सुबह 8 बजे हवन उसके बाद संत महात्माओं का सत्संग और श्रीमद् भगवत गीता के 108 पाठों का भोग साहेब पड़ेगा। उसके बाद श्री गुरू ग्रंथ साहेब के दूसरे अखण्ड पाठ साहेब का भोग साहेब और 12 बजे ध्वज वंदना और आम लंगर (भण्डारा) होगा। शाम 5 बजे श्री प्रेम ग्रंथ साहेब के पाठ साहेब का भोग साहेब पड़ेगा। उसके बाद सत्संग कीर्तन और रात को 8 बजे सत्गुरू स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज सबको आर्शीवाद देकर मेले की समाप्ती का पल्लव डालेंगे।

समारोह स्थल : श्रीमीरा कृष्ण मन्दिर, संत कंवर कॉलोनी, बड़ौदा - 390006

नोट:- अगर किसी को भी गीताओं के पाठों की सेवा करनी हो तो नाम लिखवा सकते हैं।

सेवा मे,
दास संजयकुमार प्रेम प्रकाशी
फोन : 565094, 523479

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

डाक रजि. ग्वालियर संभाग–161 (R.M.S. Posting date 15th) भा ... 1-II



स्वामी हरिदास सन्देश

66. "जो गुरू की परछाई बन गये अपने जीवन में उन्हें भक्ति क्या सिखलाती हैं? भक्ति सिखलाती है, अपने गुरू की परछाई बनना।"

67. "संकल्प मन से होते हैं, साकार करने का निश्चय बुद्धि करती है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं– अर्जुन ! जिसने मुझे अपना मन व बुद्धि दोनों ही दे दिया है, वह है मेरा भक्त।"

68. "गृहस्थ जीवन, तपस्वी जीवन, संत जीवन, राजसी जीवन, रास्ते अलग–अलग होते हैं। व्यवहार में कुछ और होता है। आश्रम बनाये गये हैं तो व्यवहार भी उन्हीं के अनुसार करना पड़ता है।"

69. "जिस व्यक्ति के मन में, हृदय में किसी भी प्रकार की इच्छा उत्पन्न नहीं होती और पवित्र है वह अन्दर–बाहर से, व्यथा नहीं जिसके मन में, वही सच्चा भक्त होता है।"

70. "गंगा जी में जब हम नहाने जाते हैं तो, पाप उतारने जाते हैं या धोने ?कहते है– पाप उतारने के लिए ! तो जो पाप गंगा में धूल गये, क्या किसी ने उन्हें देखा ?जिस मन व बुद्धि से प्रेरित होकर पाप कर्म किये गये थे, वह मन व बुद्धि भी तो शरीर का ही अंग है, तो गंगाजी में नहाने के बाद हम अपने शरीर के साथ अपना मन व बुद्धि साथ लेकर के आये या उसे वहीं पर छोड़ दियीं?जब तक हम अपना मन व बुद्धि परमात्मा के जप–स्मरण में नहीं लगाते, तब तक पापों से छुटकारा संभव नहीं।"

प्रस्तुति–प्रीतम प्रेम प्रकाशी, जयपुर

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए।

★ व्यवस्थापक

सदस्यता क्रं.

श्री

~~PH~~_4832-15060-7/2004
श्री किशनचंद बूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका मदार,
अजमेर, राजस्थान

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी कम्प्यूटर लाला का बाजार, फोन : 427502 से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ लश्कर, ग्वा. से प्रकाशित किया गया। सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 454183